जनवरी-2025 | वर्ष : 08 | अंक : 10 | मूल्य : ₹25/- मात्र

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

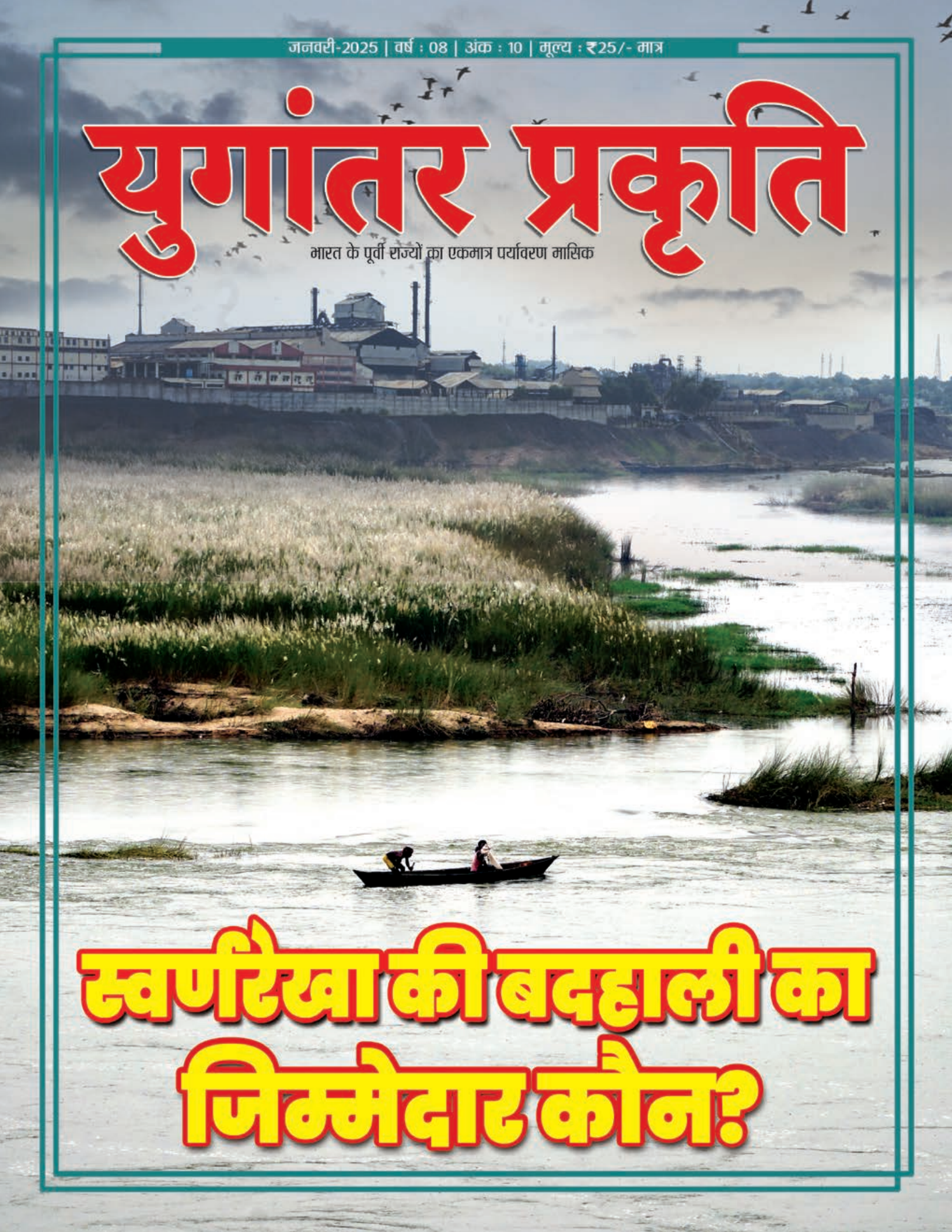

स्वर्णरेखा की बदहाली का जिम्मेदार कौन?

RSB

Where Dreams are Responsibilities

मानव प्रयासों को सशक्त बनाना।
नवाचार को सक्षम करना। **एक राष्ट्र का निर्माण करना।**

हम RSB Group (आरएसबी ग्रुप), एक पथप्रदर्शक वैश्विक इंजीनियरिंग संस्थान और भारत के प्रमुख ऑटो कंपोनेंट निर्माता हैं, जिनका कारोबार 3000 करोड़ रुपये से अधिक है और 5500 से अधिक कर्मचारियों का एक विशाल परिवार है। RSB Group (आरएसबी ग्रुप) की इंजीनियरिंग उत्कृष्टता के 50 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए हम एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर खड़े हैं। जो एकता और अपराजेयता पर आधारित एक यात्रा है।

ये विलक्षण 50 वर्ष हमारी प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं: अभूतपूर्व नवाचार के साथ ग्राहकों को प्रत्युत्तर देना, असीम अनुकंपा के साथ हमारे समुदाय को सेवा प्रदान करना और गर्वपूर्ण रूप से राष्ट्र का निर्माण करना।

एक संस्थान के रूप में, हम भारतीय और वैश्विक ओईएम (OEMs) दोनों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित रह कर प्रगति के पथ पर लगातार अग्रसर रहे हैं। उत्कृष्टता प्रदान करना और प्रतिमान परिवर्तन को उत्प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हमारा दृष्टिकोण है।

नवाचार को केंद्र में रखते हुए, हमने व्यापक उत्पाद डिज़ाइन, विकास और परीक्षण सुविधा का विकास किया है, जो हमें अत्याधुनिक समाधान प्रदान करने में सक्षम बनाती हैं। हम पैसेंजर कार से ले कर कृषि, निर्माण और खनन, मध्यम और भारी वाणिज्यिक वाहन और इलेक्ट्रिक वाहनों से लेकर उद्योगों की एक विस्तृत श्रृंखला की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

आरएसबी ग्रुप एक ऐसे भविष्य की कल्पना करता है
जहाँ गहन प्रभाव के पीछे नवाचार प्रेरक शक्ति हो।

RSB 50 Years of Engineering Excellence

15+	3000+	5500+	20+
प्लांट्स	करोड़ की आय	कर्मचारी	उत्पाद

कॉर्पोरेट कार्यालय:
आरएसबी ट्रान्समिशन्स (आई) लिमिटेड, कार्यालय नंबर 201/2/3/4, पेंटागन I, दूसरी मंज़िल, मगरपट्टा सिटी, हडपसर, पुणे - 411 013, भारत | फ़ोन: +91-20-6709 2100 | ईमेल: info@rsbglobal.com
वेब: www.rsbglobal.com

इस अंक में खास...

4 स्वर्णरेखा की बदहाली का जिम्मेदार कौन?

08

कवर स्टोरी

स्वर्णरेखा नदी का अवलोकन

भारत नदियों का देश है। देश में सौकड़ों नदियाँ बहती हैं। भारत में नदियों को पवित्र माना जाता है। स्वर्णरेखा नदी पूर्वी भारत की प्रमुख नदियों में से एक है। यह झारखंड के छोटानागपुर पठार से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा से होकर बहती है।

कवर स्टोरी **16**

स्वर्णरेखा और खरकई नदी प्रदूषित, पीने लायक नहीं है पानी

शहर में पानी का अहम स्रोत स्वर्णरेखा और खरकई नदी का पानी कई एरिया में पीने लायक नहीं रह गया है. सीधे इसको पिया नहीं जा सकता है.

साक्षात्कार **24**

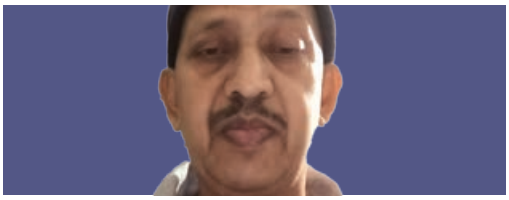

स्वर्णरेखा खुद साफ हो जाएगी, आप उसमें मलबा डालना बंद कर दें: विवेक कुमार सिंह

28

अनुकरणीय

सालों से सरयू राय निःशुल्क पढ़ा रहे हैं बच्चों को

साइंस कॉलेज, पटना से भौतिकी में मास्टर की डिग्री (एमएससी) करने वाले जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक श्री सरयू राय आज भी अध्ययन पर विशेष जोर देते हैं।

34

आयोजन

स्वर्णरेखा और दामोदर के उद्गम स्थलों को बड़ी पहचान मिलेः सरयू राय

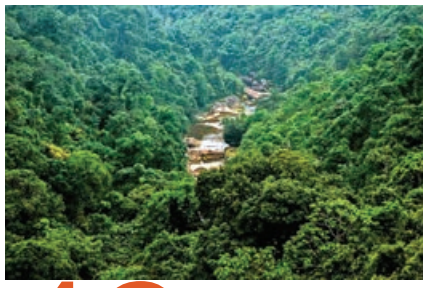

42

वन संरक्षण

बांस प्रधान क्षेत्र अब बढ़ कर 1,54,670 वर्ग किमी हुआ

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

वर्ष-8, अंक-10, जनवरी-2025, कुल पृष्ठ-60 (आवरण सहित)

मुख्य संरक्षक
सरयू राय

प्रधान संपादक
आनंद सिंह

संपादक
अंशुल शरण

संरक्षक मंडल
राजेन्द्र सिंह, एम.सी. मेहता, प्रो. आर. के. सिन्हा, प्रो. एस. इ. हसनैन, डॉ. आर. एन. शरण, डॉ. आर. के. सिंह

सलाहकार मंडल
डॉ. एम. के. जमुआर, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र, डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. गोपाल शर्मा, डॉ. ज्योति प्रकाश

डिजाइन आर्टिस्ट
अनवारूल हक

विधि परामर्शी
रवि शंकर (अधिवक्ता)

प्रबंधन
राजेश कुमार सिन्हा

संपादकीय कार्यालय
संपादकीय, सदस्यता एवं विज्ञापन
नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, रांची, झारखंड, पिन-834010

कोलकाता कार्यालय
ग्राउंड फ्लोर, 131/24, रीजेंट पार्क गवर्नमेंट क्वार्टर, कोलकाता, पिन-700040

पटना कार्यालय
201, दीपराज कॉम्प्लेक्स, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर, पटना 834004

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक **मधु** द्वारा झारखंड प्रिंटर्स प्रा. लि., 6A, गुरुनानक नगर, साकची, **जमशेदपुर** से मुद्रित व नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप पो. नामकूम, सिदरौल, **रांची**, झारखंड से प्रकाशित।
आरएनआई नंबर: JHAHIN/2016/68667
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नंबर: RN/248/2016-18

ई-मेलः yugantarprakriti@gmail.com
मोबाइल 7307071539, 9304955301/2

■ अंशुल शरण

बचाना तो होगा ही स्वर्णरेखा को

प्रिय पाठकों,

आप सभी को स्वर्णरेखा महोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

स्वर्णरेखा महोत्सव के मौके पर युगांतर प्रकृति का यह विशेषांक आपके हाथों में है। हमने भरपूर प्रयास किया है कि स्वर्णरेखा नदी की उत्पत्ति, वर्तमान हालात और भविष्य की दशा-दिशा के बारे में जो जरूरी कथ्य-तथ्य हैं, उनको आपके समक्ष रखें। जिन लोगों ने स्वर्णरेखा नदी पर शोध किया है, फिल्में बनाई हैं, जिन्होंने नदी को साफ करने का बीड़ा उठाया है, उनमें से कई महानुभावों के विचार इस अंक में हम लोगों ने शामिल किया है। इस पत्रिका के संरक्षक और जाने-माने पर्यावरणविद श्री सरयू राय ठीक ही कहते हैं कि नदी कोई भी हो, वह साल में एक बार खुद को साफ कर लेती है। यह हमारी ड्यूटी है कि हम उसे अपनी तरफ से गंदा न करें। फिल्म निर्माता विवेक कुमार सिंह और एक राजकीय विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती प्रियंका झा भी श्री राय की इस बात से पूर्णतः सहमत हैं।

फिर बड़ा सवाल यह उठता है कि स्वर्णरेखा क्यों दम तोड़ रही है? यह प्रदूषित क्यों हो रही है? इसका जवाब यह है कि हम लोग इसमें इतना ज्यादा औद्योगिक और नगरीय कचरा डाल रहे हैं कि नदी मृतप्राय हो चली है। नगड़ी से लेकर चौमुखा (बंगाल की खाड़ी में विलीन होने के पहले का स्थान) तक नदी रोती रहती है। वह इतनी ज्यादा प्रदूषित हो गई है कि उसमें घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा कई स्थानों पर बेहद कम हो गई है।

कई नदियां प्रदूषण के कारण अब इतिहास के पन्नों में शामिल हो गई हैं। हम लोग उन्हें सिर्फ याद करते हैं। अब उनका वजूद नहीं बचा है। स्वर्णरेखा झारखंड की अपनी नदी है। इस नदी से झारखंड की एक बड़ी पहचान है। लाखों लोग इसके पानी से खेती करते हैं। जीवित रहते हैं। अगर स्वर्णरेखा ही नहीं रही तो कल्पना करें, मानव जाति पर उसका कितना बड़ा कुप्रभाव पड़ेगा।

इस नदी को बचाने की जरूरत है। उद्योग-धंधों को अपना मलबा कहीं और गिराने की जरूरत है। नगरीय कचरा को स्वर्णरेखा में डंप करने के पहले प्रॉपर ट्रीटमेंट करने की जरूरत है। आज जिस तरीके से चांडिल से लेकर जमशेदपुर तक स्वर्णरेखा नदी को हम लोगों ने कचरापट्टी बना दिया है, अगर यही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम लोग स्वर्णरेखा का नामलेवा ही रह जाएंगेःनदी हमें कभी दिखेगी नहीं। इसलिए आज से ही हमें स्वर्णरेखा के संरक्षण के लिए युद्धस्तर पर जुटना होगा। आज, अभी, इसी वक्त....

नालियां बंद करें, नदी को धरोहर घोषित करें

इस बात का रोना बहुत हो गया कि स्वर्णरेखा दम तोड़ रही है, इसका वजूद संकट में है, इस नदी को फलां-फलां ने बर्बाद कर दिया। महाभारतकालीन इस नदी को लेकर जितने मुंह, उतनी बातें। शिकायत के स्वर ज्यादा तीव्र हैं, क्योंकि सच में नदी प्रदूषित हुई है। अब लोगों ने, कंपनियों ने नदी को प्रदूषित तो कर ही दिया। लेकिन क्या प्रदूषण से मुक्ति का भी कोई मार्ग है? हम कब तक स्वर्णरेखा के बुरे हाल की चर्चा करते रहेंगे? हम स्वर्णरेखा के स्वर्णिम दिन लाने के लिए कब प्रयास करेंगे?

■ गौतम देव

स्वर्णरेखा पर फिल्म बनाने वाले प्रोड्यूसर विवेक कुमार सिंह का सुझाव है कि जहां-जहां से नाले नदी में मलबा लेकर गिर रहे हैं, वहां एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) लगाये जाएं हालांकि कई स्थानों पर एसटीपी हैं लेकिन कार्यरत नहीं हैं जो पहले मलबे वाले पानी को ट्रीट करे, फिर पानी स्वर्णरेखा में जाए। इसके लिए कठोर दंडात्मक कार्रवाई की भी वह वकालत करते हैं। ऐसे ही, विख्यात पर्यावरणविद और जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय का कहना है कि आप आठ माह नदी को दूषित मत कीजिए। उसे छेड़िए मत। बरसात के तीन-चार महीनों में स्वर्णरेखा खुद ही साफ हो जाएगी। मेरा अपना मत यह है कि स्वर्णरेखा को साफ-सुथरा करने के लिए हमें तीन उपाय करने की जरूरत है।

सबसे पहले तो स्वर्णरेखा नदी के नदी अगल-बगल में बसे शहरों के मोहल्लों की जितनी भी नालियां हैं, जो सीधे अपनी गंदगी के साथ स्वर्णरेखा नदी में जाकर गिरती हैं, उनको बंद कर देना चाहिए। इसे बंद करने के लिए सरकार को एक बड़ा प्रोजेक्ट लाना चाहिए, जिसके तहत स्वर्णरेखा बेसिन में बसे उद्योगों के कचरा, मोहल्लों एवं गांवों की जो भी नालियां हैं, उन्हें रोक कर एक बड़ा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किया जाए। इस सीटीपी में जल को साफ किया जाए, फिर नदी में जल छोड़ा जाए। इससे नदी लगभग स्वच्छ हो जाएगी।

दूसरा उपाय है सरकारी स्तर पर नदी को धरोहर घोषित किया जाए। इसके ऊपर वही कानून लागू हो जो एक जीवित व्यक्ति के ऊपर लागू होता है। जैसे कोई व्यक्ति या संस्था अगर नदी में कोई अन्ट्रीटेड सीवरेज या नाली का पानी गिराता हो एवं अस्पताल का कचरा, जानवरों के अवशेष, प्लास्टिक आदि फेंकता हो उस पर वही कानून लागू होना चाहिए जो एक जीवित व्यक्ति के ऊपर हत्या के प्रयास का होता है। ऐसा कानून लागू होने पर लोगों के अंदर नदी को स्वच्छ रखने के लिए एक जागरूकता आएगी एवं लोग नदी को गंदा करने की हिमाकत नहीं करेंगे। इससे नदी को स्वच्छ होने में सहायता मिलेगी।

तीसरा उपाय है, नदी को हम पानी से भरपूर रखें। आज नदी केवल बरसात में ही लगभग दो महीना अपने आप बहती है। उसके बाद थोड़ा-बहुत पानी साल भर रहता है, जो मूलतः शहरों के मोहल्ले से बहता हुआ नाली का ही पानी है। उसी से नदी हमें बहती हुई दिखती है। आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि नदी में पानी है ही नहीं। पानी लाने के लिए एक ही उपाय है कि हम लोग नदी का जो जल अधिग्रहण क्षेत्र यानी इनकैचमेंट एरिया है और जो बारिश के जल को संग्रह और अपने साथ संचित रखती है और साल भर इसी क्षेत्र से नदी को पोषण के रूप में पानी मिलता है, यह क्षेत्र के वेटलैंड होता तथा एक स्पॉन्ज के रूप काम करता है। हाल के वर्षों इस क्षेत्र में बिना उचित प्लानिंग के अवैध निर्माण हुआ है। चाहे वह लोगों का निजी आवास हो या फिर फैक्ट्री आदि। इससे बारिश का जल को संग्रह करने का यह क्षेत्र तेजी से ही घट रहा है। इस कारण हम बारिश के पानी को एकत्र नहीं कर पा रहे हैं। इस कारण से नदी को साल भर पोषण के रूप में पानी नहीं मिल रहा है। इस समय सबसे मुक्ति पाने के लिए सबसे पहले तो हमें वर्तमान में नदी के अगल-बगल लगभग जो भी क्षेत्र अभी खाली है उसे चिन्हित कर, वहां पर किसी भी प्रकार का निर्माण प्रक्रिया का अविलंब रोक लगा देना चाहिए और इसे कठोरता से पालन करना चाहिए। साथ ही जहां भी अभी अतिक्रमण है नदी के जमीन पर उस क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त किया जाए ताकि नदी को अपना जल संग्रह करने के लिए अपना इनकैचमेंट एरिया पुनः प्राप्त हो जाए। तत्पश्चात इस इनकैचमेंट एरिया में वृहद अभियान चलाकर वृक्षारोपण किया जाए जिससे हम अधिक से अधिक बारिश के पानी का संग्रह कर सकें एवं नदी के बहाव से अपनी भूमि का भी संरक्षण कर सकें। ■

स्वर्णरेखा की बदहाली का जिम्मेदार कौन?

जमशेदपुर में टाटा स्टील का वेस्ट मैटेरियल

रांची में हरमू नदी और सरकारी उदासीनता!

474 किलोमीटर लंबी स्वर्णरेखा नदी जब हटिया के रानी का चुआं से निकल कर जमशेदपुर पहुंचती है तो इसकी हालत बेहद खराब हो जाती है। कल-कल कर बहती स्वर्णरेखा के साथ जमशेदपुर वालों ने अच्छा बर्ताव नहीं किया। सरकार को भी प्रतीत होता है इस महाभारत कालीन नदी की हरगिज चिंता नहीं है। अगर चिंता होती तो क्या जमशेदपुर वालों के शौच, नाले का बदबूदार मलबा आदि इस नदी में गिरता भला? टाटा स्टील को भी इस नदी के सेहत का ख्याल नहीं रहा। उसका भी वेस्ट मैटेरियल इसी नदी में गिरता है। नतीजा यह है कि नदी का स्वरूप यहां विकृत होता चला गया। पानी में दुर्गंध है। बदबू आती है। कल-कल कर बहती नदी जमशेदपुर क्षेत्र में मानो अपनी रफ्तार भूल चुकी है। रांची में बेशक स्वर्णरेखा नदी की स्थिति इक्कीसो महादेव के पास सुंदर है लेकिन वहां से जमशेदपुर पहुंचते-पहुंचते यह पहचान पाना कठिन हो जाता है कि यह स्वर्णरेखा नदी है। रांची की हालत तो और भी खराब है। इक्कीसो महादेव से लेकर तुपुदाना तक नदी की चाल और सेहत, दोनों बिगड़ चुकी है। यहां मवेशियों के छिन्न-भिन्न अंग से लेकर नगरीय कचरा और हरमू नदी की गंदगी में स्वर्णरेखा मिल जाती है और ऐसी बदबू उठती है कि आप पांच मिनट खड़े नहीं रह सकते। जमशेदपुर और रांची में स्वर्णरेखा नदी की क्या स्थिति है, पढ़े इस रिपोर्ट में.....

इस अंक की सभी तस्वीरें आनंद सिंह, विवेक सिंह और एजेंसी

■ *जमशेदपुर से* **आदित्य मुखर्जी** *की रिपोर्ट*

दोमुहानी घाट

दोमुहानी घाट को डेकोरेट तो ठीक से किया गया लेकिन पानी के स्वास्थ्य पर ध्यान शायद नहीं दिया गया। लोग बताते हैं कि पहले यहां के पानी का रंग साफ था लेकिन अब इसका रंग हरा होते जा रहा है। इस संवाददाता ने देखा कि इस नदी में इंसानों के साथ-साथ भैंसें भी नहा रही थीं। समझने योग्य तथ्य यह है कि जिस पानी में भैंसे नहाती हों, उसी नदी में इंसान भी नहा रहा हो और वही पानी लोग पी भी रहे हों तो स्थिति क्या बनेगी। नाम न छापने की शर्त पर कई लोगों ने बताया कि यहा का पानी ठीक नहीं है, यह हम लोग जानते हैं लेकिन करें तो क्या करें? टाटा स्टील अपने कचरा डंप करना बंद नहीं करेगा और न ही नगरीय कचरा इसमें आना बंद होगा। हम लोग बेहद मजबूरी में यहां स्नान करते हैं। सरकार को देखना चाहिए कि वह क्या कर रही है।

मानगो ब्रिज

यहां पानी का रंग सबसे ज्यादा हरा था। लोग गाड़ियों की धुलाई करते दिखे। यहां आजाद नगर और जुगसलाई के बड़े-बड़े नाले आकर मिलते हैं। आजाद नगर का नाला ज्यादा बड़ा है। वहां से सीधे नगरीय कचरा स्वर्णरेखा नदी में गिर रहा है। पानी से बदबू आ रही है। यहां स्वर्णरेखा नदी में आदित्यपुर, गम्हरिया, मऊभंडार, घाटशिला के साथ ही जमशेदपुर शहर का भी लगभग पूरा का पूरा कचरा डंप होता है। इस वजह से ही यहां के पानी से बदबू आती है। लोगों ने बताया कि वे अपने जन्म से ही इस नदी को प्रदूषण में घिरा देख रहे हैं। जमशेदपुर वासियों को भी नदी का ख्याल नहीं है। इधर आदमी नहा रहे हैं, उधर गाड़ियां धोई जा रही हैं। इससे आप अंदाजा लगा लें कि नदी की क्या स्थिति हो गई है।

पांडेयघाट

यहां साकची और भुईंयाडीह के सीवरेज का पानी स्वर्णरेखा नदी में गिरता है। पानी का रंग काला हो गया है। पानी से बदबू आती है। नदी की धार बेहद तमजोर है जो धीरे-धीरे एक पतली लकीर में परिणत हो जाती है। यहां पर शहरी क्षेत्र का मलबा इस नदी में ज्यादा गिर रहा है। दोमुहानी से लेकर डोबो होते हुए मानगो ब्रिज तक नदी की स्थिति खराब हो रही है।

बिरसानगर

बिरसानगर से सटे मोहरदा, भुईयाडीह, बागुनहातू, लिट्टी चौक के पास की बस्तियां, ग्वालाबस्ती, बाभनटोला, नागाडुमरी आदि इलाके नदी के किनारे ही हैं। इन इलाकों में टाटा स्टील के वेस्टेज के अलावे नागरिकों के वेस्टेज भी नदी में आकर गिरते हैं। अभी नदी का पानी बहुत खराब तो नहीं हुआ है लेकिन जिस रफ्तार से वेस्टेज यहां गिर रहे हैं, उसी हिसाब से गिरते रहे तो यहां भी नदी का पानी खराब हो जाएगा। खास मोहरदा में तो स्वर्णरेका का पानी पहले से ही मटमैला हो चुका है। मार्च-अप्रैल में इसका रंग फिर से बदल कर धूसर हो जाएगा।

रांची में पहचानना मुश्किल कि यह स्वर्णरेखा नदी है!

अपने उदगम स्थल से ज्योंही स्वर्णरेखा नदी रांची के इक्कीसो महादेव के पास पहुंचती है, इसकी हालत खराब हो जाती है। शहर का लगभग सारा कचरा इसी नदी में जाकर मिल जाता है। पानी से भभका आता है। भयानक दुर्गन्ध। इतनी जबरदस्त सड़ांध आती है कि वहां पांच मिनट खड़े रह पाना मुश्किल हो जाता है। उसके बाद तेतरी टोली से लेकर कांटा टोली तक नदी की स्थिति कमोबेश इतनी ही खराब रहती है। पानी का रंग बदल जाता है। अधिकांश स्थानों पर आपको स्वर्णरेखा का रंग काला या गहरा स्याह दिखता है। इस इलाके में अन्य अपशिष्टों के अलावे जानवरों के अवशेष भी इसी नदी में आकर बहते चले जाते हैं। जानवरों के अवशेष रोज आपको बहते हुए मिल जाएंगे और वह भी टनों की मात्रा में। स्वर्णरेखा को गंदा करने में अपशिष्ट तो जिम्मेदार हैं ही, हरमू नदी भी बराबर की दोषी है। दरअसल, इक्कीसो महादेव में दोनों नदियां मिलती हैं। वहीं पर हरमू की गंदगी से स्वर्णरेखा भी प्रदूषित हो जाती है। तुपुदाना में पहले ज्यादा औद्योगिक कचरा स्वर्णरेखा में गिरता था, अब थोड़ा कम गिरता है लेकिन गिरता जरूर है। इन्हीं औद्योगिक कचरे के कारण अनेक स्थानों पर स्वर्णरेका का पानी लाल, काला और धूसर रंग का हो गया है।

(साथ में गौतम देब)

18 नाले गिर रहे हैं स्वर्णरेखा में

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) को जानकारी दी गई है कि अधिकारियों ने जमशेदपुर और उसके आसपास स्वर्णरेखा नदी के प्रदूषण के बारे में अदालत के निर्देशों का पालन करते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की है। गौरतलब है कि अदालत ने 11 अक्टूबर, 2023 को इस मामले में रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश दिया था। मामला झारखंड में जमशेदपुर और उसके आसपास स्वर्णरेखा नदी में हो रहे प्रदूषण से जुड़ा है। कोर्ट ने पूर्वी सिंहभूम के जिला मजिस्ट्रेट, कपाली नगर परिषद, जुगसलाई नगर परिषद और आदित्यपुर नगर निगम को नोटिस जारी किया है।

गौरतलब है कि स्वर्णरेखा नदी प्रदूषण को लेकर एवेन्यू मेल में छपी एक खबर के आधार पर अदालत ने स्वतः संज्ञान लिया था। इस खबर में झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किए एक सर्वेक्षण का भी हवाला दिया गया है। इसके मुताबिक नदी जल में पीएच के उच्च स्तर के साथ-साथ डीओ और सीसा की भी उच्च मात्रा पाई गई है। रिपोर्ट में इस बात की भी जानकारी दी गई है कि नदी 19।3 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करती है। स्वर्णरेखा रांची के पास से शुरू होती है, जिसके बाद ओडिशा और पश्चिम बंगाल से होकर 457 किलोमीटर का सफर तय करते हुए बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। यह भी जानकारी मिली है कि मानगो और मऊभंडार जैसे क्षेत्रों में प्रदूषण की स्थिति और भी बदतर है। आपको बता दें कि इस मामले में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने 11 अक्टूबर, 2023 को दर्ज मूल आवेदन का निपटारा किया है। इसमें विभिन्न नगर परिषदों और निगमों को सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) स्थापित करने और उन्हें 15 अप्रैल, 2024 तक चालू करने का आदेश दिया गया था। 2023 के आदेश में उल्लेख किया गया है कि जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति ने जानकारी साझा की है कि 18 सीवेज नाले स्वर्णरेखा नदी में गिरते हैं। इनमें हर दिन 12।2 करोड़ लीटर (एमएलडी) सीवेज बहता है। इसका मतलब है कि वहां पैदा हो रहा सारा सीवेज बिना उपचार के स्वर्णरेखा नदी में छोड़ा जा रहा है।

नहाना ठीक नहीं स्वर्णरेखा में, फिर भी लोग नहा रहे हैं

भारत सरकार के केंद्रीय प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड (सीपीसीबी) की ओर से जारी रिपोर्ट में झारखंड की नौ नदियों की स्थिति खराब बतायी गयी है। इस रिपोर्ट के हिसाब से स्वर्णरेखा व हरमू राज्य की दो सबसे प्रदूषित नदियां हैं। हरमू नदी का बायो केमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) 10.1 है, जबकि स्वर्णरेखा नदी का बीओडी 10 है। किसी भी नदी में इतना बीओडी इसमें नहाने के लिहाज से भी उचित नहीं है। इस रिपोर्ट को ध्यान में रखें तो स्वर्णरेखा में स्नान करना उचित नहीं लेकिन जमशेदपुर में दोमुहानी, पांडेयघाट, मानगो ब्रिज के नीचे लोग नहा रहे हैं। ना सिर्फ पुरुष, स्त्रियां भी यहां स्नान कर रही हैं और तसले में पानी भर कर घर भी ले जा रही हैं। इंसान तो इंसान, यहां मवेशी भी स्नान कर रहे हैं। किसी भी दिन आप दोमुहानी चले जाएं, आपको इंसान और भैंसे वहां नहाती दिखेंगी।

2023 में प्रभात खबर में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत सरकार ने वर्ष 2019-2021 के बीच एक एजेंसी की मदद से देश भर की नदियों के प्रदूषण की स्थिति का अध्ययन कराया था। इसमें राज्य की 20 नदियों को शामिल किया गया था। इन नदियों के पानी की गुणवत्ता की जांच 62 स्थानों पर करायी थी। जांच के दौरान राज्य की नौ नदियों के कई स्थानों पर बीओडी तीन से अधिक पाया गया है। बताया गया कि तीन से अधिक बीओडी होने पर पानी की गुणवत्ता खराब हो जाती है।

प्राथमिकता सूची तीन, चार और पांच में झारखंड की नदियां : जांच के बाद नदियों को उनके पानी की गुणवत्ता के हिसाब से पांच अलग-अलग प्राथमिकता सूची में रखा गया है। झारखंड की प्रदूषित कुल नौ नदियों को तीसरी, चौथी और पांचवीं प्राथमिकता सूची में रखा गया है। दो नदियां (हरमू और स्वर्णरेखा नदी) तीसरी प्राथमिकता सूची में शामिल हैं जबकि, चौथी सूची में एक और पांचवीं सूची में शेष छह नदियां शामिल हैं।

राज्य के नदियों में प्रदूषण की स्थिति इस प्रकार है:-

नदी जांच स्थल	बीओडी
स्वर्णरेखा रांची, मुरी, जमशे दपुर	10.0
हरमू रांची	10.1
खरकई सोनारी	8.0
जुमार बूटी	5.3
गरगा तेलमच्चो	4.9
बोकारो जरंगडीह	3.9
कतरी मुनडीह	3.6
दामोदर तेलमच्चो, जरंगडीह, रामगढ़	3.5
कोइना मनोहरपुर	3.1

पूरे देश में करायी गयी थी 2108 नदियों की जांच

भारत सरकार ने झारखंड समेत देश के 28 राज्यों और सात केंद्र शासित प्रदेशों में कुल 2108 नदियों की जांच करायी। इसके लिए कुल 4484 जगहों से पानी के नमूने लिये गये। इसके अलावा 713 लेक, पौंड व टैंकों और 64 अन्य प्रकार के जल स्रोतों की भी जांच की गयी। इसमें 351 जल स्रोत प्रदूषित पाये गये। इस प्रदूषण को दूर करने के लिए केंद्र सरकार ने संबंधित राज्यों को योजना बनाने का निर्देश दिया है। यह निर्देश झारखंड में अब तक ठंडे बस्ते में ही पड़ा हुआ है। ■

राज्यस्तर पर बनायी जायेगी नदी पुनरुद्धार कमेटी

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देश के आलोक में प्रदूषित नदियों के पुनरुद्धार के लिए कमेटी बनेगी। सभी राज्यों को यह काम करना है। राज्य स्तर पर कमेटी तथा केंद्र स्तर पर मॉनिटरिंग कमेटी बनाने का प्रस्ताव है। भारत सरकार वाली कमेटी की अध्यक्षता जल शक्ति मंत्रालय के सचिव करेंगे।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

स्वर्णरेखा नदी का अवलोकन

भारत नदियों का देश है। देश में सैकड़ों नदियाँ बहती हैं। भारत में नदियों को पवित्र माना जाता है। स्वर्णरेखा नदी पूर्वी भारत की प्रमुख नदियों में से एक है। यह झारखंड के छोटानागपुर पठार से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा से होकर बहती है। स्वर्णरेखा नदी की लंबाई लगभग 457 किलोमीटर है और यह सिंचाई और घरेलू उपयोग के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। नदी क्षेत्र के सांस्कृतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक पहलुओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

'स्वर्णरेखा' नाम का बंगाली में शाब्दिक अर्थ 'सुनहरी लकीर' है और यह इसके किनारों के पास पाए जाने वाले सुनहरे रेत के कणों से लिया गया है। इसकी कई सहायक नदियाँ हैं, जिनमें खरकई, दामरा, उत्तरी कारो और दक्षिणी कारो शामिल हैं, जो इस क्षेत्र की घनी वन पहाड़ियों और घाटियों से होकर बहती हैं। स्वर्णरेखा नदी बेसिन में वनस्पतियों और जीवों की समृद्ध विविधता है। इस क्षेत्र में कई पक्षी प्रजातियाँ, सरीसृप और स्तनधारी पाए जाते हैं, जिनमें हाथी, बाघ, लकड़बग्घा और हिरण शामिल हैं। नदी का मध्य भाग अपने झरनों, रैपिड्स और घाटियों के लिए जाना जाता है, जो इसे राफ्टिंग और ट्रैकिंग जैसे साहसिक खेलों के लिए एक आकर्षक स्थान बनाता है।

आर्थिक मोर्चे पर, स्वर्णरेखा नदी इस क्षेत्र में कृषि के लिए सिंचाई का एक प्रमुख स्रोत है। नदी का उपयोग धान, मक्का, गेहूं और सब्जियों की खेती के लिए किया जाता है। नदी के आसपास के उपजाऊ मैदान औद्योगिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं, इस क्षेत्र में कई कारखाने और प्रसंस्करण संयंत्र स्थित हैं। हालाँकि, नदी को कई पर्यावरणीय चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है, जैसे कि वनों की कटाई, मिट्टी का कटाव और औद्योगिक कचरे के कारण होने वाला जल प्रदूषण। सरकार और स्थानीय समुदायों ने इन मुद्दों को हल करने के लिए उपाय किए हैं, जैसे कि वनीकरण कार्यक्रम, चेक डैम का निर्माण और औद्योगिक अपशिष्ट निर्वहन को विनियमित करना। स्वर्णरेखा नदी भारत के पूर्वी क्षेत्र के लिए सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिस्थितिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। यह न केवल एक भौगोलिक इकाई है, बल्कि गौरव और पहचान का प्रतीक भी है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए नदी और उसके बेसिन को संरक्षित और संरक्षित करना महत्वपूर्ण है, ताकि क्षेत्र की प्रगति और समृद्धि में इसका निरंतर योगदान सुनिश्चित हो सके।

स्वर्णरेखा नदी का सौंदर्य और महत्व

स्वर्णरेखा नदी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और आर्थिक महत्ता के कारण पूर्वी भारत में एक महत्वपूर्ण जलमार्ग बनी हुई है, जो इसके बेसिन में रहने वाले लोगों के जीवन को प्रभावित करती है।

स्वर्णरेखा नदी पूर्वी भारत की एक खूबसूरत, महत्वपूर्ण और अनोखी नदी है। यह झारखंड के छोटा नागपुर पठार से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा राज्यों से होकर बहती है।

स्वर्णरेखा नदी की कुछ विशेषताएं, सुंदरता और महत्व इस प्रकार हैं:

प्राकृतिक दृश्यः स्वर्णरेखा नदी अपने मनमोहक प्राकृतिक दृश्यों के लिए जानी जाती है, खास तौर पर नदी के मध्य भाग में पाए जाने वाले झरने, तेज़ धाराएँ और घाटियाँ। नदी घने जंगलों वाली पहाड़ियों और घाटियों से होकर बहती है, जिससे आसपास के परिदृश्य का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। समृद्ध जैव विविधताः नदी बेसिन में वनस्पतियों और जीवों की समृद्ध विविधता है। यह क्षेत्र पक्षियों, सरीसृपों और

स्तनधारियों की कई प्रजातियों का घर है, जिनमें हाथी, बाघ, लकड़बग्घा और हिरण शामिल हैं, और नदी मछलियों और अन्य जलीय प्रजातियों से समृद्ध है। सांस्कृतिक महत्वः 'स्वर्णरेखा' नाम का अर्थ है 'स्वर्णिम रेखा', और यह नदी इस क्षेत्र में रहने वाले समुदायों के लिए सांस्कृतिक महत्व रखती है। इस नदी का उल्लेख कई प्राचीन हिंदू ग्रंथों में किया गया है, और कई महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थ स्थल, जैसे देउली मंदिर और जगन्नाथ मंदिर, इसके तट पर स्थित हैं। आर्थिक महत्वः नदी के आस-पास के उपजाऊ मैदान कृषि के लिए अवसर प्रदान करते हैं, नदी धान, मक्का, गेहूं और सब्जियों जैसी फसलों के लिए सिंचाई का एक प्रमुख स्रोत है। यह क्षेत्र औद्योगिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है, क्योंकि इसके आसपास कई कारखाने और प्रसंस्करण संयंत्र स्थित हैं। साहसिक खेलः नदी के तेज बहाव, झरने और घाटियाँ इसे साहसिक खेलों जैसे राफ्टिंग, ट्रैकिंग और कैम्पिंग के लिए एक उत्कृष्ट स्थान बनाती हैं। पर्यावरणीय महत्वः स्वर्णरेखा नदी एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक गलियारे के रूप में कार्य करती है, जो वनस्पतियों और जीवों की कई लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए आवास प्रदान करती है। नदी बेसिन जानवरों और पौधों की कई स्थानिक प्रजातियों का भी घर है। निष्कर्ष रूप में, स्वर्णरेखा नदी पूर्वी भारत की एक सुंदर, महत्वपूर्ण और अनूठी नदी है, जिसमें समृद्ध सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिस्थितिक विरासत है। यह क्षेत्र के लोगों के लिए गौरव और पहचान का प्रतीक है और उनकी आजीविका के लिए आवश्यक है। इसलिए, भविष्य की पीढ़ियों के लिए नदी और उसके बेसिन की रक्षा और संरक्षण करना आवश्यक है। ■

स्वर्णरेखा नदी में अब नहीं बहेगा नाले का गंदा पानी!

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

खरकई और स्वर्णरेखा नदी में अब नाले का गंदा पानी नहीं बहेगा। इस नाले को नियंत्रित करने के लिए टाटा स्टील यूआइएसएल (पहले जुस्को) की ओर से शहर में तीन अलग-अलग स्थानों पर पोर्टेबल सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट (पीएसटीपी) की स्थापना की जा रही है। इसके तहत सोनारी स्वर्ण विहार के पास 2000 किलो लीटर प्रतिदिन (केएलडी) सीवेज ट्रीटमेंट किया जायेगा, जिसका काम चल रहा है। यह सबसे बड़ा नाला है, जहां से गंदा पानी निकलता है और सीधे नदी में जाकर मिलता है। इसका ट्रीटमेंट कर पानी नदी में छोड़ा जायेगा। इसी तरह सोनारी के खरकई इंक्लेव के पास 500 किलो लीटर प्रतिदिन सीवेज ट्रीटमेंट का प्लांट लगाया जा रहा है। यहां से सोनारी इलाके के निचले इलाके का नाला सीधे नदी में जाता है, जिसको रोकने के लिए ट्रीटमेंट किया जायेगा। इसी तरह कदमा उलियान स्थित हेमछाया कॉम्प्लेक्स के पास 2000 किलो लीटर प्रतिदिन ट्रीटमेंट का सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाया जा रहा है। यहां पूरे कदमा एरिया का नाला आता है और यहां से सीधे नदी में चला जाता है। इसके ट्रीटमेंट का उपाय किया जा रहा है। अभी तीन ट्रीटमेंट प्लांट लगाया जा रहा है। योजना है कि आगे भी सारे नालों पर इस तरह का ट्रीटमेंट प्लांट लगाया जाये, ताकि नाले का गंदा पानी सीधे नदी में नहीं जा सके। इसके जरिये पानी का रियूज और कचरा का रिसाइकिल भी किया जायेगा। साल 2025 में इन तीनों परियोजना को पूर्ण करने का लक्ष्य है। आपको बता दें कि करीब 32 नाला सीधे खरकई और स्वर्णरेखा नदी में बह रहे हैं।

इसमें से टाटा स्टील कमांड एरिया के नाले पर ट्रीटमेंट प्लांट बनाने का काम टाटा स्टील यूआइएसएल की ओर से शुरू किया गया है। लेकिन अब प्रशासन और सरकारी मशीनरियों को भी पहल करने की जरूरत है, क्योंकि मानगो से लेकर भुइयांडीह, बिरसानगर, जुगसलाई, बागबेड़ा समेत अन्य स्थानों से भी नाले सीधे बिना ट्रीटमेंट के नदी में जा रहे हैं। इसको लेकर एनजीटी में एक केस दायर किया गया था। इसके आलोक में ट्रीटमेंट प्लांट बनाने को कहा गया है। टाटा स्टील और टाटा स्टील यूआइएसएल ने गंभीरता से इसपर काम करना शुरू कर दिया है, लेकिन अब तक सरकारी मशीनरी और प्रशासन चुप्पी साधे है। ■

जीवनदायिनी स्वर्णरेखा की कम हो रही धार

■ विद्या सिंह

झारखंड के लिए जीवनदायिनी स्वर्णरेखा नदी अपने नाम के मुताबिक सच में सोना उगलती है। स्वर्णरेखा नदी का उद्गम स्थल राजधानी रांची से करीब 16 किलोमीटर दूर पांडु गांव स्थित 'रानी चुआं' हैं। मान्यता है कि महाभारत काल में अज्ञातवास के दौरान पांडव इस गांव में आए थे। जहां द्रौपदी को प्यास लगी, तो अर्जुन ने बाण मारकर इसी स्थल से पानी निकाला था। हजारों साल बाद भी यहां से पानी निकल रहा है। अब रानी चुआं को एक कुआं का रूप देकर घेर दिया गया है। गर्मी के मौसम में भी इस कुआं का जलस्तर जमीन के लेवल पर बना रहता है और पानी कभी कम नहीं होता। वहीं इस कुआं से पानी बाहर निकलने का रास्ता भी बनाया गया है, जहां से पानी का रिसाव होता है, फिर खेतों से बहते हुए ये करीब दो किलोमीटर दूर बांधगांव पहुंचता हैं। रानी चुआं का पानी इसी गांव से नदी का रूप धारण कर आगे जाकर स्वर्णरेखा नदी में तब्दील हो जाती है। स्वर्णरेखा नदी झारखंड ओडिशा और पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों से गुजरते हुए 474 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद समुद्र में मिल जाती है।

नदी की तेज धार का सोने के खान से घर्षण

नदी तमाम चट्टानों के बीच से होकर गुजरती है। रांची के अनगड़ा-तमाड़ के इलाके में सोने का खान भी होने की बात सामने आती है। ऐसे में भू वैज्ञानिकों का मानना है कि संभवतः किसी सोने के खदान से घर्षण की वजह से नदी में सोने के कण घुल जाते हैं।

उद्गम स्थल के निकट राइस मिल और कारखानों से प्रदूषण

स्वर्णरेखा नदी का उद्गम स्थल रानी चुआं है। लेकिन उद्गम स्थल के निकलते ही अब कई राइस मिल और अन्य छोटे-बड़े कल-कारखाने लग गए है। जिसके कारण उद्गम स्थल के निकट ही नदी काफी प्रदूषित हो गई है। अब भी उद्गम स्थल से निकलने वाला जल स्रोत जीवित है, जहां से हर समय आज भी पानी निकलता रहता है। रांची के पास

स्थित उद्गम स्थल से निकलने के बाद ये नदी किसी भी दूसरी नदी में जाकर नहीं मिलती, बल्कि सीधे बंगाल की खाड़ी में जाकर गिरती है। जमशेदपुर शहर इस नदी के बेसिन का सबसे बड़ा शहर है। सारा सीवेज सीधे नदी में आकर गिरता है और अब इसके पानी में ऑक्सीजन की मात्रा घटती जा रही है और नदी के पानी में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) तय मानक से अधिक हो गया है, जबकि बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड मानक से कम होना चाहिए। झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने स्वर्णरेखा नदी के पानी के नमूने की जांच कराई तो पता चला कि अधिकतर जगहों पर पानी में ऑक्सीजन की मात्रा कम पाई गई। स्थिति यह है कि स्वर्णरेखा नदी का पानी जानवरों और मछलियों के लिए सुरक्षित नहीं है। जानवरों और मछलियों के लिए पानी में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड की मात्रा 1.2 मिलीग्राम से कम होनी चाहिए। जबकि 7.0 मिलीग्राम प्रति लीटर तक है। इसकी वजह से काफी संख्या में मछलियां नदी में मर रही हैं। इसके साथ ही साथ जानवरों को भी कई तरह की बीमारियां हो रही हैं।

नदी बेसिन का क्षेत्रफल 19 हजार वर्ग किलोमीटर

स्वर्णरेखा नदी सिर्फ झारखंड के लिए जीवनदायिनी नहीं है, बल्कि यह नदी पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल और ओडिशा के कई इलाकों के लिए जीवनरेखा है। स्वर्णरेखा नदी के बेसिन का क्षेत्रफल करीब 19 हजार वर्ग किलोमीटर है। नदी रांची से निकलती है। जिसके बाद सरायकेला-खरसावां और पूर्वी सिंहभूम होते हुए पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर और ओडिशा के बालासोर से होकर बहती है। यह नदी सूखी तो तीनों राज्यों के कई इलाके जलविहीन हो जाएंगे।

सैकड़ों गांवों में सिंचाई की सुविधा

स्वर्णरेखा नदी सिर्फ सोने के कण को लेकर ही जीवनदायिनी नहीं है, बल्कि नदी से सैकड़ों गांवों के खेतों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराई जाती हैं। जबकि नदी के रास्ते पर कई डैम और चेकडैम की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है, जिससे लोगों को स्वच्छ पेयजल की भी आपूर्ति की जाती हैं। ■

औद्योगिक कचरा और शहरी अपशिष्ट हैं खतरा

विकास की सबसे बड़ी कीमत नदियों को चुकाना पड़ रहा है। घरेलू कचरे का निस्तारण, कारखानों का कचरा, बेकार पड़ा मलबा नदी में बहा दिया जाता है। फिर नदी में इतना भी जल नहीं बचा कि वह अपशिष्ट बहाने लायक स्थित हो। जब हालात बिगड़ते हैं तो नदी की सेहत की याद आती है और फिर उसको सुधारने के नाम पर नमामि गंगा जैसी लाखों करोड़ की योजना बनाई जाती है।

कुछ दिनों तक नदियों की सफाई के नाम पर भ्रम फैलाया जाता है कि नदी सुधर गई है, लेकिन कॉस्मेटिक के जरिए रक्त या अस्थि के रोग ठीक होते नहीं हैं। बगैर जल के जीवन की कल्पना संभव नहीं है। हमारी नदियों के सामने मूलरूप से तीन तरह के संकट हैं- पानी की कमी, मिट्टी का आधिक्य और प्रदूषण। मानसून के तीन महीनों में बमुश्किल 40 दिन पानी बरसना या फिर एक सप्ताह में ही अंधाधुंध बारिश हो जाना या बेहद कम पानी बरसना, ये सभी परिस्थितियां नदियों के लिए अस्तित्व का संकट पैदा कर रही हैं।

आधुनिक युग में नदियों को सबसे बड़ा खतरा प्रदूषण से है। बात स्वर्णरेखा नदी की करें तो इसकी निचली लहर में बीओडी की मात्रा मानक से चार गुणा अधिक है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि इन नदियों का पानी जहरीला हो गया है। अनुमान है कि जितने जल का उपयोग किया जाता है, उसके मात्र 20 प्रतिशत की ही खपत होती है। शेष 80 प्रतिशत कचरा समेटे बाहर आ जाता है। इसे अपशिष्ट या मल-जल कहा जाता है, जो नदियों का दुश्मन है। भले ही हम कारखानों

को दोषी बताएं, लेकिन नदियों की गंदगी का तीन चौथाई हिस्सा घरेलू मल-जल ही है। अति प्रदूषित नदियों में स्वर्णरेखा नदी भी शुमार हो गई है। नवरात्र में मूर्ति विसर्जन के बाद नदी की हालत और भी खराब हो जाती है। एक अनुमान के मुताबिक सैकड़ों एमएलडी सीवरयुक्त पानी हर रोज स्वर्णरेखा नदी में मिल रहा है।

कचरे से बेहाल

कोल्हान की जीवनरेखा स्वर्णरेखा नदी कचरे से बेहाल है। हालत की गंभीरता इसी से समझी जा सकती है कि नदी में 18 जगहों से सीवरलाइन के पाइप छोड़े गए हैं। प्रदूषण विभाग के सख्त निर्देश और नदियों को बचाने की योजनाएं फाइलों तक सीमित हैं और टनों कचरा प्रतिदिन स्वर्णरखा में उड़ेला जा रहा है। इस पर अक्षेस का कोई नियंत्रण नहीं है। अपार्टमेंट और नव निर्मित भवनों के सीवर लाइन क्यों स्वर्णरेखा में ही मिलते हैं। इस सवाल का जमशेदपुर अक्षेस(स्थानीय निकाय) के पास कोई जवाब नहीं है। जमशेदपुर की शहरी आबादी 12 लाख के पार है लेकिन जमशेदपुर अक्षेस का अपना एक भी वाटर ट्रीटमेंट प्लाट नहीं है। ■

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)

प्रधान मंत्री आवास योजना-शहरी

Pradhan Mantri Awas Yojana-Urban

बिरसानगर किफायती आवास परियोजना, जमशेदपुर

मात्र रु 4.31 लाख में अपना घर

हमारा सपना... हर शहरी गरीब का हो घर अपना

आवासीय परियोजना की विशेषताएँ

- लगभग 312 वर्गफीट का घर
- बिजली, पानी, आधारभूत संरचना की सम्पूर्ण व्यवस्था
- बैंको से आसान किस्तो में लोन
- रजिस्ट्री शुल्क एवं स्टाम्प ड्यूटी मात्र 1 रु में
- सोलर स्ट्रीट लाईट की व्यवस्था
- 2 पहिया, 4 पहिया पार्किंग की व्यवस्था

पात्रता

- ऐसे परिवार जो 17 जून 2015 के पूर्व से अधिसूचित क्षेत्र में निवास करते है।
- परिवार की सालाना आमदनी अधिकतम 3 लाख रु से
- आवेदक या उसके परिवार के नाम से भारत में कहीं पक्का मकान न हो
- योजना अंतर्गत लाभुक परिवार में पति पत्नी एवं अविवाहित बच्चे शामिल होंगे

फ्लैट की प्रमुख विशेषताएं

- डिस्टेंपर युक्त रंगरोगन
- विट्रीफाइड टाइल्स युक्त फर्श
- LED बल्ब का प्रावधान
- स्टेनलेस स्टील सिंक
- कमरों में पंखे का प्रावधान
- बाथरूम फिटिंग
- अल्मुमिनियम की खिड़कियाँ
- दीवारो पर प्लास्टर ऑफ पेरिस
- अग्निशमन यंत्र की व्यवस्था
- 24 घंटे पानी की व्यवस्था
- लिफ्ट की व्यवस्था

परियोजना विवरणी

परियोजना स्थल	बिरसानगर
परियोजना का क्षेत्र	48 एकड़
कुल फ्लैट की संख्या	कुल 9592 फ्लैट
प्रति फ्लैट की लागत	₹ 6.81 लाख
प्रति फ्लैट केंद्र सरकार का अंशदान	₹ 1.5 लाख
प्रति फ्लैट राज्य सरकार का अंशदान	₹ 1 लाख
प्रति फ्लैट लाभुक का अंशदान	₹ 4.31 लाख
प्रति फ्लैट कारपेट एरिया	RCC ढाँचा (संरचना G+8)
भवन का निर्माण	1 लिविंग रूम, 1 बैडरूम, 1 रसोई घर, 1 शौचालय, 1 बाथरूम एवं बालकनी
प्रति फ्लैट का आंतरिक विवरण	जलापूर्ति, आंतरिक सड़क, नाली, जल संचयन, सीवरेज और ड्रेनेज, स्ट्रीट लाईट,
आवासीय परिसर में सुविधाएं	घर से बाहर की चेरदीवारी, सुरक्षा, पार्किंग/ग्रीन एरिया, अन्य

लाभुक अंशदान

क्र सं	किश्त विवरण	विवरण	लाभुक द्वारा अंशदान जमा किये जाने वाली राशि (रूपये में)
1.	सुरक्षा राशि	आवास हेतु आवेदन पत्र के समय	5,000/-
2.	प्रथम किश्त	आवंटन पत्र जारी होने के 30 दिन के अंदर	20,000/-
3.	द्वितीय किश्त	लाभुक को आवंटित आवास का निर्माण कार्य 25% पूर्ण होने के उपरान्त	1,01,500/-
4.	तृतीय किश्त	लाभुक को आवंटित आवास का निर्माण कार्य 50% पूर्ण होने के उपरान्त	1,01,500/-
5.	चतुर्थ किश्त	लाभुक को आवंटित आवास का निर्माण कार्य 75% पूर्ण होने के उपरान्त	1,01,500/-
6.	पंचम किश्त	लाभुक को आवंटित आवास का निर्माण कार्य 100% पूर्ण होने के उपरान्त	1,01,500/-
लाभुक अंशदान की पूर्ण राशि देने के बाद ही आवास की चाभी सौंपा जाएगा			कुल : 4,31,000/-

आवेदन पत्र के साथ जमा करने हेतु आवश्यक दस्तावेज

- लाभार्थी का पहचान पत्र एवं संयुक्त धारक का पहचान पत्र (स्व सत्यापित छायाप्रित)
- लाभार्थी का पासपोर्ट साईज फोटो (3 प्रति)
- लाभार्थी का बैंक अकाउंट संख्या एवं पासबुक (स्व सत्यापित छायाप्रित)
- लाभुक सहमति पत्र (स्व हस्ताक्षरित मुल प्रति) (CONSENT FORM)
- स्व घोषणा पत्र (स्व हस्ताक्षरित मुल प्रति)
- आधार कार्ड (स्व सत्यापित छायाप्रित)
- लाभार्थी का चालु मोबाईल नं0 (आवास आवंटित होने तक सुगम संपर्क हेतु)

नोट : पहचान पत्र में ये दस्तावेज मान्य होगें

- (मतदाता पहचान पत्र / पासपोर्ट / पैन कार्ड / राशन कार्ड / राजस्व प्रधिकार प्रमाण पत्र / बैंक पासबुक / बीपीएल काड)

निवेदक : जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति, जमशेदपुर

नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखण्ड सरकार

बिरसानगर किफायती आवास परियोजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए 9470389630 पर संपर्क करें। या जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति, जमशेदपुर कार्यालय में संपर्क करें

JNAC

BHALOTIA

SkillSonics®

JSDMS

सी. एल. बी. मेगा स्किल सेंटर

(झारखण्ड सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्किल सेंटर)

100% रोजगार अवसर

चन्दुलाल भालोटिया वेलफेयर ट्रस्ट की एक इकाई

उपलब्ध कोर्स

- मेटल और ऑर्क वेल्डिंग(MMAW)
- सहायक इलेक्ट्रीशियन
- सी एन सी ऑपरेटर
- फिटर (मैकेनिकल और फेब्रीकेशन)

योग्यता

- आयु: न्युनतम 18 वर्ष
- योग्यता: न्यूनतम 8वीं पास
- झारखण्ड का आवासीय प्रमाण पत्र

पाठ्यक्रम की अवधि : 3 से 4 महीना

नि: शुल्क सुविधाएं

- प्रशिक्षण फीस
- कम्प्यूटर प्रशिक्षण
- ड्रेस और किताबें
- अंग्रेजी वार्तालाप अध्ययन
- खाना और रहना

प्लेसमेंट पार्टनर

Ramkrishna Forgings Limited

TATA ELECTRONICS

HONDA

ME

MARUTI SUZUKI

पता: कान्ड्रा - सरायकेला रोड, भोलाडीह, मेटलसा कंपनी के सामाने, सरायकेला, झारखण्ड-833220

अिधक जानकारी के लिए संपर्क करें: **6287798604, 6287798605, 6287798602**

email: skillclb@gmail.com, centrehead.clb@gmail.com | Website: https://clbskills.org

महाभारतकालीन स्वर्णरेखा की देखी नहीं जाती दुर्गति

स्वर्णरेखा नदी सैकड़ों साल पुरानी है। इतिहासकार इसका जिक्र महाभारत काल में भी कर चुके हैं। माना जाता है कि यह नदी महाभारतकालीन है। कहा जाता है कि नगड़ी के पास रानीचुआं में अज्ञातवास के समय पांडव यहां आकर रहे थे। इसीलिए इस गांव का नाम पांडु पड़ा। खास यह कि स्वर्णरेखा के उद्गम का नाम रानी चुआं इसलिए पड़ा, क्योंकि एक बार जब इस निर्जन इलाके में रानी द्रौपदी को प्यास लगी तो अर्जुन ने बाण मारकर इसी स्थल से पानी निकाला था, जो आज भी मौजूद है। समय के साथ नदी का नाम स्वर्णरेखा पड़ गया।

■ मंजीत ठाकुर

दरअसल, स्वर्णरेखा नदी राँची से 16 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित नगड़ी गाँव में रानी चुआं नामक स्थान से निकलती है। यह उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ती हुई मुख्य पठार को छोड़कर प्रपात के रूप में गिरती है। इस प्रपात (झरना) को हुन्डरु जलप्रपात कहते हैं। प्रपात के रूप में गिरने के बाद नदी का बहाव पूर्व की ओर हो जाता है और मानभूम जिले के तीन संगम बिंदुओं के आगे यह दक्षिण पूर्व की ओर मुड़कर सिंहभूम में बहती हुई उत्तर-पश्चिम से मिदनापुर जिले में प्रविष्टि होती है। इस जिले के पश्चिमी भू-भाग के जंगलों में बहती हुई बालेश्वर (ओड़िशा) जिले में पहुँचती है। यह पूर्व पश्चिम की ओर टेढ़ी-मेढ़ी बहती हुई बालेश्वर नामक स्थान पर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इस नदी की कुल लंबाई 474 किलोमीटर है और लगभग 28928 वर्ग किलोमीटर का जल निकास इसके द्वारा होता है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ काँची एवं कर्कारी हैं। टाटा स्टील इस नदी के किनारे ही स्थापित है। अपने मुहाने से ऊपर की ओर यह 16 मील तक देशी नावों के लिए नौगम्य है।

झारखंड की इस नदी को वैसे ही जीवनदायिनी कहा जाता है, जैसे हर इलाके में एक न एक नदी कही जाती है। पर झारखंड की यह नदी, अपने नाम के मुताबिक ही सच में सोना उगलती है। स्वर्णरेखा नदी से सोना निकलता जरूर है, लेकिन यह कोई नहीं जानता कि इसमें सोना आता कहां से है। स्वर्णरेखा नदी में स्वर्णकणों के मिलने के कारण इस क्षेत्र के स्वर्णकारों के लिये इस नदी की खास अहमियत है। किंवदन्ती है कि इस इलाके पर राज करने वाले नागवंशी राजाओं पर जब मुगल शासकों ने आक्रमण किया तो नागवंशी रानी ने अपने स्वर्णाभूषणों को इस नदी में प्रवाहित कर दिया, जिसके तेज धार से आभूषण स्वर्णकणों में बदल गए और आज भी प्रवाहमान है।

आज भी नदी में सूप लिए जगह-जगह खड़ी महिलाएं दिख जाएंगी। इलाके

के करीब आधा दर्जन गांवों के परिवार इस नदी से निकलने वाले सोने पर निर्भर हैं। कडरूडीह, पुरनानगर, नोढ़ी, तुलसीडीह जैसे गांवों के लोग इस नदी से पीढ़ियों से सोना निकाल रहे हैं। पहले यह काम इन गांवों के पुरुष भी करते थे, लेकिन आमदनी कम होने से पुरुषों ने अन्य कामों का रुख कर लिया। महिलाएं परिवार को आर्थिक मदद देने के लिए आज भी यही करती हैं।

नदी की रेत से रोज सोना निकालने वाले तो धनवान होने चाहिए? पर ऐसा है नहीं। हालात यही है कि दिनभर सोना छानने वालों के हाथ इतने पैसे भी नहीं आते कि परिवार पाल सकें। नदी से सोना छानने वाली हर महिला एक दिन में करीब एक या दो चावल के दाने के बराबर सोना निकाल लेती है। एक महीने में कुल सोना करीब एक से डेढ़ ग्राम होता है। हर दिन स्थानीय साहूकार महिला से 80 से 100 रुपये में एक चावल के बराबर सोना खरीदता है। वह बाजार में इसे करीब 400 रुपए तक में बेचता है। हर महिला सोना बेचकर करीब 7,000 रुपए तक महीने में कमाती है।

474 किलोमीटर लंबी यह बरसाती नदी देश की सबसे छोटी अंतरराज्यीय (कई राज्यों से होकर बहने वाली) नदी है। यह रांची, सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल) और बालासोर (ओडिशा) से होकर बहती है। जानकारों का कहना है कि यह नदी अब सूखने लगी है और इसके उद्गम स्थल पर यह एक नाला होकर रह गई है। जानकारों के मुताबिक, इस नदी में कम होते पानी की वजह से भूजल स्तर भी तेजी से गिरता जा रहा है। काटे जा रहे जंगलों की वजह से मृदा अपरदन भी बढ़ गया है।

हालांकि इस नदी पर बनने वाले चांडिल और इछा बांध का आदिवासियों ने कड़ा विरोध किया और यहां 6 जनवरी, 1979 को हुई पुलिस फायरिंग में चार आदिवासियों ने अपनी जान दे दी। परियोजना चलती रही और 1999 में इस परियोजना पर भ्रष्टाचार की कैग की रिपोर्ट के बाद इसे पूरे होने में 40 साल का समय लगा। परियोजना तो पूरी हो गई, लेकिन स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और बिजली मुहैया कराने के वायदे पूरे नहीं हुए।

इस नदी की बेसिन में कई तरह के खनिज हैं। इन खनिजों ने नदी की सूरत बिगाड़ दी। खनन और धातु प्रसंस्करण उद्योगों ने नदी को प्रदूषित करना भी शुरू कर दिया है। अब नदी के पानी में घरेलू और औद्योगिक अपशिष्टों के साथ-साथ रेडियोएक्टिव तत्वों की मौजूदगी भी है। खासकर, खुले खदानों से बहकर आए अयस्क इस नदी की सांस घोंट रहे हैं।

ओडिशा के मयूरभंज और सिंहभूम जिलों में देश के तांबा निक्षेप सबसे अधिक हैं। 2016 में किए गिरि व अन्य वैज्ञानिकों के एक अध्ययन के मुताबिक, स्वर्णरेखा नदी में धात्विक प्रदूषण मौजूद है। अब नदी और इसकी सहायक नदियों में अवैध रेत खनन तेजी पर है। इससे नदी की पारिस्थितिकी खतरे में आ गई है।

इस नदी बेसिन के मध्यवर्ती इलाके में यूरेनियम के निक्षेप है। यूरेनियम खदानों के लिए मशहूर जादूगोड़ा का नाम तो आपने सुना ही होगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, रेडियोएक्टिव तत्व इस खदान के टेलिंग पॉन्ड से बहकर नदी में आ रहे हैं। जमशेदपुर शहर, जो इस नदी के बेसिन का सबसे बड़ा शहर है, का सारा सीवेज सीधे नदी में आकर गिरता है। अब इसके पानी में ऑक्सीजन की मात्रा घटती जा रही है और नदी के पानी में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) तय मानक से अधिक हो गया है, जबकि बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड मानक से कम होना चाहिए। झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने स्वर्णरेखा नदी के पानी के नमूने की जांच कराई तो पता चला कि अधिकतर जगहों पर पानी में ऑक्सीजन की मात्रा काफी है। स्थिति यह है कि स्वर्णरेखा नदी का पानी जानवरों और मछलियों के लिए सुरक्षित नहीं है। जानवरों और मछलियों के लिए पानी में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड की मात्रा 1.2 मिलीग्राम से कम होनी चाहिए, जबकि 7.0 मिलीग्राम प्रति लीटर तक है। हालांकि, जदयू विधायक सरयू राय ने 2011 में इसे लेकर जनहित याचिका दायर की थी। तब टाटा स्टील ने जवाब में कहा कि यह स्लग शहर की जनता को स्वर्णरेखा की बाढ़ से बचाने के लिए जमा किया गया है। हाइकोर्ट ने टाटा को यह जगह साफ करने को कहा था। हालांकि इस पर हुई कार्रवाई की ताजा खबर नहीं है। इस इलाके में मौजूद छोटी और बड़ी औद्योगिक इकाइयों, लौह गलन भट्ठियों, कोल वॉशरीज और खदानों ने नदी की दुर्गति कर रखी है। बहरहाल, खेती, पर्यटन और धार्मिक-आध्यात्मिक केंद्र के नजरिए से सम्भावनाओं से भरे स्वर्णरेखा नदी में उद्गम से लेकर मुहाने तक हकीकत के अफसाने ज्यादा सुनाई पड़ते हैं। ■

स्वर्णरेखा और खरकई नदी प्रदूषित, पीने लायक नहीं है पानी

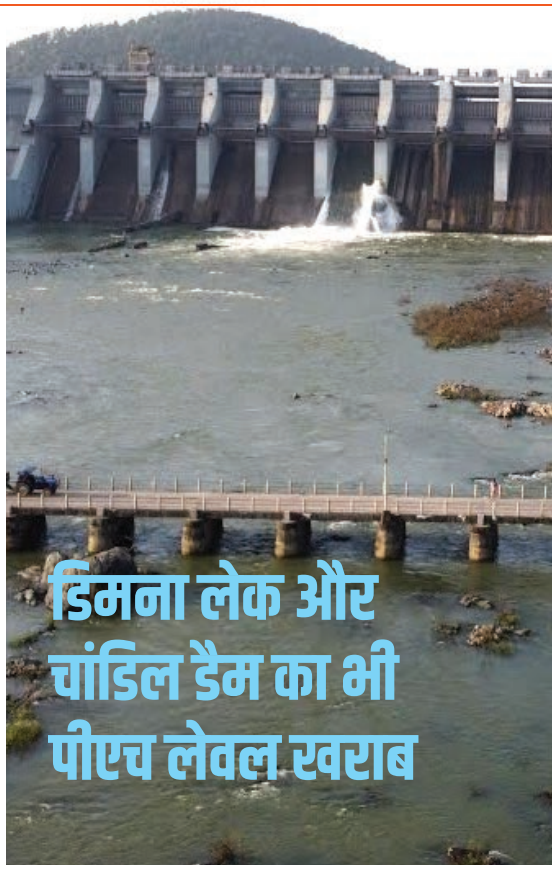

डिमना लेक और चांडिल डैम का भी पीएच लेवल खराब

■ ब्रजेश सिंह

शहर में पानी का अहम स्रोत स्वर्णरेखा और खरकई नदी का पानी कई एरिया में पीने लायक नहीं रह गया है. सीधे इसको पिया नहीं जा सकता है. झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद की ओर से दुर्गा पूजा और दीवाली के बाद लगातार नदी और डैम के पानी के सैंपल की जांच करायी गयी थी, जिसमें चांडिल डैम और डिमना लेक का भी कई हिस्सों में पीएच लेवल खराब पाया गया. कुल 14 स्थानों पर वाटर सैंपल लेकर जांच की गयी थी. इस जांच में कई जगह पर पानी में घुलने वाला ऑक्सीजन (डीओ) और पीएच लेवल खराब था तो कई जगह पर बीओडी (बायो केमिकल ऑक्सीजन डिमांड) की खराबी पायी गयी है. यह पानी पीने से गंभीर बीमारियां हो सकती है.

स्वर्णरेखा नदी का पानी खरकई में मिलने के पहले कम प्रदूषित

कराये गये आकलन के मुताबिक, स्वर्णरेखा नदी का पानी खरकई नदी में मिलने के पहले कम प्रदूषित रहता है. खरकई नदी में मिलने के बाद प्रदूषण का लेवल काफी ज्यादा बढ़ जाता है. वैसे ठंड के मौसम में पानी में कम प्रदूषित होता है.

दोनों नदियों में प्रदूषण का लेवल पहले से बढ़िया : प्रदूषण पदाधिकारी

झारखंड प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के क्षेत्रीय पदाधिकारी रामप्रवेश कुमार ने बताया कि पहले से प्रदूषण का लेवल कम हुआ है. इसको लेकर एनजीटी के सभी गाइडलाइन का अनुपालन किया जा रहा है. हम लोग प्रयास कर रहे हैं कि जनभागीदारी के जरिये प्रदूषण के लेवल को रोका जाये.

रांची आउटर में अब ठीक हो रही है स्वर्णरेखा

■ समीर सिंह

स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थल के आस-पास पूर्व में राइस मिलें चलती हैं। इन राइस मिलों का दो वर्ष पूर्व विधायक सरयू राय के नेतृत्व में निरीक्षण किया गया था। निरीक्षण में यह पाया गया कि राइस मिल से निकलने वाले अशुद्ध जल की निकासी नदी में की जा रही है। तब निरीक्षण दल ने राइस मिल संचालकों से आग्रह किया कि जो भी गंदा पानी मिल से निकाला जाता है, उसका इस्तेमाल मिल के भीतर ही किया जाए। इस बात को राइस मिल संचालकों ने मान लिया और गंदे पानी का पूर्ण उपयोग मिल में करने की व्यवस्था की गई। हालांकि इसमें जैसी सफलता मिलनी चाहिए थी, वैसी मिली नहीं।

स्वर्णरेखा नदी हटिया डैम में मिलने से पहले विभिन्न स्थलों से होकर गुजरती है। वह जिन स्थानों से होकर गुजरती है, वहां कई लोगों ने जगह-जगह मकान बना दिये। इस कारण नदी का पानी अशुद्ध होता जा रहा है। हटिया डैम से स्वर्णरेखा नदी सिठीयो श्मशान घाट होती हुई, वाया एच.ई.सी हटिया जाती है। पूर्व में एच.ई.सी रनिंग पोजीशन में था। तब उसका सारा अपशिष्ट स्वर्णरेखा नदी में ही गिरता था जिससे नदी की हालत खराब हो गई थी। प्रदूषण का स्तर बढ़ गया था और घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा भी कम हो गई थी। अब कारखाना प्रायः बंद है और उत्पादन का काम न के बराबर है। इस नाते न तो अपशिष्ट जल निकल रहा है और न ही उसे नदी में गिराने की नौबत ही आती है। एच.ई.सी में ग्रीन स्मार्ट सिटी का निर्माण हो रहा है, जिसमें सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण किया गया है। ट्रीटमेंट प्लांट होने की वजह से आवासीय परिसर से सीवेज का पानी ट्रीटमेंट होकर ही बाहर निकलता है। इससे स्वर्णरेखा नदी को काफी राहत मिली है। ■

पीने योग्य पानी का मानक

बीओडी	3 एमजी प्रति लीटर या उससे नीचे
डीओ	पांच एमजी प्रति लीटर
पीएच लेवल	6.5

सर्वे रिपोर्ट :

सैंपल करने का स्थान	डीओ प्रति लीटर	पीएच	बीओडी प्रति लीटर
चांडिल रोड पुल के पास	7.5	7.6	1.8
स्वर्णरेखा नदी का खरकई में मिलने के पहले	6.8	7.3	2.2
स्वर्णरेखा नदी का पानी खरकई नदी में मिलने के बाद	7.1	7.1	3.0
खरकई नदी का पानी स्वर्णरेखा नदी मिलने के पहले	6.2	6.6	3.0
मानगो डाउन स्ट्रीम	6.7	6.7	3.0
गालूडीह बराज	7.0	7.9	2.2
अपर स्ट्रीम एचसीएल घाटशिला	7.8	7.5	2.4
एचसीएल घाटशिला डाउन स्ट्रीम	7.2	7.4	2.2
बहरागोड़ा रोड ब्रिज	7.5	7.8	1.4
कोयलकारो नदी मनोहरपुर	7.7	7.7	1.4
चांडिल डैम	6.5	8.0	2.4
घाटशिला रोड ब्रिज	7.7	7.6	1.2
कोइना नदी मनोहरपुर	7.5	7.6	1.6

स्वर्णरेखा प्रदूषण मुक्ति अभियान

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

स्वर्णरेखा एक अंतरराज्यीय नदी है जो रांची से लगभग 15 किलोमीटर दक्षिण -पश्चिम में नगड़ी के पास रानीचुआं नामक स्थान से निकलती है। यह झारखंड में 269 किमी और ओडिशा में 126 किमी की दूरी तय करने के बाद बंगाल की खाड़ी में समुद्र में मिल जाती है। यह झारखंड की एकमात्र प्रमुख नदी है, जो झारखंड से निकलती है और सीधे समुद्र में मिलती है। इसका अपना एक स्वतंत्र बेसिन है। जनता दल (यूनाइटेड) के विधायक और विख्यात पर्यावरण एक्टिविस्ट सरयू राय राज्य सरकार से स्वर्णरेखा को 'राज्य नदी' (रिवर ऑफ स्टेट) घोषित करने का अनुरोध कर रहे हैं। एकमात्र उनके प्रयास से स्वर्णरेखा के उद्गम स्थल को पहले ही राज्य सरकार द्वारा पर्यटन स्थल घोषित कर दिया गया है।

स्वर्णरेखा नदी रानीचुआं नामक स्थान पर झरनों की एक श्रृंखला से निकलती है, जो समुद्र तल से लगभग 720 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और लगभग 395 किमी की दूरी तय करने के बाद बंगाल की खाड़ी में मिलती है। इसमें से लगभग 269 किमी की दूरी झारखंड में पड़ती है। खरकई नदी ओडिशा के सिमलीपाल जंगलों से निकलती है और जमशेदपुर में स्वर्णरेखा नदी में मिलती है। इसकी कुल लंबाई लगभग 166 किमी है, जिसमें से लगभग 98 किमी झारखंड में और शेष ओडिशा में है।

खरकई नदी सहित स्वर्णरेखा नदी कुल 18,951 वर्ग किमी के जलग्रहण क्षेत्र का जल निकास करती है, जिसमें से 12,798 वर्ग किमी का क्षेत्र झारखंड में स्थित है। केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) द्वारा 75 प्रतिशत निर्भरता पर स्वर्णरेखा-खरकई बेसिन की जल उपलब्धता का मूल्यांकन 42,0 एलएफ (5.18 एलएचएएम) के रूप में किया गया था और झारखंड द्वारा परिवर्तित आपूर्ति से उपलब्ध पुनर्भरण प्रवाह 3,00 एलएफ (0.37 एलएचएएम) माना गया था।

स्वर्णरेखा के आसपास कई प्रमुख उद्योग स्थित हैं, जिनमें से प्रमुख रांची जिले के टाटीसिलवे में उषा मार्टिन लिमिटेड और मुरी में हिंडाल्को और टाटा स्टील लिमिटेड के अलावा टाटा समूह के उद्योगों की लगभग एक दर्जन इकाइयां और घाटशिला में हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड के तांबा संयंत्र और अन्य चल रहे हैं। स्वर्णरेखा नदी औद्योगिक गतिविधियों के प्रदूषण से बुरी तरह प्रभावित है। जल संसाधनों, जलीय जीवों और आसपास रहने वाले लोगों के लिए भीषण खतरा पैदा हो गया है। इसी पृष्ठभूमि में सरयू राय ने नदी को प्रदूषण के बोझ से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया।

"स्वर्णरेखा प्रदूषण मुक्ति अभियान" के बैनर तले नदी के उद्गम स्थल से लेकर झारखंड में समुद्र में मिलने से पहले उसके अंतिम बिंदु तक एक अध्ययन सह जागरूकता अभियान चलाया गया। यह यात्रा 3 जून 2006 को शुरू हुई और विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर 5 जून 2006 को संपन्न हुई। इस अवसर पर जमशेदपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज हॉल में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें स्वर्णरेखा अध्ययन सहित जागरूकता यात्रा के अनुभवों को लोगों के साथ साझा किया गया।

सरयू राय ने वर्ष 2006 में नदी के किनारे आर्थिक गतिविधियों के कारण स्वर्णरेखा नदी के जल प्रदूषण की समस्या को उठाया और इसके उद्गम स्थल से पूर्वी सिंहभूम जिले के बहरागोड़ा प्रखंड में झारखंड की सीमा पर अंतिम बिंदु तक एक अध्ययन सह जागरूकता यात्रा निकाली। इस अध्ययन सह जागरूकता यात्रा में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों और पर्यावरण विशेषज्ञों का दल साथ था, जिनमें प्रो राहुल कुमार सिन्हा (डॉल्फिन मैन के नाम से विख्यात), डॉ गोपाल शर्मा (भारत सरकार के जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया में क्षेत्रीय निदेशक), प्रो एमके जमुआर (रांची विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के विभागाध्यक्ष) और डॉ केके शर्मा (जमशेदपुर के कोऑपरेटिव कॉलेज के प्राणी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष) शामिल थे। एक चलती फिरती पर्यावरण प्रयोगशाला भी यात्रा के साथ थी। वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने नदी की पूरी लंबाई और चौड़ाई में संबंधित बिंदुओं पर नागरिक और औद्योगिक प्रदूषण का परीक्षण किया। विशेषज्ञों के दल ने विभिन्न बिंदुओं से जल, तलछट और जलीय वनस्पतियों एवं जीवों के नमूने भी एकत्र किए। बाद में इन नमूनों का युगांतर भारती प्रबंधन द्वारा संचालित स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट (सीईईएम) की मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला में परीक्षण किया गया। परीक्षण के परिणामों के आधार पर विशेषज्ञ दल द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रदूषकों (जिनमें भारी तत्व और खतरनाक कचरे शामिल थे) का मूल्यांकन किया गया। तब से हर साल 14 जनवरी को मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर स्वर्णरेखा नदी के तट पर स्वर्णरेखा महोत्सव का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन झारखंड के अन्य जिलों में भी किया जाता है। ■

स्वर्णरेखा प्रदूषण समीक्षा यात्रा के बाद सरयू राय बोले

औद्योगिक प्रदूषण में कमी नगरीय प्रदूषण में बढ़ोत्तरी

जमशेदपुर पश्चिमी (तब पूर्वी) के विधायक सरयू राय के नेतृत्व में 22 से 27 मई तक स्वर्णरेखा प्रदूषण समीक्षा यात्रा चली, जिसमें युगांतर भारती, नेचर फाउंडेशन, स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट व स्वामी विवेकानंद ग्रामीण संस्था के सदस्यों के अलावा वैज्ञानिकों के दल ने भाग लिया। अंतिम दिन सरयू राय ने बिष्टुपुर स्थित आवासीय कालोनी में संवाददाता सम्मेलन के दौरान बताया कि स्वर्णरेखा नदी में औद्योगिक प्रदूषण काफी घटा है, जबकि नागरीय प्रदूषण तेजी से बढ़ा है।

विधायक ने बताया कि नदी के उदगम स्थल रांची स्थित रानीचुआं (नगड़ी) में नदी किनारे स्थित राइस मिलों से नदी काफी गंदी हो गई है। इसका असर धुर्वा डैम और गेतलसूद डैम तक दिखा। धान की भूसी से हवा व जल दोनों प्रदूषित पाए गए। मनुष्यों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि उनकी आंखों में जलन होती है, जबकि पानी में जली भूसी से खुजली होती है। रांची शहर से निकलने के स्थान पर स्वर्णरेखा अत्यंत गंदी है, क्योंकि शहर का पूरा जल-मल बिना किसी उपचार के स्वर्णरेखा में गिरता है। नदी किनारे के गांवों में बोरिंग के पानी में भी प्रदूषित पानी मिल रहा है। उनमें कई बीमारी हो रही है। जलीय जीव-जंतु मछलियां लुप्त हो गई हैं।

मुरी में औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रित पाया गया, लेकिन यहां भी नगर का जल-मल नदी में सीधे गिर रहा है। प्रदूषण का प्रभाव चांडिल डैम आते-आते समाप्त हो जाता है, लेकिन जैसे ही नदी जमशेदपुर पहुंचती है, पानी दोबारा प्रदूषित हो जाती है।

मुसाबनी में अपेक्षाकृत ठीक पाया गया, लेकिन मऊभंडार में बंद पड़े एचसीएल कारखाने में जमा अपशिष्ट से लोहा रिस-रिस कर नदी में जा रहा है, जो चिंता का विषय है। जमशेदपुर के बड़ौदा घाट व बोधनवाला घाट का पानी अत्यंत प्रदूषित पाया गया है। यहां जलीय जीव-जंतु लुप्त हो गए हैं। दोमुहानी, पांडेय घाट (बस स्टैंड के पास), बारीडीह, मीरा पथ, मोहरदा जलापूर्ति इंटकवेल के पास भी नमूना लिया गया। हर स्थान पर म्यूनिसिपल सीवरेज का प्रदूषण भारी मात्रा में पाया गया। मोहरदा जलापूर्ति इंटकवेल के पास पानी में घुले आक्सीजन की मात्रा दो-तीन पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) मिला, जो सात होना चाहिए। सरयू ने कहा कि इसके लिए राज्य सरकार को एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) लगाने समेत वैकल्पिक उपाय करने होंगे, तो जनता को भी जागरूक होना होगा। इस मौके पर रांची विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एमके जमुआर, युगांतर भारती के सचिव आशीष शीतल व वैज्ञानिक उमेश दास भी उपस्थित थे। ■

स्वर्णरेखा नदी: मिथक, यथार्थ और अस्तित्व का संघर्ष

■डॉ कविता परमार एवं डॉ विनीता परमार

भारत नदियों का देश है, जहां हर नदी अपनी अनूठी पहचान और सांस्कृतिक महत्ता रखती है। झारखंड की स्वर्णरेखा नदी भी इसी परंपरा का हिस्सा है। इसका नाम सुनते ही एक ऐसी नदी का चित्र उभरता है, जो अपनी रेत में सोने के कण समेटे हुए है। पूरब की ओर बहने वाली लम्बी अंतरराज्यीय नदियों में से स्वर्णरेखा (जिसका अर्थ ही है सोने की लकीर) नदी, न सिर्फ झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के भूभागों को सींचती है, न केवल एक प्राकृतिक धरोहर है बल्कि सांस्कृतिक, पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व का प्रतीक भी है। यह नदी अपने उद्गम स्थल रांची जिले में नागरी गांव के पास रानीचुआं से लेकर ओडिशा और बंगाल के विभिन्न इलाकों तक बहती है।

स्वर्णरेखा नदी का उद्गम स्थल, रानीचुआं, एक ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व रखता है। लोककथाओं के अनुसार, अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने इस क्षेत्र में समय बिताया था। माना जाता है कि अर्जुन ने अपनी धनुष से बाण चलाकर यहां से पानी निकाला था। इस नदी के साथ जुड़ी यह कथा स्थानीय जनमानस में गहराई से रची-बसी है। इसके अलावा, नागवंशी राजाओं से जुड़े मिथकों का जिक्र मिलता है। कहा जाता है कि जब मुगलों ने नागवंशी राजाओं पर हमला किया, तो रानी ने अपने स्वर्णाभूषणों को नदी में प्रवाहित कर दिया। नदी की तेज़ धार ने इन आभूषणों को स्वर्णकणों में बदल दिया, जो आज भी नदी की रेत में पाए जाते हैं। यह मिथक ही इस नदी के नाम "स्वर्णरेखा" का आधार है। स्वर्णरेखा नदी का सबसे आकर्षक पहलू इसकी रेत से सोने का मिलना है। नदी के किनारे बसे गांवों के लोग, विशेषकर महिलाएं, आज भी इस नदी की रेत से सोने के कण निकालती हैं।

यह नदी तांबा खनन क्षेत्र से होकर पूर्व की ओर बहती है और हुंडू जलप्रपात द्वारा छोटानागपुर पठार को छोड़ देती है। स्वर्णरेखा नदी देश की सबसे छोटी अंतरराज्यीय नदी है। इसका बेसिन क्षेत्र लगभग 19,000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यह नदी रांची, सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल) और बालासोर (ओडिशा) से होकर बहती है। यह क्षेत्र खनिज संपदा से भरपूर है, जिसमें तांबा, यूरेनियम और स्वर्णकण शामिल हैं। स्वर्णरेखा नदी बेसिन उत्तर-पश्चिम में छोटानागपुर पठार, दक्षिण-पश्चिम में ब्राह्मणी बेसिन, दक्षिण में बुरहाबलंग बेसिन और दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। ध्यातव्य है कि यह नदी झारखण्ड के प्रमुख औद्योगिक शहरों जैसे जमशेदपुर, चाईबासा, रांची और ओडिशा के भद्रक से होकर गुजरती है। अपने रास्ते में प्रमुख सहायक नदियां कांची, खरकई और करकरी से मिलती विभिन्न उद्योगों के अपशिष्ट जल को पीते हुए ओडिशा के कीर्तनिया बंदरगाह पर

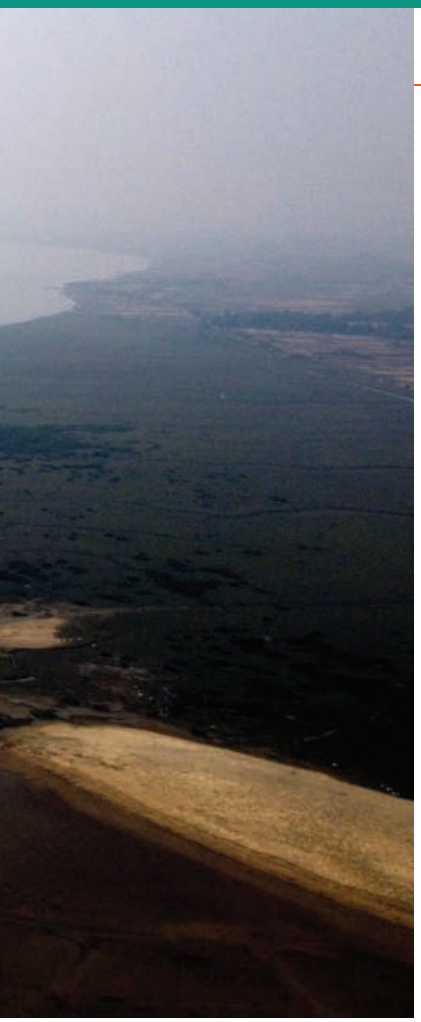

बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

आज विश्व की लगभग सभी नदियों की भाँति स्वर्णरेखा नदी की पेटी को भी खाली किया जा रहा है। अपने विशिष्ट प्रकार के रेत की वजह से इस नदी की जान सांसत में है। अपनी छलनी सीने पर जमशेदपुर और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाले रासायनिक कचरे,सीवेज और रेडियोसक्रिय तत्वों को ढोने के लिए नदी मजबूर है। नदी के आसपास अवैध रेत खनन भी तेजी से बढ़ा है। यह खनन न केवल नदी के प्राकृतिक प्रवाह को बाधित करता है, बल्कि इसके तल को भी अस्थिर बना रहा है। जमशेदपुर जैसे औद्योगिक शहर स्वर्णरेखा नदी के किनारे स्थित हैं। यहां से निकलने वाले औद्योगिक कचरे को सीधे नदी में बहा दिया जाता है। टाटा स्टील और अन्य कंपनियों के संचालन से निकलने वाले भारी धातु और रसायन नदी को कहीं न कहीं प्रदूषित कर रहे हैं। यह प्रदूषण न केवल जलचर जीवों को प्रभावित करता है, बल्कि इसके आसपास के किसानों की आजीविका पर भी गहरा असर डालता है। नदी जिसका जल बहते पानी के लिए जाना जाता है, जब वो रुक जाती है और जलकुंभी और शैवाल से भर जाती है, तब उसे देख कर लगता है कि मानवीय प्रवेश ने एक जीती-जागती नदी की हत्या कर दी। नदी की इस हत्या में हजारों जलीय जीवों की मृत्यु भी शामिल होती है। नदी के पानी में घुलित ऑक्सीजन की कमी और अमोनिया की बढ़ोतरी में मछलियां मर रही हैं या विषैली हो गई हैं।

गर्मियों के दौरान, नदी का पानी पीने और खेती के लिए भी अनुपयोगी हो जाता है। जादूगोड़ा क्षेत्र में स्थित यूरेनियम खदानों से बहने वाले रेडियोसक्रिय तत्व इस नदी के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं। यह तत्व नदी की जैव विविधता और आसपास के मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किए गए अध्ययन में यह पाया गया है कि नदी के पानी में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) का स्तर मानक से काफी अधिक है। जहां मछलियों और जानवरों के लिए पानी में बीओडी का स्तर 1.2 मिलीग्राम प्रति लीटर से कम होना चाहिए, वहां यह 3.0 मिलीग्राम प्रति लीटर तक पाया गया है। इस कारण गर्मियों में मछलियों की व्यापक मृत्यु और जानवरों में बीमारियां देखी जाती हैं। हालाँकि झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने जमशेदपुर के आसपास नदी के स्वास्थ्य को पहले से ठीक होने का दावा किया है।

लेकिन आज स्वर्णरेखा नदी के पानी पर निर्भर करने वाले गांवों की खेती लगातार प्रभावित हो रही है। प्रदूषित पानी से सिंचाई के कारण मिट्टी की उर्वरता घट रही है। स्थानीय किसान मजबूरन रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अधिक उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनकी लागत बढ़ रही है और फसल की गुणवत्ता घट रही है।

स्वर्णरेखा नदी के किनारे स्थित गांवों में जलजनित बीमारियां बढ़ रही हैं। प्रदूषित पानी के कारण डायरिया, हैजा और त्वचा संबंधी बीमारियों के मामले तेजी से बढ़े हैं। हाल के वर्षों में स्वर्णरेखा जल कैंसर का भी कारक बना है। पानी के कारकों से हुई बीमारियों ने खासकर बच्चों और बुजुर्गों पर गहरा असर डाला है। स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण स्थानीय लोग इन समस्याओं से जूझने को मजबूर हैं। नदी के आसपास रहने वाले समुदायों के लिए आजीविका के साधन सीमित हो रहे हैं। रेत खनन और सोना छानने जैसी परंपरागत आजीविकाओं पर प्रशासनिक प्रतिबंध और पर्यावरणीय चिंताओं के कारण संकट खड़ा हो गया है। स्थानीय युवाओं में बेरोजगारी बढ़ रही है, जिससे वे पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं।

स्वर्णरेखा नदी के संरक्षण के लिए प्रशासन द्वारा कुछ कदम उठाए गए हैं, लेकिन वे अपर्याप्त साबित हो रहे हैं। प्रदूषण को रोकने के लिए कठोर नियमों की आवश्यकता है। औद्योगिक कचरे को सीधे नदी में बहाने पर रोक लगाई गई है लेकिन कठोरता से पालन मुश्किल दिखता है। इसके अलावा, रेत खनन को नियंत्रित करने और इसे वैज्ञानिक तरीके से संचालित करने की आवश्यकता है। प्लास्टिक युग के कहर से स्वर्णरेखा भी अछूती नहीं है कहीं न कहीं यह मानवीय अत्याचार भविष्य में नदी जल में माइक्रोप्लास्टिक की उपस्थिति को बताएगा।

स्वर्णरेखा नदी को बचाने के लिए सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है। स्थानीय लोगों को जागरूक करना और उनके साथ मिलकर संरक्षण योजनाओं को लागू करना अधिक प्रभावी हो सकता है। सिर्फ़ नदी की आरती कर लेना इस समस्या का समाधान नहीं, क्योंकि हम मृत्यु के पूर्व ख्याल रखने वाले नहीं मृत्यु के पश्चात शोक मनाने वाले समाज से हैं। आज देखते-देखते राँची की हरमू नदी ने दम तोड़ दिया और कोई नामलेवा नहीं। नदियों की खुद की विशेषता है वह स्थिति नियंत्रण में रहने तक अपनी सफ़ाई खुद करती हैं, लेकिन जब नदी का तंत्र विफल हो जाता है तब नदी की धमनियाँ बंद होने लगती है।

आज के समय की जरुरत है कि हम स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा दें और युवाओं को इस दिशा में सक्रिय करें। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर काम करना ही होगा। नदी की स्वच्छता और पुनरुत्थान के लिए दीर्घकालिक योजनाएं बननी चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण, जल संरक्षण और जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है। सरकार को 'नमामि गंगे' जैसी पहल को स्वर्णरेखा नदी पर लागू करना चाहिए। इसके तहत नदी की सफाई, पुनरुद्धार और संरक्षण के लिए धन और संसाधन उपलब्ध कराए जायें।

स्वर्णरेखा नदी झारखंड, ओडिशा और बंगाल की सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिस्थितिक धरोहर है। इसे बचाना केवल स्थानीय लोगों की जिम्मेदारी ही नहीं, बल्कि पूरे समाज का कर्तव्य है। अगर हम समय रहते नहीं चेते, तो यह नदी केवल इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह जाएगी। पिछले कुछ वर्षों में हमने तीन सौ से ज्यादा नदियों को हमेशा-हमेशा के लिए खो दिया है। वैसे में जहां नदी सिर्फ़ सोता के रूप में है, इसे पुनर्जीवित करने के लिए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है, ताकि यह नदी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जीवनदायिनी बनी रहे। जब नदी अपने आब के साथ रहती है तो उस जगह की सभ्यता और संस्कृति फलती-फूलती है। सनद रहे हमारी नदियां ही हमारे जंगल की मां और बारिशों का ठिकाना हैं। ■

(लेखिकाद्वय पर्यावरणविद हैं)

स्वर्णरेखा महोत्सव के 20 वर्षः मिलानी हॉल में आयोजित गोष्ठी में बोले सरयू राय

नदियों का निर्मल और अविरल बहना जरूरी

जमशेदपुर पश्चिम के विधायक सरयू राय ने कहा है कि नदियों का पानी निर्मल और अविरल बहना जरूरी है। हर माह कम से कम एक दिन हमें नदियों के किनारे काम करने की जरूरत है क्योंकि आज जो पर्यावरण की स्थिति हो गई है, वह बेहद दुखद है।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट और युगांतर भारती के संयुक्त तत्वावधान में यहां मिलानी हॉल में स्वर्णरेखा महोत्सव के 20 वर्ष पूर्ण होने के मौके पर आयोजित संगोष्ठी में श्री राय ने कहा कि स्वर्णरेखा महोत्सव के लिए मकर संक्रांति का दिन इसलिए चुना गया, ताकि जनसहभागिता हो। लोग इस अभियान से जुड़ें। 20 साल पहले जब हम लोग पानी का नमूना लेते थे तो लोग हंसते थे कि क्या कर रहे हैं। आज कई एनजीओ वही काम कर रहे हैं। उन्होंने इस पर गंभीर चिंता जताई और कहा कि सारी गंदगी सीधे नदी किनारे फेंकी जा रही है जो नदी में ही चली जाती है। घर का कचरा इसमें सबसे ज्यादा है।

सरयू राय ने कहा कि हमने नदियों को अपने घर का कचरा डंप करने का अड्डा बना लिया है। यह ठीक नहीं है। जो कचरा हम नदियों में डंप करेंगे, वही पानी में जाएगा और कहीं न कहीं से वही पानी हम लोग पीते भी हैं। आखिर मशीनें पानी को कितना फिल्टर कर पाएंगी। उन्होंने कहा कि कहने को तो यह नदी है लेकिन बरसात बीतने के बाद यह नाला बन जाती है। इतना कचरा इसमें फेंक दिया जाता है कि नदी का प्रवाह टूटने लगता है। इसलिए वह नाला बन जाती है।

रवींद्रनाथ चौबे ने कहा कि सरयू राय ने ठीक ही कहा था कि सतनाला से गहरा जहां का पानी मिलेगा,

वही पानी शुद्ध होगा। सरयू राय मुख्य सचिव से पत्राचार कर रहे हैं और हमें उम्मीद है कि परिणाम अच्छा निकलेगा। उन्होंने कहा कि हम पूजा-पाठ करते हैं, करें। लेकिन, जो पूजन सामग्री है, उसे नदी में सीधे न फेकें। नदी के किनारे झाड़ियां होती हैं। उन झाड़ियों में फेंकें तो ठीक रहेगा। उनका तर्क यह था कि पूजन सामग्री को अगर हम लोग सीधे नदी में फेंक देंगे तो कचरा लगातार जमा होता चला जाएगा जो नदी के वेग को तो रोकेगा ही, पानी को भी बुरी तरह प्रदूषित कर देगा। उन्होंने गुजरात का उदाहरण देते हुए बताया कि गुजरात में नदियों में सीधे पूजन सामग्री नहीं फेंकी जाती। वहां एक सिस्टम बन गया है कि आप जैसे ही नदियों में पूजन सामग्री या कोई भी चीज फेंकेंगे, आप कैमरे में कैद हो जाएंगे। सरकार को इस दिशा में झारखंड में भी काम करना चाहिए।

डॉ. मुरलीधर केडिया ने कहा कि बागबेड़ा, मानगो और जुगसलाई में जो भी कचरा सेप्टिक टैंक में डाला जाता है, वह सीधे नदी में चला जाता है। इससे जबरदस्त नुकसान होता है। उनका कहना था कि जुगसलाई का कचरा नदी के किनारे डंप होता है और खरकई का दूषित पानी अंततः स्वर्णरेखा नदी में ही जाकर मिल जाता है। उन्होंने सरकार से अपेक्षा की कि शहर में अलग-अलग स्थानों पर वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट बिठाए जाएं। वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. दिनेशानंद गोस्वामी ने कहा कि पहले के लोग जब सफर पर चलते थे, तब अपने साथ एक सुराही रखते थे। वह मानते ते कि घर का पानी साफ और शुद्ध है और मिट्टी की सुराही का पानी उनके लिए बेहतर है। अब लोग फ्लास्क और न

जाने क्या-क्या लेकर चलते हैं लेकिन उन्हें शुद्ध पानी नहीं मिलता। घरों में शुद्ध हवा के लिए मशीनें लगाई जा रही हैं। पहले ये सब ताम-झाम नहीं था। आप कल्पना करें कि 20-25 साल के बाद देश-दुनिया की क्या स्थिति होने वाली है। हमें न तो शुद्ध हवा आज मिल रही है और न ही शुद्ध पानी। दो दशक बाद के दृश्य की कल्पना करके रोम-रोम सिहर उठता है। साइंस और पर्यावरणविद कहते हैं कि जिस नदी की तलहटी में ज्यादा बालू होगा, वहां का पानी ज्यादा साफ होगा। आप नजरें उठा कर देखें, किस नदी का बालू तस्करों ने गायब नहीं कर दिया। जब बालू है ही नहीं तो फिर पानी शुद्ध होगा कहां से?

जाने-माने पर्यावरणविद डा. दिनेश चंद्र मिश्र ने कहा कि जब उन्होंने नदियों का अध्ययन किया तो कई बातें सामने आईं। नदियों से परंपराएं जुड़ी हुई हैं। माता-पिता और गुरुजन पहले शिक्षा देते थे, ज्ञान की बातें सिखाया करते थे। अब ये परंपराएं समाप्त हो गईं। दरअसल, हमें समझना होगा कि नदियां पूरे विश्व की माता हैं। नई पीढ़ी को इसमें कोई रुचि नहीं है। उन्होंने एक श्लोक गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती, नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु का जिक्र किया और बताया कि इस श्लोक में जल की व्यापक महत्ता है। इसमे सात नदियों के नाम हैं। सरस्वती केंद्र में आती हैं। सरस्वती में पानी है ही नहीं। हम लोग नदी को प्रणाम करके समस्त कार्य करते हैं। सरस्वती लुप्त हो गईं। प्रकृति ने हर घर के आगे सरस्वती प्रदान की। इसे कुआं कहते हैं। हम लोग नदी पर ध्यान-स्नान कर रहे हैं लेकिन उसकी पवित्रता पर ध्यान ही नहीं। आज तो कोई नदी ऐसी बची ही नहीं, जिसके जल से हम लोग सीधे आचमन कर सकें। इसके पूर्व स्वागत भाषण स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी अशोक गोयल ने किया जबकि मंच संचालन सुबोध श्रीवास्तव ने किया। आभार प्रदर्शन स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी आशुतोष राय ने किया। ■

20वां स्वर्णरेखा महोत्सवः दोमुहानी और पांडेय घाट पर किया गया नदी पूजन

▸▸ विधायक सरयू राय ने जरूरतमंदों को भेंट की साड़ियां

स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट और युगांतर भारती के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को 20वां स्वर्णरेखा महोत्सव मनाया गया। मकर संक्रांति के दिन आयोजित इस महोत्सव में सोनारी स्थित दोमुहानी और पांडेयघाट पर विधि-विधान से पूजन-अर्चन किया गया। महोत्सव के मुख्य अतिथि के तौर पर जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय मौजूद थे। पंडित विनोद पांडेय ने नदी पूजन, पुष्प अर्पण और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच नदी की आरती उतारी। नदी पूजन के बाद लड्डू एवम तिलकुट का वितरण श्रद्धालुओं के बीच किया गया। इस मौके पर विधायक सरयू राय ने अपने हाथों जरूरतमंद महिलाओं को साड़ी भेंट की।

इस मौके पर स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के दोनों ट्रस्टीःआशुतोष राय और अशोक गोयल के साथ-साथ मनोज सिंह (सीबीएमडी), सुरंजन राय, ललन द्विवेदी, अशोक सिंह, कविता परमार, मंजू सिंह, नीरु सिंह, सीमा, प्रतिमा देवी, रीता सिंह, सीमा सिंह, लक्ष्मी सरकार, सुनीता सिंह, बावी दास, किरण देवी,विजय लक्ष्मी, पूनम कुमारी, सुबोध श्रीवास्तव, मुकुल मिश्रा, निखार सबलोक, नीरज सिंह, रविशंकर सिंह, अमरेंद्र पासवान, राघवेंद्र प्रताप सिंह, ताड़क मुखर्जी, भोला पांडेय, मनोज सिंह, संजीव आचार्य, प्रदीप सिंह, लालू, प्रवीण सिंह, संतोष भगत, प्रेम सक्सेना, चुन्नू भूमिज, बंदेशंकर सिंह, अजय श्रीवास्तव, मानिक सिंह, कुलविन्दर सिंह पन्नू,शेषनाथ पाठक, मनोज सिंह उज्जैन, अजीत सिंह, प्रकाश कोया, आकाश शाह, अर्जुन यादव, भरत पांडे,शंकर कर्मकार, विजय सिंह, अमरेश कुमार, दिलीप प्रजापति, किशोर कुमार, गिरी पांडे, सुनील सिंह, गोल्डन पांडे, अभीजीत चन्द्रा, विजय कुमार,रेणु शर्मा, महावीर साहू, हरिहर सिंह, माताशंकर शुक्ला, विनोद तिवारी, चन्दरबली सिंह आदि शामिल रहे। ■

स्वर्णरेखा खुद साफ हो जाएगी आप उसमें मलबा डालना बंद कर दें

-विवेक कुमार सिंह

■ आनंद सिंह

विवेक कुमार सिंह पेशे से फोटोग्राफर हैं लेकिन डॉक्यूमेंट्री और फीचर फिल्म बनाने का भी शौक रखते हैं। खाली नहीं बैठ सकते। लेंस के पीछे से दुनिया को, खास कर पर्यावरण को वह गौर से निहारते हैं। 2020-21 में जब देश भर में लॉकडाउन लगा हुआ था, तब उन्होंने पास बनवाया और मित्रों के साथ नगड़ी (रांची) से चौमुखा (बंगाल की खाड़ी के पास) जा पहुंचे। आठ महीने तक वह शूटिंग-एडिटिंग करते रहे और 34 मिनट की एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाई जिसका नाम है स्वर्णरेखाःएक रहस्यमयी नदी। 34 मिनट के इस फिल्म को इन पंक्तियों के लेखक ने दो बार देखा और महसूस किया कि विवेक जी ने कितना जोखिम लेकर इस फिल्म को शूट किया है। इस फिल्म को बनाने, स्वर्णरेखा की समस्या और अन्य बातों को लेकर उनसे हुई बातचीत के अंश प्रस्तुत हैः-

स्वर्णरेखा को आपने डॉक्यूमेंट्री के लायक क्यों चुना? आपके दिमाग में क्या था?

मेरा पूरा बचपन, मेरी जिंदगी इसी नदी के किनारे बीती है। यह नदी बहुत आकर्षित करती है। मुझे इसके बारे में जब पता चला कि यह बहुत ही ज्यादा ऐतिहासिक और हिमालय से भी पुरानी नदी है, तो मैं सहसा इसकी ओर आकर्षित हो गया।

स्वर्णरेखा नदी का फैलाव कई जगह बेहद कम हो गया है। यह सब जब आप सुनते और देखते हैं तो क्या महसूस करते हैं?

देखिए! काफी तकलीफ होती है। इसके पीछे जो मुख्य वजह है, वह है लोगों का सेल्फ कांशस होना। सिर्फ अपने बारे में सोचना। सिर्फ आज के लिए सोचना। लोगों को यह अंदाजा नहीं है कि जो आज हम नुकसान कर रहे हैं, वह भविष्य में काफी भयावह होनेवाला है। हम लोग बचपन से पढ़ते आ रहे हैं कि गंगा के तट पर जो बसे हैं या गंगा के तट पर जो मिट्टी है, वह काफी उपजाऊ है। मैंने बहुत एक पुरानी एक पुस्तक में पढ़ा था जिसमें लिका था कि नदी के किनारे लोग रहते थे, लेकिन नदी से डरते भी थे। इसलिए वे नदी से दूर रहते थे और पानी के लिए नदी के पास आते थे और नदी का पानी लेकर चले जाते थे। नदी का जो प्रकृति है, बाढ़ पैदा करना, तो बरसात में बाढ़ आएगी। लोगों को पानी चाहिए, मिट्टी चाहिए, खेती के लिए। इसलिए लोग नदी के किनारे ही रहना चाहते थे। अब लोगों की मानसिकता बदल गई है। जैसे-जैसे लोगों की संख्या बढ़ती गई, ज्ञानी लोगों की संख्या कम होती चली गई। अब लोग भौतिकवादी हो गये हैं और सिर्फ आज के लिए सोच रहे हैं। नदी ने कभी किसी को अपने करीब नहीं बुलाया, लेकिन जरूर हम अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए नदी के किनारे रहने लग गए। जब हम बाढ़ का शिकार हुए तो बांध बना दिए। बांध बना दिए तो कई प्रॉब्लम खड़े हो गये। प्रदूषण का बड़ा कारण है बांध। नदी किनारे हमने फैक्ट्री लगा दी। सारा मलबा नदी में जा रहा है। किसी को देखना नहीं, किसी को जानना नहीं सब नदी में बह जाना है। इसमें कहीं ना कहीं सरकार की भी गलती है। फिर बाद में इंसान ही इसे भुगतते हैं। अभी भी भुगत रहे हैं।

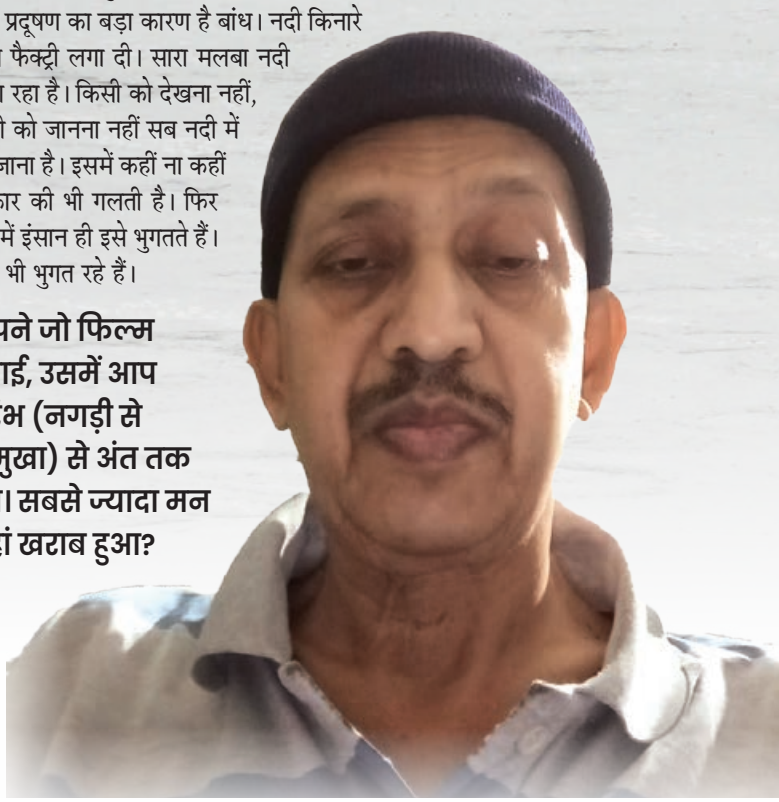

आपने जो फिल्म बनाई, उसमें आप प्रारंभ (नगड़ी से चौमुखा) से अंत तक गये। सबसे ज्यादा मन कहां खराब हुआ?

जितने भी पठारी एरिया हैं या कल-कारखाने हैं या ईंट भट्ठे हैं, छोटे-छोटे कारखाने हैं, उन सब जगहों पर बहुत तकलीफ है। इन स्थानों को मलबे से पाटा जा रहा है। रांची से लेकर घाटशिला तक देखा तो गंदगी बहुत बड़ी समस्या है। इसके बाद बहरागोड़ा में अचानक से नदी साफ हो गई है। जब हम लोग बहरागोड़ा में शूटिंग कर रहे थे तो कई ऐसे स्थानों पर गए, जहां मुझे लगा कि शायद हम लोग पहले हैं, जो यहां आए। वहां हम लोगों ने ड्रोन से शूटिंग की। हमने तो देखा कि वहां का पानी बहुत ही साफ है। वहां की नदी से निकालकर हमने पानी भी पिया। केवल शहरी क्षेत्र में बहुत ज्यादा गंदगी का असर है। नदी में आपको गंदगी कम ही दिखाई पड़ेगी। आदमी भी शहर में रहना-बसना चाहता है और किसी के पास घर में इतनी व्यवस्था नहीं है कि अपने शौचालय बना सके या ठीक से रह सके। तो वह नदी के किनारे चले जाते हैं। फिल्म में आप देखेंगे कि एक सीन शूट किया गया है जिसमें नदी के किनारे डस्ट को डंप किया जा रहा है और लोग उसपर कूद रहे हैं। मेरे मन में सवाल उठा कि यहां क्या कर रहा है कंटेनर और डंपर वाला? डंपर वाला सोच रहा है कि हमें ज्यादा दूर नहीं जाना पड़े, फ्यूल और टाइम की बचत हो इसलिए वह नदी में जाकर कचरा उड़ेल दे रहा है। वह तो जान रहा है कि पानी आएगा और बहा कर लेकर चला जाएगा, लेकिन उसे नहीं मालूम कि वह बहुत जहरीला केमिकल को नदी में डाल रहा है। इसका नतीजा यह है कि नदी में जो जीवों की प्राजितयां हैं, उनमें 25 प्रतिशत के करीब खत्म हो गईं। मैंने अपनी फिल्म में जिक्र किया है इस तथ्य का।

जितने भी पठारी एरिया हैं या कल-कारखाने हैं या ईंट भट्ठे हैं, छोटे-छोटे कारखाने हैं, उन सब जगहों पर बहुत तकलीफ है। इन स्थानों को मलबे से पाटा जा रहा है। रांची से लेकर घाटशिला तक देखा तो गंदगी बहुत बड़ी समस्या है। इसके बाद बहरागोड़ा में अचानक से नदी साफ हो गई है। जब हम लोग बहरागोड़ा में शूटिंग कर रहे थे तो कई ऐसे स्थानों पर गए, जहां मुझे लगा कि शायद हम लोग पहले हैं, जो यहां आए। वहां हम लोगों ने ड्रोन से शूटिंग की।

इसका सॉल्यूशन क्या है? स्वर्णरेखा तो सैकड़ों वर्ष पुरानी नदी है। इसको हम लोग पुराने रूप में लाना चाहें तो क्या करना होगा?

सबसे पहला काम ये करें कि आप स्वर्णरेखा को इसकी हालत पर छोड़ दीजिए। इंसानों को कुछ नहीं करना है। स्वर्णरेखा खुद को दुरुस्त कर लेगी। इसमें कचरा डंप नहीं करना है। कठोर कानून बनाना है, ताकि कचरा डंपिंग रुके। आपको ध्यान होगा, जापान में जब एटम बम गिरा तो उसका नतीजा आज तक देखने को मिलता है। अगले कितने साल तक यह असर दिखेगा, कोई नहीं जानता है। भोपाल गैस त्रासदी अभी तक लोग झेल रहे हैं। लोगों में वहां जो प्रॉब्लम है, उसे देख रहे हैं।

आपका यह कहना है कि स्वर्णरेखा को पुराने रूप में लाने के लिए उसे उसके हाल पर छोड़ देना चाहिए और अगर कोई उल्लंघन करता है उस पर कठोर करवाई कानूनी कार्रवाई की जाए?

जी, बिल्कुल!

आपकी फिल्म कितने दिनों में पूरी हो गई?

पूरी शूटिंग तकरीबन 8 महीने में पूरी हुई। लगभग चार लाख रुपये खर्च हुए। डॉक्यूमेंट्री बनाना एक शौक, एक जुनून था, इसलिए बनाया। चौमुखा (वह स्थान, जहां से स्वर्णरेखा नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है) में शूटिंग करना बहुत मुश्किल हुआ। इस दौरान कई लोगों से सलाह मशवरा किया। यह जो फिल्म है, इसे बनाने का इरादा मेरे दिमाग में तकरीबन 10 साल से था। लेकिन जब 2020-21 में लॉकडाउन लगा और सारा शहर बंद हुआ तो हम लोग बेकार हो गए। इस दौरान हमने सोचा कि ऐसे तो बैठेंगे नहीं। कुछ ना कुछ करेंगे। तब हम लोगों ने ट्रैफिक पास बना कर नदी के किनारे-किनारे बाइक-कार से घूमना शुरू किया। यह नदी जहां से निकली है रानी चुंआ, नगड़ी से और वेस्ट बंगाल में जहां समुद्र में गिरती है उस जगह का नाम है चौमुखा। चौमुखा का शाब्दिक अर्थ तो मिला नहीं और ना कोई बताने वाला मिला, क्योंकि वह एक छोटा सा जगह है जहां मछुआरे लोग मछली पकड़ने के लिए रहते हैं। वहां पर नदी की चौड़ाई इतनी है कि आपको इस कोने से उस कोने में दिखाई नहीं देगा। लोगों का कहना है कि वहां पर नदी की चौड़ाई लगभग 4 किलोमीटर है। चौमुखा का मतलब हो सकता है 4 किलोमीटर का फासला हो। उस जगह तक हम लोगों ने सफर किया तो इस दौरान हमें चांडिल से 10-20 किलोमीटर बाद तक गंदगी दिखाई दी। चांडिल के बाद नदी धीरे-धीरे पूरी तरह साफ हो गई। अगर नदी को हम उसके खुद के हाल पर छोड़ दें तो वह खुद ही साफ हो जाएगी। ■

स्वर्णरेखा यात्रा महोत्सव

खरकई और स्वर्णरेखा नदी के संगम-स्थल दोमुहानी में महोत्सव मनाते हुए स्वर्णरेखा महोत्सव और युगांतर भारती के पदाधिकारीगण।

पूर्व कुलपति बिरसा कृषि विश्वविद्यालय डॉ परमिंदर कौशल, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के झारखंड बिहार के प्रभारी निदेशक डॉ गोपाल शर्मा के साथ कृषि वैज्ञानिकों का दल रानीचुआं नगड़ी में स्वर्णरेखा महोत्सव कार्यक्रम में भाग लेता हुआ।

झारखंड राज प्रदूषण नियंत्रण परिषद के अध्यक्ष ए.के. सिंह रानीचुआं नगड़ी में स्वर्णरेखा महोत्सव कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

पूर्व मंत्री सुबोध कांत सहाय रानीचुआं नगड़ी में स्वर्णरेखा-महोत्सव कार्यक्रम मे भाग लेते हुए।

पर्यटन, युवा एवं खेलकूद मंत्रालय, झारखंड सरकार के प्रधान सचिव अरूण कुमार सिंह मुख्य अतिथि के रूप में महोत्सव में रानीचुआं नगड़ी में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करते हुए।

पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, झारखंड के तत्कालीन मुख्य सचिव सजल चक्रवर्ती, रांची जिला परिषद की अध्यक्ष सुंदरी तिर्की आदि रानीचुआं में स्वर्णरेखा महोत्सव कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए।

स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थल, रानीचुआं, नगड़ी में स्वर्णरेखा महोत्सव कार्यक्रम मे भाग लेते पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय और दामोदर बचाओ आंदोलन के अध्यक्ष तथा जमशेदपुर पूर्वी के तत्कालीन विधायक सरयू राय।

स्वर्णरेखा महोत्सव के पदाधिकारी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले बच्चों को पुरस्कृत करते हुए।

दामोदर बचाओ आंदोलन के अध्यक्ष और विधायक सरयू राय हटिया के पास नदी का निरीक्षण करते हुए।

श्री सरयू राय, अध्यक्ष, दामोदर बचाओ आंदोलन सह विधायक, जमशेदपुर विधानसभा नदी यात्रा का शुभारम्भ करते हुए स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थल रानीचुआं, नगड़ी में

दामोदर बचाओ आंदोलन के अध्यक्ष और विधायक सरयू राय दोमुहानी पर स्वर्णरेखा महोत्सव के दौरान।

खिजरी के तत्कालीन विधायक राजेश कच्छप कार्यक्रम में शिरकत करते हुए।

चतरा के पूर्व सांसद सुनील सिंह मेला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए।

झारखंड सरकार के तत्कालीन वित्तमंत्री डॉ. रामेश्वर उराँव, हटिया के तत्कालीन विधायक नवीन जायसवाल, हजारीबाग के तत्कालीन सांसद यदुनाथ पांडेय लोकसभा महोत्सव के दौरान मंचस्थ दिख रहे हैं।

पदमश्री मुकुन्द नायक और राज्यसभा के सांसद दीपक प्रकाश स्वर्णरेखा महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए।

पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय रानीचुआं में स्वर्णरेखा महोत्सव में शामिल हुए।

झारखंड विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. दिनेश उराँव रानीचुआं में स्वर्णरेखा महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए।

रानीचुआं, नगड़ी में स्वर्णरेखा महोत्सव के पदाधिकारीगण मेला की तैयारियों का जायजा लेते हुए।

झारखंड सरकार के तत्कालीन पर्यटन मंत्री अमर कुमार बाउरी, तत्कालीन कृषि निदेशक जयशंकर सिंह, हटिया के तत्कालीन विधायक नवीन जायसवाल कार्यक्रम में मौजूद रहे।

वर्ष 2005 में स्वर्णरेखा प्रदूषण अध्ययन यात्रा के दौरान स्वर्णरेखा नदी के उद्गमस्थल रानीचुआं, नगड़ी में अध्ययन दल।

तत्कालीन केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुण्डा और विधायक सरयू राय दोमुहानी में मंचस्थ।

स्वर्णरेखा नदी के जल और जलीय जीव-जन्तुओं की जांच के लिए नमूना एकत्र करते युगांतर भारती पर्यावरणीय प्रयोगशाला के वैज्ञानिक।

दामोदर बचाओ आंदोलन के अध्यक्ष और विधायक सरयू राय के नेतृत्व में स्वर्णरेखा प्रदूषण अध्ययन यात्रा दल की एक तस्वीर।

सुवर्णरेखा किनारे बसे इलाकों के विकास की योजना सरकार को समर्पित करेंगे : सरयू

नदियों को मां समझें, स्रोत नहीं : डॉ. मिश्र

संस्कृतियों का मिलन होता है नदियों का संगम

सुवर्णरेखा किनारे बसे इलाकों के विकास की योजना सरकार को समर्पित करेंगे : सरयू

वीणापाणि पाठशाला

सालों से सरयू राय निःशुल्क पढ़ा रहे हैं बच्चों को

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

साइंस कॉलेज, पटना से भौतिकी में मास्टर की डिग्री (एमएससी) करने वाले जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक श्री सरयू राय आज भी अध्ययन पर विशेष जोर देते हैं। रांची स्थित इनके आवास में इनकी लाइब्रेरी को देख कर आपको सहज अंदाजा हो जाएगा कि पर्यावरण, विज्ञान एवं तकनीकी, धर्म, अध्यात्म, दर्शन और साहित्य के विषयों में इनकी रुचि कैसी है। श्री राय बेशक आज एक राजनेता हैं लेकिन उनके मन में एक विद्यार्थी, एक शोधार्थी, एक पत्रकार और बड़े मायनों में एक अध्यापक आज भी जीवित है।

सरयू राय सदैव से मानते रहे हैं कि शिक्षा ग्रहण करना हर नागरिक का मूलभूत अधिकार है और यह सरकारों का कर्तव्य है कि हर नागरिक को उचित शिक्षा मुहैया कराई जाए। इसी भावना के साथ उन्होंने 13 जुलाई 2022 को वीणापाणि पाठशाला की नींव रखी। इस पाठशाला में कक्षा 8 से 10 तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इस पाठशाला में उन बच्चों को ही दाखिला मिलता है, जो निर्धन हैं। दरअसल, शिक्षा के माध्यम से उनकी मदद करने के वास्ते यह पाठशाला चलाई जा रही है।

वीणापाणि पाठशाला को सुचारू रूप से चलाने का कार्य स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट करती है। इस ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी अशोक गोयल बताते हैः श्री सरयू राय जी की यह सोच थी कि हम स्लम एरिया के उन बच्चों को पढ़ाएंगे, जो पढ़ना चाहते हों और जो फीस दे पानी की स्थिति में ना हों। हम लोग उनसे फीस नहीं लेंगे लेकिन पढ़ाएंगे मनोयोग से। अब तो दो साल में 320 बच्चों ने यहां से पढ़ाई कर ली है। पढ़ने वालों में लड़के और लड़कियां दोनों हैं।

वीणापाणि पाठशाला श्री सरयू राय के बारीडीह स्थित कार्यालय परिसर में चल रही है। यहां तीन सुसज्जित कमरे हैं। इन्हीं में कक्षा 8 से 10 तक की पढ़ाई होती है। पाठशाला में तीन योग्य, विद्वान एवं अनुभवी शिक्षक पढ़ाते हैं। श्री जगबंधु महतो, श्रीमती पिंकी पाण्डेय एवं सुश्री दीपिका शर्मा क्रमशः विज्ञान, अंग्रेजी एवं गणित पढ़ाते हैं। यहां संध्या 4 से 6 बजे तक अध्यापन कार्य किया जाता है ताकि बच्चों का स्कूल मिस न हो। विधायक के निजी सचिव श्री रिक्की केशरी ने बताया कि यहां प्रतिदिन प्रत्येक वर्ग के लिए संध्या 4 से 6 बजे के बीच 45 मिनट की समयावधि की दो कक्षाएं आयोजित की जाती हैं, जिसमे अंग्रेजी, गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई होती है। रविवार को अवकाश होता है। सभी विद्यार्थी प्रतिदिन हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक-एक पृष्ठ लिखकर प्रस्तुत करते हैं। प्रथम एक सप्ताह तक विद्यार्थियों के आधारभूत अवधारणा को संबन्धित वर्ग के स्तर तक लाने का प्रयास किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार यह अवधि बढ़ाई जाती है। प्रत्येक शनिवार को वस्तुनिष्ठ अथवा लघु उत्तरीय प्रश्नों द्वारा (पाठित पाठ से) 40 मिनट अवधि की जांच परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस पाठशाला में प्रत्येक सत्र त्रैमासिक है। एक वर्ग के एक समूह (अधिकतम 30 विद्यार्थी) को तीन माह के लिए ही कोचिंग की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। तीन माह के पश्चात अगले समूह को अवसर प्रदान किया जाता है। इस पाठशाला परिसर मे अनुशासन का पालन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। ■

AMALGAM STEEL

STEEL PLANT
GREEN PLANT

Amalgam Steel, one of the most futuristic companies, ensures a fast-forward India by relentlessly enhancing society and its quality of life in and around the villages we operate.

Corporate Office :
Avani Signature, Unit-401A, 4th Floor,
91A/1, Park Street, Kolkata-700016
T: +91 33 4088 4747

www.amalgamsteel.com

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

CALENDAR 2025

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

MAY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

JULY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

2025 के प्रमुख पर्व-त्यौहार

जनवरी

3	जनवरी 2025	पौष विनायक चतुर्थी
6	जनवरी 2025	गुरु गोबिंद सिंह जयंती
10	जनवरी 2025	पौष पुत्रदा एकादशी
11	जनवरी 2025	शनि प्रदोष व्रत
13	जनवरी 2025	पौष पूर्णिमा व्रत, महाकुंभ शुरू, लोहड़ी
14	जनवरी 2025	मकर संक्रांति, पोंगल, उत्तरायण
17	जनवरी 2025	सकट चौथ
25	जनवरी 2025	षटतिला एकादशी
27	जनवरी 2025	मासिक शिवरात्रि, प्रदोष व्रत
29	जनवरी 2025	माघी अमावस्या, मौनी अमावस्या

फरवरी

1	फरवरी 2025	विनायक चतुर्थी
2	फरवरी 2025	बसंत पंचमी
4	फरवरी 2025	नर्मदा जयंती
8	फरवरी 2025	जया एकादशी
9	फरवरी 2025	प्रदोष व्रत
12	फरवरी 2025	माघ पूर्णिमा व्रत, कुंभ संक्रांति, गुरु रविदास जयंती
13	फरवरी 2025	फाल्गुन माह शुरू
16	फरवरी 2025	द्विजप्रिय संकष्टी चतुर्थी
20	फरवरी 2025	शबरी जयंती
21	फरवरी 2025	जानकी जयंती
24	फरवरी 2025	विजया एकादशी
25	फरवरी 2025	प्रदोष व्रत
26	फरवरी 2025	महाशिवरात्रि
27	फरवरी 2025	फाल्गुन अमावस्या

मार्च

1	मार्च 2025	फुलैरा दूज, रामकृष्ण जयंती
3	मार्च 2025	विनायक चतुर्थी
10	मार्च 2025	आमलकी एकादशी
11	मार्च 2025	प्रदोष व्रत
13	मार्च 2025	होलिका दहन, फाल्गुन पूर्णिमा व्रत
14	मार्च 2025	होली, मीन संक्रांति, चंद्र ग्रहण
15	मार्च 2025	चैत्र माह शुरू
16	मार्च 2025	होली भाई दूज
17	मार्च 2025	भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी
19	मार्च 2025	रंग पंचमी
21	मार्च 2025	शीतला सप्तमी
22	मार्च 2025	शीतला अष्टमी, बसोडा
25	मार्च 2025	पापमोचिनी एकादशी
27	मार्च 2025	मासिक शिवरात्रि, प्रदोष व्रत
29	मार्च 2025	चैत्र अमावस्या, सूर्य ग्रहण
30	मार्च 2025	हिंदू नववर्ष शुरू, चैत्र नवरात्रि, गुड़ी पड़वा
31	मार्च 2025	गणगौर पूजा

अप्रैल

1	अप्रैल 2025	विनायक चतुर्थी
6	अप्रैल 2025	राम नवमी, रवि पुष्य योग
8	अप्रैल 2025	कामदा एकादशी
10	अप्रैल 2025	प्रदोष व्रत
12	अप्रैल 2025	हनुमान जयंती, चैत्र पूर्णिमा व्रत
13	अप्रैल 2025	वैशाख शुरू
14	अप्रैल 2025	मेष संक्रांति
16	अप्रैल 2025	विकट संकष्टी चतुर्थी
24	अप्रैल 2025	वरुथिनी एकादशी
25	अप्रैल 2025	प्रदोष व्रत
26	अप्रैल 2025	मासिक शिवरात्रि
27	अप्रैल 2025	वैशाख अमावस्या
29	अप्रैल 2025	परशुराम जयंती
30	अप्रैल 2025	अक्षय तृतीया

मई

1	मई 2025	विनायक चतुर्थी
2	मई 2025	शंकराचार्य जयंती, सूरदास जयंती, रामानुज जयंती
3	मई 2025	गंगा सप्तमी
5	मई 2025	सीता नवमी
8	मई 2025	मोहिनी एकादशी
9	मई 2025	प्रदोष व्रत
11	मई 2025	नरसिंह जयंती
12	मई 2025	बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा व्रत
13	मई 2025	नारद जयंती, ज्येष्ठ माह सुरू
15	मई 2025	वृषभ संक्रांति
16	मई 2025	एकदंत संकष्टी चतुर्थी
23	मई 2025	अपरा एकादशी
24	मई 2025	शनि प्रदोष व्रत
25	मई 2025	मासिक शिवरात्रि
26	मई 2025	वट सावित्री व्रत
27	मई 2025	शनि जयंती, ज्येष्ठ अमावस्या
30	मई 2025	विनायक चतुर्थी

जून

4	जून 2025	महेश नवमी
5	जून 2025	गंगा दशहरा
6	जून 2025	निर्जला एकादशी
8	जून 2025	प्रदोष व्रत
10	जून 2025	व्रत सावित्री पूर्णिमा व्रत
11	जून 2025	कबीरदास जयंती, ज्येष्ठ पूर्णिमा
12	जून 2025	आषाढ़ माह शुरू
14	जून 2025	कृष्ण पिंगल संकष्टी चतुर्थी
15	जून 2025	मिथुन संक्रांति
21	जून 2025	योगिनी एकादशी
23	जून 2025	प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि
25	जून 2025	आषाढ़ अमावस्या
26	जून 2025	आषाढ़ नवरात्रि
27	जून 2025	जगन्नाथ रथ यात्रा
28	जून 2025	विनायक चतुर्थी

जुलाई

6	जुलाई 2025	देवशयनी एकादशी
8	जुलाई 2025	प्रदोष व्रत
10	जुलाई 2025	कोकिला व्रत, गुरु पूर्णिमा व्रत, आषाढ़ पूर्णिमा
11	जुलाई 2025	सावन शुरू
14	जुलाई 2025	पहला सावन सोमवार, गजानन संकष्टी चतुर्थी
15	जुलाई 2025	पहला मंगला गौरी व्रत
16	जुलाई 2025	कर्क संक्रांति
21	जुलाई 2025	दूसरा सावन सोमवार, कामिक एकादशी
22	जुलाई 2025	प्रदोष व्रत
23	जुलाई 2025	सावन शिवरात्रि
24	जुलाई 2025	हरियाली अमावस्या, सावन अमावस्या, गुरु पुष्य योग
27	जुलाई 2025	हरियाली तीज
28	जुलाई 2025	सावन तीसरा सोमवार, विनायक चतुर्थी
29	जुलाई 2025	नाग पंचमी
30	जुलाई 2025	कल्कि जयंती
31	जुलाई 2025	तुलसीदास जयंती

अगस्त

4	अगस्त 2025	चौथा सावन सोमवार व्रत
5	अगस्त 2025	सावन पुत्रदा एकादशी
6	अगस्त 2025	प्रदोष व्रत
8	अगस्त 2025	हयग्रीव जयंती, वरलक्ष्मी व्रत
9	अगस्त 2025	रक्षाबंधन, सावन पूर्णिमा व्रत
10	अगस्त 2025	भाद्रपद शुरू
12	अगस्त 2025	कजरी तीज, बहुला चौथ, संकष्टी चतुर्थी
15	अगस्त 2025	जन्माष्टमी
16	अगस्त 2025	दही हांडी
17	अगस्त 2025	सिंह संक्रांति
19	अगस्त 2025	अजा एकादशी
20	अगस्त 2025	प्रदोष व्रत
21	अगस्त 2025	पर्यूषण पर्व शुरू, गुरु पुष्य योग
23	अगस्त 2025	भाद्रपद अमावस्या, पोला
25	अगस्त 2025	वराह जयंती
26	अगस्त 2025	हरतालिका तीज
27	अगस्त 2025	गणेश चतुर्थी
28	अगस्त 2025	ऋषि पंचमी
31	अगस्त 2025	राधा अष्टमी, महालक्ष्मी व्रत शुरू

सितंबर

3	सितंबर 2025	परिवर्तिनी एकादशी
4	सितंबर 2025	वामन जयंती
5	सितंबर 2025	ओणम, प्रदोष व्रत
6	सितंबर 2025	गणेश विसर्जन, अनंत चतुर्दशी
7	सितंबर 2025	भाद्रपद पूर्णिमा व्रत, चंद्र ग्रहण
8	सितंबर 2025	पितृ पक्ष शुरू
10	सितंबर 2025	विघ्नराज संकष्टी चतुर्थी
14	सितंबर 2025	जीवित्पुत्रिका व्रत
17	सितंबर 2025	एकादशी श्राद्ध, इंदिरा एकादशी, कन्या संक्रांति
18	सितंबर 2025	गुरु पुष्य योग
19	सितंबर 2025	मासिक शिवरात्रि, प्रदोष व्रत
21	सितंबर 2025	सर्व पितृ अमावस्या
22	सितंबर 2025	शारदीय नवरात्रि शुरू, घटस्थापना
25	सितंबर 2025	विनायक चतुर्थी

अक्टूबर

2	अक्टूबर 2025	दशहरा, विजयादशमी
3	अक्टूबर 2025	पापांकुशा एकादशी
4	अक्टूबर 2025	शनि प्रदोष व्रत
6	अक्टूबर 2025	कोजागर पूजा, शरद पूर्णिमा
7	अक्टूबर 2025	वाल्मीकि जयंती, मीराबाई जयंती
8	अक्टूबर 2025	कार्तिक माह शुरू
10	अक्टूबर 2025	करवा चौथ, संकष्टी चतुर्थी
13	अक्टूबर 2025	अहोई अष्टमी
17	अक्टूबर 2025	रमा एकादशी, तुला संक्रांति
18	अक्टूबर 2025	शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस, यम दीपम
20	अक्टूबर 2025	नरक चतुर्दशी, लक्ष्मी पूजा, दिवाली
21	अक्टूबर 2025	कार्तिक अमावस्या
22	अक्टूबर 2025	गोवर्धन पूजा
23	अक्टूबर 2025	भाई दूज
25	अक्टूबर 2025	विनायक चतुर्थी
27	अक्टूबर 2025	छठ पूजा
31	अक्टूबर 2025	अक्षय नवमी

नवंबर

1	नवंबर 2025	देवउठनी एकादशी
2	नवंबर 2025	तुलसी विवाह
3	नवंबर 2025	प्रदोष व्रत
4	नवंबर 2025	बैकुंठ चतुर्दशी, मणिकर्णिका स्नान
5	नवंबर 2025	देव दिवाली, गुरु नानक जयंती, कार्तिक पूर्णिमा
6	नवंबर 2025	मार्गशीर्ष माह शुरू
8	नवंबर 2025	गणाधिप संकष्टी चतुर्थी
12	नवंबर 2025	कालभैरव जयंती
15	नवंबर 2025	उत्पन्ना एकादशी
16	नवंबर 2025	वृश्चिक संक्रांति
17	नवंबर 2025	प्रदोष व्रत
18	नवंबर 2025	मासिक शिवरात्रि
20	नवंबर 2025	मार्गशीर्ष अमावस्या
24	नवंबर 2025	विनायक चतुर्थी
25	नवंबर 2025	विवाह पंचमी

दिसंबर

1	दिसंबर 2025	मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती
2	दिसंबर 2025	प्रदोष व्रत
4	दिसंबर 2025	अन्नपूर्णा जयंती, दत्तात्रेय जयंती, मार्गशीर्ष पूर्णिमा
5	दिसंबर 2025	पौष माह शुरू
7	दिसंबर 2025	अखुरथ संकष्टी चतुर्थी
15	दिसंबर 2025	सफला एकादशी
16	दिसंबर 2025	धनु संक्रांति
17	दिसंबर 2025	प्रदोष व्रत
19	दिसंबर 2025	पौष अमावस्या
24	दिसंबर 2025	विनायक चतुर्थी
27	दिसंबर 2025	गुरु गोविंद सिंह जयंती
30	दिसंबर 2025	पौष पुत्रदा एकादशी
31	दिसंबर 2025	बैकुंठ एकादशी

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

ADLN SUPERSTRUCTURE LLP

Jamshedpur

जमशेदपुर में स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट

मात्र 5 रु. में कराता है भरपेट भोजन

अशोक गोयल
मुख्य ट्रस्टी स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट, जमशेदपुर

आशुतोष राय
ट्रस्टी, स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट समाजसेवा के रुप में एक जाना पहचाना नाम है। कोविड-काल में इस ट्रस्ट ने जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय के नेतृत्व में लगभग 5 लाख लोगों को भोजन कराने का काम किया था। हजारों लोग ऐसे थे, जिन्हें कच्चा राशन भी दिया गया। अब यह ट्रस्ट एक ऐसा कार्य कर रहा है, जिसकी चर्चा सब लोग खुले मन से कर रहे हैं।

आम तौर पर आप अगर जमशेदपुर के ही रहने वाले हैं और एक कुल्हड़ में सड़क किनारे चाय भी पीते हैं तो आपको 10 से 15 रुपये और कहीं-कहीं 20 से 25 रुपये देने पड़ते हैं। सोचिए, एक कप चाय की कीमत आपको 10 से 25 रुपये तक चुकानी पड़ती है। लेकिन, स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट सप्ताह में छह दिन लोगों को भोजन कराता है और वह भी मात्र पांच रुपये लेकर। हर शनिवार को यहां खिचड़ी परोसी जाती है और वह भी निःशुल्क। रविवार को साफ़-सफ़ाई के लिए भोजनालय में अवकाश रहता है। प्रति दिन औसतन 100 से 150 लाभुक भोजन में शामिल होते हैं। श्री बालाजी अन्नपूर्णा मध्यान्ह भोजनालय चलता है बारीडीह में। बारीडीह में, जो पहले विधायक श्री राय का विधानसभा कार्यालय था, वहीं अभी भी यह मध्यान्ह भोजनालय चलता है। तीज-त्यौहार में यहां पूड़ी-सब्जी और एक मिठाई मिलती है। उसके लिए कोई अलग से शुल्क नहीं देना पड़ता।

श्री बालाजी अन्नपूर्णा मध्यान्ह भोजनालय के कर्ता-धर्ता श्री अशोक गोयल और श्री आशुतोष राय बताते हैं-यहां 100 से 150 लोग प्रतिदिन आते हैं। पांच रुपये का उनका कूपन कटता है। दोपहर में 1 बजे से 2 बजे तक भोजन का कार्यक्रम चलता है। कोई भी पांच रुपये का कूपन कटवाकर भोजन ग्रहण कर सकता है। हम लोग यह मानते हैं कि भोजन कराना पुण्य का काम है। भोजन कराने में हम लोग लाभ-हानि नहीं देखते। स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट की देख-रेख में यह भोजनालय चलता है। किसी दिन अगर भीड़ बढ़ जाती है तो हम लोग भोजनावधि बढ़ा देते हैं ताकि जो भी सज्जन आए हैं, वो भूखे पेट नहीं जाएं। यह भोजनालय श्री सरयू राय जी की दूरदृष्टि का परिणाम है। अब हम लोग इसमें थोड़ा परिवर्तन करने जा रहे हैं। अब यह भोजनालय मोबाइल हो जाएगा। वैन से हम लोग जरुरतमंद इलाकों में भोजन देंगे। ■

स्वर्णरेखा और दामोदर के उद्गम स्थलों को बड़ी पहचान मिलेः सरयू राय

15 दिसंबर को रांची में युगांतर भारती की आम सभा हुई संपन्न

युगांतर भारती के संरक्षक और जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय ने कहा है कि सरकार को दामोदर नद का उद्गम स्थल 'सलगी' और स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थल 'नगड़ी' का विशेष ध्यान देकर विकास करना चाहिए और सरकार को यह प्रयास करना चाहिए कि दोनों स्थानों का नाम भारतीय पर्यटन के मानचित्र पर दिखे।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

युगांतर भारती के वार्षिक आम सभा में सरयू राय ने कहा कि नगड़ी को आदर्श प्रशासनिक इकाई के रूप में विकसित करने की नितांत जरूरत है। उन्होंने नगड़ी और सलगी में सांस्कृतिक गतिविधियां बढ़ाने का भी सुझाव दिया। जमशेदपुर पश्चिम के विधायक ने कहा कि झारखण्ड में अब 32 प्रतिशत आबादी शहरों में रहने लगी है। उनका विरोध शहरों में लोगों के रहने से नहीं अपितु शहरों में बढ़ रही समस्याओं का सरकारी स्तर पर समाधान नहीं होने से है। उन्होंने कहा कि शहरों के कारण नदियाँ गंदी हो रही हैं। यह बात वह वर्षों से कहते चले आ रहे हैं और अब उनकी बातें सत्य साबित हो रही है। चाहे स्वर्णरेखा नदी हो अथवा खरकई या फिर हरमू। इन सबकी दशा खराब हो गई है।

सरयू राय ने युगांतार भारती के अध्यक्ष, अंशुल शरण को सुझाव दिया कि युगांतर न्यूज यू-ट्यूब चैनल पर ''पर्यावरण पाठशाला'' नामक साप्ताहिक कार्यक्रम नववर्ष के बाद आरंभ करायें। श्री राय ने कहा कि युगांतर भारती एक अम्ब्रैला संस्था के रूप में काम करें और

अपने लक्ष्यों को हासिल करे। उन्होंने इस बात से सहमति जतायी कि अब संस्था से नौजवानों को बड़े पैमाने पर जोड़ने की जरूरत है, ताकि नदी संरक्षण के अलावे पर्यावरण के अन्य तथ्यों पर भी सकारात्मक और गंभीरतापूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। इसके पूर्व युगांतर भारती के अध्यक्ष अंशुल शरण ने संगठन की अब तक की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला और आने वाले वर्ष में क्या कार्य किये जाने शेष है, इस संबंध में चर्चा की। उन्होंने कहा कि युगांतर भारती और स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास परिषद के बैनर तले पर्यावरण, भोजन, स्वर्णरेखा महोत्सव, दामोदर महोत्सव, पर्यावरण दिवस जैसे अनेक बेंच मार्क वाले कार्य वर्ष 2024 में किये हैं। श्री शरण ने 2025 की कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि नगड़ी, हुंडरू, जोन्हा, मूरी, चांडिल और जमशेदपुर में 12 से 14 जनवरी के बीच स्वर्णरेखा महोत्सव का आयोजन होगा। 22 मार्च को जल दिवस, 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस, 22 मई को जैव विविधता दिवस और 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस एवं दामोदर महोत्सव (गंगा दशहरा) का एक साथ आयोजन होगा। उन्होंने इन सभी आयोजनों की सफलता के लिए लोगों से सुझाव भी मांगे।

सरयू राय ने युगांतार भारती के अध्यक्ष, अंशुल शरण को सुझाव दिया कि युगांतर न्यूज यू-ट्यूब चैनल पर "पर्यावरण पाठशाला" नामक साप्ताहिक कार्यक्रम नववर्ष के बाद आरंभ करायें। श्री राय ने कहा कि युगांतर भारती एक अम्ब्रैला संस्था के रूप में काम करें और अपने लक्ष्यों को हासिल करे। उन्होंने इस बात से सहमति जतायी कि अब संस्था से नौजवानों को बड़े पैमाने पर जोड़ने की जरूरत है, ताकि नदी संरक्षण के अलावे पर्यावरण के अन्य तथ्यों पर भी सकारात्मक और गंभीरतापूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है।

सेवानिवृत पुलिस उपमहानिरीक्षक संजय रंजन सिंह ने कहा कि हमने नदियों को मार दिया है और अगर इन्हें दोबारा जीवित नहीं किया गया तो इंसानी सभ्यता को लोप हो जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि हरमू पहले नदी हुआ करती थी, जिसे मारकर हमने सीवेज बना दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए हमें स्कूलों तक जाना होगा और स्कूलों से ही नौजवानों का आंदोलन आगे बढ़ेगा।

ख्यातिनाम पर्यावरणविद् प्रो. एम.के. जमुआर ने कहा कि नये लोगों को जोड़ना समय की मांग है। दस्तावेजीकरण को और बढ़ावा देना होगा। वायु प्रदूषण को लेकर नया आंदोलन छेड़ने की जरूरत है। इसके साथ ही उन्होंने युगांतर भारती को स्कूलों में 'इको क्लब' बनाने की जरूरत को भी रेखांकित किया। स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी आशुतोष राय ने जमशेदपुर में ट्रस्ट की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जमशेदपुर में स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट कई कार्य कर रहा है। इसके तहत वीणापाणि पाठशाला में निर्धन लेकिन प्रतिभावान बच्चों को जहां मुफ्त में कोचिंग दी जा रही है, वहीं दूसरी तरफ पांच रुपये में लोगों को भरपेट भोजन भी मुहैया कराया जा रहा है। प्रतिदिन 125 से 150 के बीच लोग भोजन ग्रहण कर रहे हैं। उन्होंने कोरोना काल में ट्रस्ट द्वारा भोजन वितरण समेत अनेक कार्यों की भी जानकारी वार्षिक आम सभा में दी।

युगांतर भारती से जुड़े प्रवीण सिंह ने कहा कि दामोदर को मलबा गिराने का हब बना दिया गया था। जब सरयू राय जी ने दामोदर बचाओ मुहिम शुरु की तो संसद तक इसकी आवाज गई। फलतः दामोदर में मलबा गिराने का काम रुका। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि अब नगरीय मलबा दामोदर में धड़ल्ले के साथ गिराया जा रहा है जिससे दामोदर के सेहत पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इसे बंद करने की सख्त जरूरत है। सामाजिक कार्यकर्ता धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि यह सरयू राय जी के प्रयासों का ही सुफल है कि दामोदर के जिस पानी को पहले पशु तक नहीं पीते थे, उसे अब इंसान पी रहे हैं। यानी, जो आंदोलन श्री सरयू राय ने शुरु किया था, वह अपने परिणाम तक पहुंच चुका है। उन्होंने हरमू को साफ करने पर विशेष जोर दिया।

युगांतर भारती से लंबे अर्से से जुड़े रहे आईटी एक्सपर्ट श्री राकेश माथुर ने लोगों को बताया कि बहुत जल्द वह एक नई वेबसाइट लांच करने जा रहे हैं। संभवतः जनवरी में यह वेबसाइट ऑनलाइन हो जाएगी। यह वेबसाइट नई तकनीकी पर बनाई जा रही है और इसमें पर्यावरण से जुड़ी समस्त जानकारियां होंगी।

युगांतर भारती के पुराने सिपाही वीरेंद्र सिंह ने आम सभा में कहा कि नेता तो बहुत हैं झारखंड में पर दामोदर की सुधि लेने वाले सिर्फ सरयू राय ही हैं। जब उन्होंने दामोदर की दशा को सुधारने का निर्णय लिया, तब जाकर दामोदर नद साफ हो सका। इसके पहले किसी का ध्यान दामोदर की गंदगी पर नहीं थी।

युगांतर भारती के स्थापना काल से जुड़े मुकेश पांडेय ने कहा कि युगांतर भारती नित्य बेहतरीन कार्य कर रहा है। हम लोग श्री

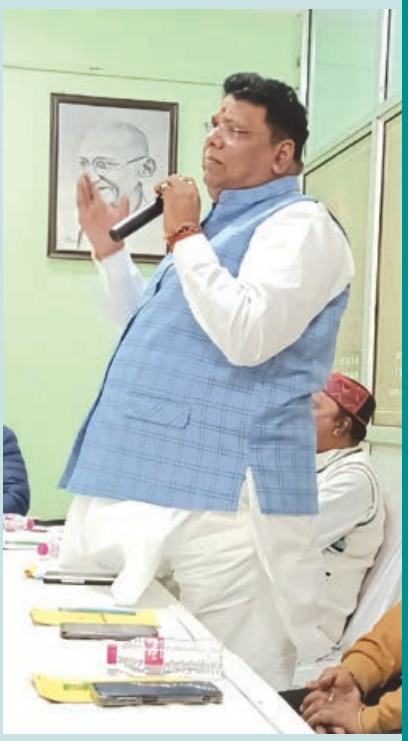

सरयू राय जी के फॉलोअर हैं। वह जब, जैसा आदेश करेंगे, हम लोग करने के लिए कृतसंकल्पित हैं। पत्रकार आनंद कुमार ने कहा कि युगांतर भारती के मीडिया को एक छाते के नीचे काम करना चाहिए। एक ऐसा फार्मेट बने जिसमें युगांतर प्रकृति पत्रिका, वेबसाइट, यूट्यूब, सोशल मीडिया आदि सब एक छाते के नीचे हों।

चूड़ामणि यादव ने कहा कि संस्था का जितना प्रचार-प्रसार होना चाहिए, उतना हुआ नहीं। इसका और ज्यादा प्रचार-प्रसार करने की जरूरत है।

प्रख्यात चित्रकार दिनेश सिंह ने कहा कि युगांतर भारती ने कला जगत के लोगों की समय-समय पर बहुत मदद की है। मैं युगांतर भारती का शुक्रगुजार हूं।

दामोदर बचाओ आंदोलन से जुड़े रहे शंकर प्रसाद ने कहा कि दामोदर को साफ करने का सरयू राय जी ने जो आंदोलन चलाया था, वह तो सफल हो गया। अब बारी है मानवीय प्रदूषण से दामोदर एवं अन्य नदियों को मुक्त कराने की।

सुरेंद्र प्रसाद सिन्हा ने कहा कि चास में फिर से दामोदर गंदा हो गया है। उद्योगों का कचरा दामोदर में सीधे डंप किया जा रहा है। इस पर काम करने की जरूरत है।

शिव कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि गरगा नदी प्रदूषित कर रही है दामोदर को। कहा गया था कि सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाया जाएगा लेकिन अब तक यह लगाया नहीं गया है।

रांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. ज्योति प्रकाश ने कहा कि हमें अब अपना दायरा बढ़ाना होगा। अब हमें खाद्य सुरक्षा के मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना होगा। हम लोग वायु प्रदूषण, पेयजल पर भी डिस्कस कर सकते हैं। दामोदर पर हम लोगों ने बेहतर काम किया। अब अन्य क्षेत्रों पर भी हमें काम करना चाहिए।

सुबोध श्रीवास्तव ने कहा कि जमशेदपुर में प्रदूषण नापने वाली मसीन नहीं है। युगांतर भारती को इस दिशा में सरकार के साथ मिल कर एक मशीन जमशेदपुर में लगवाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि अब चूल्हा-पानी के लोगों का लिविंग स्टैंडर्ड बढ़ गया है। यह सरयू राय जी के कारण संभव हो सका। युगांतर भारती से जुड़े शीतल मुंडा ने कहा कि युगांतर भारती की प्रयोगशाला अब अत्याधुनिक हो गई है।

कमल भगत ने कहा कि स्वर्णरेखा, हरमू, दामोदर के जो उद्गम स्थल हैं, उन सभी को पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने की जरूरत है।

धनबाद निवासी उदय सिंह ने कहा कि अब धनबाद में भी हमें काम करने की जरूरत है। खास कर वायु प्रदूषण के मामले में।

धन्यवाद ज्ञापन स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी अशोक गोयल ने किया। इस वार्षिक आम सभा में राज्य के विभिन्न जिलों से पर्यावरणविद्, विभिन्न पर्यावरणीय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे, जिनमें मुख्य रूप से युगांतर भारती के सचिव आशीष शीतल, डॉ. ज्योति प्रकाश, सामाजिक कार्यकर्ता, धर्मेन्द्र तिवारी, गणेश रेड्डी, तपेश्वर केशरी, पत्रकार आनन्द कुमार, रामानुज शेखर, दिनेश सिंह, गोविन्द मेवाड़, सुबोध श्रीवास्तव, राकेश माथुर, अभिषेक सिंह, शत्रुघ्न ओझा, रमाकांत यादव, बिरेन्द्र सिंह, मुकेश पाण्डेय, रितेश झा, प्रवीण सिंह, सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, समीर सिंह, ओम प्रकाश सिंह, बालकृष्णा सिंह, कमल भगत, श्री उदय सिंह, मनोज सिंह आदि उपस्थित थे। ■

• गौरैया •

घर-आंगन में फुदकने वाली गोरैया गई कहां?

कभी घरों की छत और आंगन में फुदकने वाली गोरैया अब यदा-कदा ही नजर आती है। आंकड़ों की मानें, तो गोरैया की संख्या में करीब 60 से 80% तक कमी आयी है। इसके संरक्षण के लिए प्रत्येक वर्ष 20 मार्च को विश्व गोरैया दिवस मनाया जाता है। हम भी छोटे प्रयास से घर-आंगन में गोरैया की चहचहाहट वापस ला सकते हैं।

■ राजमणि सिंह

घोंसला तैयार करने में जुटी प्रियंका झा

कोल्हान में गोरैया के संरक्षण के लिए कई पक्षी प्रेमी काम कर रहे हैं। ऐसा ही एक नाम है। पटमदा प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल की प्राचार्य प्रियंका झा का। प्रियंका गोरैया संरक्षण के लिए पिछले दो वर्षों से काम कर रही हैं। बांस की कमची, सूतली और नारियल के रेशों से 5000 घोंसला तैयार कराने में जुटी हैं। घोंसला तैयार होने के बाद सोसाइटी में लोगों से संपर्क कर घोंसला लगाने का अभियान चलाया जायेगा।

बच्चों को देती है प्रशिक्षण

प्रियंका स्कूल के बच्चों को पेड़ की पत्तियों, बोरा और नारियल के छिलके से घोंसला बनाने का प्रशिक्षण देती हैं। बच्चों द्वारा तैयार किये गये घोंसलों को आस-पास के घरों व पेड़ों पर लटका देती हैं। इसमें उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली है। कई घोंसलों में चिड़िया आकर रहने भी लगी हैं और अंडे भी दिये हैं। प्रियंका झा ने बताया कि नेस्ट मैन ऑफ इंडिया राजेश खत्री से विद्यालय के बच्चों को कृत्रिम घोंसला बनाने का प्रशिक्षण दिलवाने के लिए ऑनलाइन वर्कशॉप कराया जा रहा है। डीएफओ ममता प्रियदर्शी ने स्कूल परिसर में बर्ड मॉनिटरिंग और नर्सरी तैयार कराने की स्वीकृति दी है, जिसे जल्द ही पूरा कराने की प्रक्रिया चल रही है।

प्रदूषण व खेतों में अत्यधिक कीटनाशक का प्रयोग गौरैयों के लिए घातक

चांडिल के सुखसारी निवासी राहुल प्रसाद जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (जेडएसआई) में सत्र 2017-20 तक फाउनल डायवर्सिटी ऑफ दलमा वाइल्ड लाइफ सेंचुरी एंड सारंडा फॉरेस्ट डिवीजन झारखंड, इंडिया प्रोजेक्ट के तहत बतौर रिसर्च स्कॉलर काम कर चुके हैं। राहुल बताते हैं कि मुंबई नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) के प्रसिद्ध पक्षी वैज्ञानिक विभु प्रकाश के अनुसार, इंडिया में हाउस स्पैरो की संख्या में करीब 80 प्रतिशत तक की कमी देखी जा रही है। अगर इसी तरह यह सिलसिला चलता रहा, तो हाउस स्पैरो की प्रजाति इंटरनेशनल यूनियन फॉर कनवर्सन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) की रेड लिस्ट में आ जायेगी।

गौरैया की आबादी में गिरावट के कारणों में तेजी से शहरीकरण, घटते पारिस्थितिक संसाधनों, प्रदूषण के उच्च स्तर और माइक्रोवेव टावरों से उत्सर्जन के कारण निवास स्थान का नुकसान है।

गोरैया पर आए संकट की प्रमुख वजह यह है

गोरैया की आबादी में गिरावट के कारणों में तेजी से शहरीकरण, घटते पारिस्थितिक संसाधनों, प्रदूषण के उच्च स्तर और माइक्रोवेव टावरों से उत्सर्जन के कारण निवास स्थान का नुकसान है। पारंपरिक प्रजनन स्थलों में कमी प्रजनन के मौसम और उपयुक्त घोंसले के स्थानों के दौरान उपयुक्त भोजन की कमी भी कारण है।

ऐसे करें गौरैयों के पुनर्वास में मदद

- अपने फ्लैट एवं कंक्रीट के घरों में कृत्रिम घोंसला तैयार कर लगायें।
- घोंसलों के आसपास दाना और पानी की व्यवस्था करें।
- सूरजमुखी के बीज, सफेद बाजरा और मक्का बिखेर कर रख दें
- खेतों में कीटनाशक का उपयोग कम करें। ■

• साक्षात्कार •

गोरैया को दे दें उसका तिनका, वह आपको दिखने लगेगी

-प्रियंका झा

प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल, माछा, पटमदा की प्रिंसिपल प्रियंका झा पर्यावरण को लेकर खासी सजग रहती हैं। उन्होंने स्वर्णरेखा की गंदगी को काफी पास से देखा है और नगड़ी से लेकर बंगाल की खाड़ी तक वह स्वर्णरेखा के साथ चली हैं। उन्होंने देखा है कि नदी कहां साफ है, कहां प्रदूषित हो रही है। पर्यावरण में काफी रुचि होने के नाते उन्होंने कम होते गोरैया के बारे में भी काफी अध्ययन किया है। गोरैया ही नहीं, उन्होंने कबूतर, मैना आदि के बारे में चीजों को समझा है। गोरैया अगर कम हुई हैं तो क्या कारण रहे, यह प्रियंका को पता है। गोरैया और स्वर्णरेखा नदी के क्षेत्र में उनकी के नाते युगांतर प्रकृति के *प्रधान संपादक* **आनंद सिंह** ने **प्रियंका झा** से बातचीत की। प्रस्तुत हैं साक्षात्कार के खास अंशः-

गोरैया और मैना, ये अब बेहद कम दिखते हैं। क्या कारण मानती हैं आप?

मैना एक आम पक्षी है। हमारे घरेलू पक्षी के रूप में हम लोग उसे जानते हैं। हाल-फिलहाल इसकी संख्या बहुत ही कम होती जा रही है। पहले हमारे आंगन में गोरैया और घरेलू पक्षी आते थे, लेकिन अब संख्या कम होती जा रही है। बाद में पता चला कि क्यों ना इसका संरक्षण किया जाये? क्यों संख्या कम हो रही है? फिर मैंने अपने स्कूल के बच्चों के बीच में अपनी बातें शेयर की। गांव में हालांकि अभी भी इसकी संख्या देखी जाती है, क्योंकि वहां का अपना सिस्टम है। आंगन है तो वहां पर अभी भी हाथ धोने का प्रचलन है। वहां नाली होती है। नाली में जो कुछ भी मनुष्यों द्वारा छोड़ा हुआ अपशिष्ट होता है, वह सब वहां पर पास होता है। वह उसको चुनती है, खाती है। यह उन्हें अट्रैक्ट करता है। लेकिन शहर में वॉश बेसिन है। पाइप सिस्टम है। तो सारी चीजें पाइप के माध्यम से कहीं और चली जाती हैं। फिर हमने थोड़ी नई चीजें अप्लाई की। हमारे गांव में बांस की खेती बहुतायत में होती है। हम लोगों ने बांस का पतला-पतला जैसे सूप या कच्चा सूत होता है, उसे बांधकर खाका तैयार किया और उस खाके के अंदर को लपेट कर उसे नेचुरल तरीके से तैयार किया ताकि गोरैया को लगे कि यह उसका ही घर है।

गोरैया के लिए घर क्यों?

घर बनाने का कारण था। जैसे-जैसे मल्टीस्टोरीज बिल्डिंग, बड़े-बड़े फ्लैट्स नजर आ रहे हैं तो जंगल की कटाई भी हो रही है। जंगल कट जाने के कारण उनके पास में तिनका ही नहीं रहता है। तिनका नहीं रहने के कारण गोरैया घर नहीं बना पा रही है। इसके बाद हमने स्कूल के बच्चों संग मिलकर गौरेया को उसका घर प्रोवाइड करने के लिए बच्चों के द्वारा बांस का खाका तैयार करके पेड़ पर आर्टिफिशियल घोसला बनाकर विद्यालय में पेड़ों पर टांगा। हम लोगों का प्रयास था कि पक्षी यहां आयें और रहें, लेकिन कुछ नहीं हुआ। फिर हमने गौरेया को अट्रैक्ट करने के लिए हरसंभव प्रयास किया। लगभग 6 महीने के बाद वहां पर एक जोड़ा आकर रहने लगा। फिर मुझे पता चला कि हां, अगर हम लोग आर्टिफिशियल घोंसला बनाकर उनको देते हैं तो वह इसमें आकर रह सकते हैं।

गोरैया ही नहीं, सभी पक्षियों के लिए रेडिएशन खतरनाक है। हम मानव जाति के लिए भी रेडिएशन काफी खतरनाक है। जब एक पक्षी की कोशिका से हमारी कोशिका ज्यादा विकसित है और जब हम लोग इसके प्रभाव से बच नहीं पाते तो खैर वह छोटी सी चिड़िया कहां से बच पायेगी? हवा में जो रेडिएशन बॉडी को इफेक्ट करता है इसका भी एक कारण है कि गोरैया या अन्य पक्षियों की संख्या कम हो रही है। रेडियशन को चिड़िया सह नहीं पाती है।

शहर में बहुत सारे 4जी, 5जी के टॉवर लगे हुए हैं। क्या इन टॉवरों से निकलने वाला रेडिएशन गोरैया के लिए घातक है?

गोरैया ही नहीं, सभी पक्षियों के लिए रेडिएशन खतरनाक है। हम मानव जाति के लिए भी रेडिएशन काफी खतरनाक है। जब एक पक्षी की कोशिका से हमारी कोशिका ज्यादा विकसित है और जब हम लोग इसके प्रभाव से बच नहीं पाते तो खैर वह छोटी सी चिड़िया कहां से बच पायेगी? हवा में जो रेडिएशन बॉडी को इफेक्ट करता है इसका भी एक कारण है कि गोरैया या अन्य पक्षियों की संख्या कम हो रही है। रेडियशन को चिड़िया सह नहीं पाती है। वह इतनी मजबूत नहीं होती।

सवालः क्या गोरैया वह मानव से डरती है?

डरना उसका नेचर में नहीं है। अगर वह डरती तो मनुष्य के करीब नहीं आती।

आपने स्वर्णरेखा पर शोध किया है। आपने अभी नदी की हालत देखी ही होगी। खास कर जमशेदपुर में। महाभारत कालीन स्वर्णरेखा नदी अपने पुराने स्वरूप में आये, इसके लिए हमें क्या करना चाहिए और इसे हम पुराने स्वरूप में कैसे पा सकते हैं?

हमारी नदी हमारी धरोहर है और मेरा पीएचडी भी नदी के ऊपर ही है। इसका श्रेय मैं माननीय विधायक श्री सरयू राय जी को देना चाहती हूं। उन्होंने दामोदर यात्रा शुरु की थी जिससे मैं 2007 में जुड़ी और इसके बाद फिर नदी से जुड़ी। धीरे-धीरे नदी के करीब जाने से मुझे यह पता चला कि किसी एक इंसान के थोड़े से प्रयास से भी नदी संरक्षित हो सकती है, लेकिन प्रयासरत सभी रहे हैं। नगड़ी में नदी की स्थिति थोड़ी अच्छी है, क्योंकि इसका उद्गम स्थान है। उत्पत्ति का स्थान हमेशा पवित्र ही होता है लेकिन जैसे-जैसे वह बहती हुई बंगाल की खाड़ी तक बढ़ती है, इस पूरे रास्ते के दौरान उसे काफी कठिनाई होती है। जिस तरह हमलोग जीवन यात्रा पर निकलते हैं, शुरूआत सभी की अच्छी होती है लेकिन कितनी कठिनाइयों के साथ अंत की ओर जाते हैं। इसी तरह का बीच-बीच में नदी का कम होना, उसकी चौड़ाई कम होते जाना, उसे मौत की तरफ लेकर जा रही है। इसके जिम्मेदार हम लोग ही हैं जो इसे मौत की तरफ लेकर जा रहे हैं। अगर हम इसे संभाल कर नहीं रखेंगे तो स्वर्णरेखा, जिसके बालू और कण-कण में स्वर्ण है, खत्म हो जाएगी। यह झारखंड की अपनी नदी है। इसमें नामकुम से गंदगी शुरू हो जाती है। नामकुम में औद्योगिक इकाईयां भी बहुत सारे हैं। जैसे-जैसे नदी आदित्यपुर में घुसती है, प्रदूषण अपने चरम पर पहुंच जाता है।

आदित्यपुर में हैवी मेटल्स, लुब्रिकेंट, केमिकल आदि नदी में प्रवाहित किए जाते हैं। जमशेदपुर में स्थिति और भी गंभीर होती जा रही है। हालांकि, बहरागोड़ा पहुंचते ही नदी का पानी साफ हो जाता है। इंडस्ट्री, लुब्रिकेंट, केमिकल्स, हैवी मेटल्स आदि नदी को सिकोड़ रहे हैं। पश्चिम बंगाल में मिदनापुर की ओर आप अगर जाएंगे तो वहां की पृष्ठभूमि ग्रामीण है। वहां इंडस्ट्री नहीं है। स्वर्णरेखा थोड़ा खुद को वहां एक्सपेंड करती है। फिर सिकुड़ती हुई बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है। नामकुम से लेकर बराज तक नदी बहुत ही ज्यादा सिकुड़ गई है। हैवी मेटल्स जैसे ही नदी में प्रवेश करते हैं, हमारे एक्वेटिक सिस्टम को पूरी तरह ध्वस्त कर देते हैं। जो हैवी मेटल है, वह बॉयो एकम्यूलेशन के माध्यम से मछलियों में, एक्वेटिक एनिमल्स में, एक्वेटिक प्लांट्स में किसी भी माध्यम से वह चला जाता है। ये उसकी लाइफ चेन में घुस जा रहा है। उसे अगर हम लोग किसी भी रूप, किसी भी माध्यम से इंटैक्ट कर रहे हैं तो वह डायरेक्टली हमारे बॉडी में भी आ रही है। इसका सबसे ज्यादा इफेक्ट होता है लीवर और किडनी पर, जो कि मानव शरीर का फिल्ट्रेशन पॉइंट होता है। जब मैंने मछली के लिवर का स्टडी किया तो बहुत सारे स्पॉट सेल नजर आए। हैवी मेटल्स मछली के बॉडी में चले गये और जब हम उसे ग्रहण करते हैं तो वह ह्यूमन बॉडी में भी चला जाता है। यह एक ऐसा केमिकल है, जो हमारे डीएनए को डैमेज करता है। यही कैंसर का कारण बन रहा है। कहीं ना कहीं हम लोग अपने धरोहर के साथ ही नहीं खेल रहे बल्कि अपनी जिंदगी के साथ भी खेल रहे हैं।

सवालः अब इसका समाधान क्या है?

इसका समाधान है कि सरकार कड़े कानून बनाए। अगर आप कोई कंपनी आप खोल रहे हैं तो इसके लिये पर्यचावरण का प्रमाण पत्र लेना जरूरी होता है। यह प्रमाणपत्र लोग कैसे भी ले लेते हैं। लेकिन जो उसका मापदंड है उसे फॉलो नहीं करा पाते। अगर सरकार इसे सख्ती से लागू करे और कहे कि यह आपका पैरामीटर है, आप इसे फॉलो नहीं कर रहे हैं तो आपको एनओसी नहीं मिलेगा, आपका प्रमाणपत्र रोक दिया जाएगा तो बात बन सकती है। हालांकि कुछ कंपनियां करती भी हैं। कुछ ऐसा एनवायरमेंट बोर्ड वाले भी करते हैं लेकिन सरकार को इसे सख्ती से लागू करना होगा। अन्यथा लाइसेंस रद्द कर देना चाहिए। इसके साथ ही जहां पर भी कंपनियां डायरेक्ट सीवरेज को नदी में गिराते हैं, वहां पर एक ऐसा फिल्टर लाना चाहिए जहां से वह नदी में न जाए। वह उस पानी को वहीं पर स्टॉक कर दे। ■

'इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट-2023' जारी

देश में 1445 वर्ग किमी बढ़ गया जंगल और वृक्षों का दायरा

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क और एजेंसियां

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंदर यादव ने उत्तराखंड के देहरादून स्थित वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में 'इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट-2023' (आईएसएफआर-2023) जारी की। रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2021 की तुलना में देश के कुल वन और वृक्ष आवरण में 1445 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। यादव ने वैज्ञानिकों तथा संबंधित अधिकारियों का आह्वान किया कि वे एडवांस टेक्नोलॉजी का उपयोग करके एफएसआई द्वारा प्रदान की जाने वाली वास्तविक समय की अग्नि चेतावनी और वन अग्नि सेवाओं का समुचित उपयोग करें। उल्लेखनीय है कि यह रिपोर्ट (आईएसएफआर) 1987 से द्विवार्षिक आधार पर भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) द्वारा प्रस्तुत की जाती है। एफएसआई रिमोट सेंसिंग उपग्रह डेटा और क्षेत्र आधारित राष्ट्रीय वन सूची (एनएफआई) की व्याख्या के आधार पर, देश के वन और वृक्ष संसाधनों का गहन

JHARKHAND

Table 10.11.4 Division-wise Forest Cover in Jharkhand

(km²)

Division	Digitized Division Boundary Area#	2023 Assessment				% of Digitized Division Boundary Area	Change w.r.t 2021 Raster based*	Scrub
		Very Dense Forest	Mod Dense Forest	Open Forest	Total			
Bokaro	2,686.78	42.01	195.35	250.61	487.97	18.16	2.14	27.29
Chaibasa	2,846.32	1.80	185.70	471.67	659.17	23.16	4.50	11.13
Chatra North	1,477.06	58.29	375.46	291.14	725.09	49.25	19.14	11.54
Chatra South	1,925.06	128.95	531.85	578.57	839.37	43.60	-0.48	9.55
Deoghar	2,468.45	0.00	13.73	190.19	203.92	8.26	0.44	12.56
Dhalbhum	3,253.38	56.80	490.93	379.34	907.07	27.88	-3.66	18.09
Dhanbad	2,021.38	0.00	43.30	167.19	210.49	10.40	0.76	15.57
Dumka	3,755.27	0.02	253.61	329.33	582.96	15.61	8.95	34.82
Elephant Sanctuary Dalma	411.66	27.82	132.19	65.52	225.53	54.74	0.00	4.01
Garhwa North	2,445.14	39.89	54.40	417.03	511.32	20.91	11.58	35.59
Garhwa South	1,487.37	35.26	266.75	485.72	787.73	52.96	2.44	5.15
Giridih East	3,089.68	76.05	275.48	351.87	703.40	22.77	-0.52	16.16
Giridih West	1,205.94	0.67	24.64	48.43	73.14	6.06	-0.47	8.58
Godda	2,225.51	12.16	262.91	132.79	407.86	18.34	1.55	13.39
Gumla	4,205.24	191.82	330.86	402.33	925.01	22.01	2.19	6.97
Hazaribag East	1,717.11	85.72	169.88	277.29	532.89	31.03	-0.06	4.00
Hazaribag West	2,768.79	116.67	240.66	595.39	952.72	34.41	-0.79	18.04
Hazaribag WL	1,019.45	135.06	340.23	247.50	722.79	70.90	-1.24	3.75
Jamtara	1,794.22	0.00	20.11	85.27	105.38	5.87	0.72	4.63
Khunti	3,945.56	80.83	447.50	690.59	1,218.72	30.91	0.49	16.72
Koderma	1,439.24	53.49	270.87	212.98	537.34	37.33	-2.11	6.42
Kolhan	1,125.00	34.28	329.12	372.64	736.04	65.54	3.01	13.03
Latehar	2,700.50	160.66	745.50	577.58	1,283.54	47.55	-3.07	6.31
Lohardaga	1,878.08	225.99	345.49	147.30	718.78	38.27	0.67	4.78
Medini Nagar	4,302.48	65.50	521.59	571.45	1,158.54	26.93	2.56	80.73
Pakur	1,806.55	2.84	176.82	117.88	297.54	16.47	1.06	22.06
Porahat	2,277.59	134.69	454.56	586.50	1,175.75	51.65	2.28	14.72
PTR Buffer	1,168.51	305.40	329.51	190.56	825.07	70.44	0.00	0.93
PTR Core	807.14	129.27	586.28	97.49	813.04	75.95	0.00	0.00
Ramgarh	1,650.58	35.87	124.98	250.84	411.69	25.25	1.09	16.46
Ranchi	3,681.35	57.20	258.41	544.16	859.77	23.35	2.27	13.14
Ranchi WL	587.42	7.40	67.63	91.84	166.87	28.41	0.05	1.09
Sahibganj	2,021.65	19.72	267.67	317.45	604.84	29.92	0.16	58.45
Saraikela	2,513.85	11.62	178.69	330.63	521.14	20.73	2.45	18.35
Saranda	952.24	297.36	379.51	124.00	801.27	84.15	-0.22	4.82
Simdega	3,755.14	22.03	357.17	877.95	1,257.15	33.95	-5.70	17.57
Area which Does not fall in any division	364.91	4.61	12.05	20.22	36.88	10.11	0.05	2.19
Grand Total	79,750.68	2,635.35	9,640.99	11,489.44	23,765.78	29.81	13.71	558.32

#As per the division boundary shapefile provided by State Forest Department
*Area figure calculated without normalization factor

Forest Survey of India

मुख्य वन संरक्षक ने खुशी जताई

सत्यजीत सिंह
मुख्य वन संरक्षक, झारखंड

झारखंड के मुख्य वन संरक्षक सत्यजीत सिंह ने झारखंड में वन क्षेत्र बढ़ने पर खुशी जताई है और विभाग के कर्मचारियों तथा विभिन्न संस्थाओं की तारीफ की है।

युगांतर प्रकृति से बातचीत में उन्होंने कहा कि झारखंड देश के टॉप 5 ऐसे राज्यों में शुमार हो गया, जहां का वन क्षेत्र बढ़ा है। यह वास्तव में खुशी की बात है। यह 2023 तक के आंकड़ों के आधार पर जारी रिपोर्ट है। अगली रिपोर्ट में इससे भी शानदार परिणाम देखने को मिलेंगे।

श्री सिंह ने कहा कि पलामू क्षेत्र ने विशेष खुशी दी क्योंकि वहां का वन क्षेत्र पूरे झारखंड में सबसे ज्यादा बढ़ा है। दलमा क्षेत्र को छोड़ दें तो जमशेदपुर क्षेत्र ने निराश किया।

मूल्यांकन करता है और परिणाम आईएसएफआर में प्रकाशित किए जाते हैं। वर्तमान रिपोर्ट इस तरह की अठारहवीं रिपोर्ट है। रिपोर्ट में वन आवरण, वृक्ष आवरण, मैंग्रोव आवरण, बढ़ते स्टॉक, भारत के जंगलों में कार्बन स्टॉक, जंगल की आग के उदाहरण, कृषि वानिकी आदि पर जानकारी शामिल है। देश स्तर पर वन स्वास्थ्य की विस्तृत तस्वीर पेश करने के लिए, वन आवरण पर विशेष विषयगत जानकारी आईएसएफआर में वनों की महत्वपूर्ण विशेषताओं की सूचना दी गई है।

वर्तमान आकलन के अनुसार कुल वन और वृक्ष आवरण 8,27,357 वर्ग किमी है, जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 25.17 प्रतिशत है। वन आवरण का क्षेत्रफल लगभग 7,15,343 वर्ग किमी (21.76 प्रतिशत) है, जबकि वृक्ष आवरण का क्षेत्रफल 1,12,014 वर्ग किमी (3.41 प्रतिशत) है।

पहले नंबर पर

क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे अधिक वन एवं वृक्ष आवरण वाले शीर्ष तीन राज्यों में नंबर वन पर मध्य प्रदेश (85724 वर्ग किलोमीटर) है। इसके बाद अरुणाचल प्रदेश (67083 वर्ग किलोमीटर) और महाराष्ट्र (65383 वर्ग किलोमीटर) हैं। वर्ष 1988 की राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार, पारिस्थितिकी स्थिरता बनाए रखने के लिए भौगोलिक क्षेत्र का कम से कम 33 प्रतिशत भाग वन के अंतर्गत होना चाहिए। कुल भौगोलिक क्षेत्र के संबंध में वन क्षेत्र के प्रतिशत के संदर्भ में, लक्षद्वीप (91.33 प्रतिशत) में सबसे ज़्यादा वन क्षेत्र है। उसके बाद मिज़ोरम (85.34 प्रतिशत) और अंडमान और निकोबार द्वीप (81.62 प्रतिशत) हैं। वर्तमान आकलन से यह भी पता चलता है कि 19 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 33 प्रतिशत से ज़्यादा भौगोलिक क्षेत्र वन क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इनमें से आठ राज्य/केंद्र शासित प्रदेश अर्थात् मिज़ोरम, लक्षद्वीप, अंडमान और निकोबार द्वीप, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मेघालय, त्रिपुरा और मणिपुर में 75 प्रतिशत से ज़्यादा वन क्षेत्र है। ■

बांस प्रधान क्षेत्र अब बढ़ कर 1,54,670 वर्ग किमी हुआ

■ शुभम कुमार

भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) के महानिदेशक अनूप सिंह के अनुसार, बांस को वृक्ष आवरण में शामिल करने के बाद हरियाली क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव आया है। देश में बांस-असर वाला क्षेत्र अब 1,54,670 वर्ग किमी हो गया है। पहाड़ी जिलों में वन क्षेत्र में 234.14 वर्ग किमी की बढ़ोतरी हुई है। देश का एक चौथाई से अधिक हिस्से के हरियाली से आच्छादित होने के पीछे बांस की अहम भूमिका है। भारत वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर)-2023 के अनुसार बांस के असर वाले क्षेत्र में वर्ष 2021 के मुकाबले 5,227 वर्ग किमी अधिक है। पहाड़ी जिलों में वन क्षेत्र में 234.14 वर्ग किमी की बढ़ोतरी हुई है। अब यहां कुल वन क्षेत्र 2,83,713.20 वर्ग किमी है। इस बार के

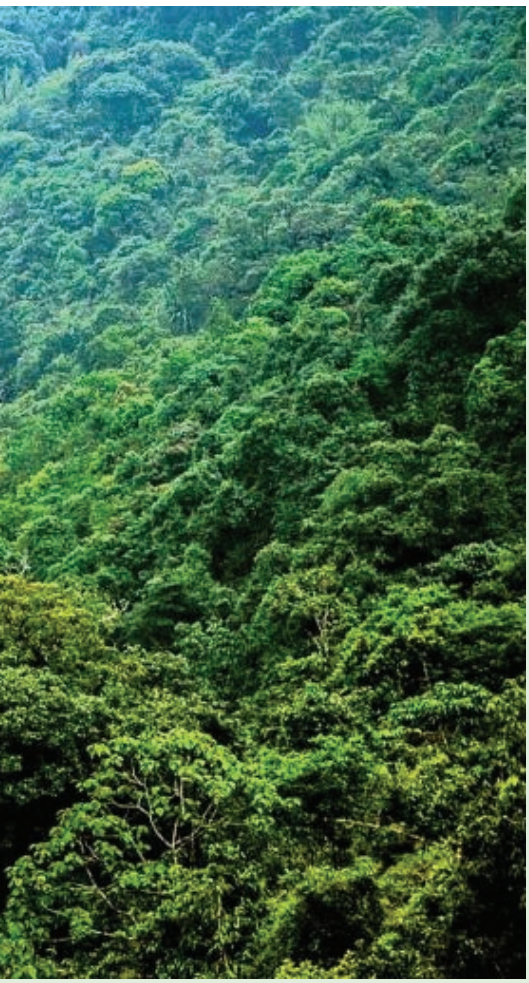

रिपोर्ट में वन आवरण, वृक्ष आवरण, मैंग्रोव आवरण, बढ़ते स्टॉक, भारत के जंगलों में कार्बन स्टॉक, जंगल की आग के उदाहरण, कृषि वानिकी आदि पर जानकारी शामिल है। देश स्तर पर वन स्वास्थ्य की विस्तृत तस्वीर पेश करने के लिए, वन आवरण पर विशेष विषयगत जानकारी आईएसएफआर में वनों की महत्वपूर्ण विशेषताओं की सूचना दी गई है।

आकलन में कृषि वानिकी के तहत आने वाले पेड़ों को भी भी शामिल किया गया है। इसमें वह पेड़ शामिल हैं, जिन्हें पहली बार उगाया गया है। इसमें झाड़ीदार क्षेत्र 43,622 वर्ग किमी और गैर वन क्षेत्र,24,16,489 वर्ग किमी में विस्तार लिए हैं, यानी 73.50 फीसदी में फैला हुआ है।

पश्चिमी घाट और पूर्वी राज्य क्षेत्र में घटा वन आवरण

एफएसआई ने बीते दशक में पश्चिमी घाट और पूर्वी राज्य क्षेत्र (डब्ल्यूजीईएसए) में वन आवरण में हुए बदलावों का भी विश्लेषण किया और पाया कि कुल मिलाकर वन आवरण में 58.22 वर्ग किमी की कमी आई है। इस अवधि के दौरान, बहुत घने वनों में 3,465.12 वर्ग किमी की वृद्धि, वहीं मध्यम घने वनों और खुले वनों में क्रमशः 1,043.23 वर्ग किमी और 2,480.11 वर्ग किमी की कमी दर्ज की गई।

पूर्वोत्तर भारत में घटा वन क्षेत्र

आईएसएफआर की रिपोर्ट कहती हैं कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में वन क्षेत्र में 327.30 वर्ग किलोमीटर की कमी देखी गई है। इस क्षेत्र में कुल वन और वृक्ष क्षेत्र 1,74,394.70 वर्ग किलोमीटर है,जो क्षेत्र के भौगोलिक क्षेत्र का 67 फीसदी है।

हरियाली बढ़ाने में यूपी देश में दूसरे स्थान पर

यूपी के हरित क्षेत्र में 1.38 लाख हेक्टेयर (559.19 वर्ग किमी) की वृद्धि हुई है। हरित आवरण में वृद्धि में देश में छत्तीसगढ़ के बाद उत्तर प्रदेश दूसरे नंबर पर है। भारत वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर)-2023 रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश का वनावरण व वृक्षावरण 23437.53 वर्ग किमी (9.73%) से बढ़कर 23996.72 वर्ग किमी (9.96%) हो गया है। इसे पिछले 7-8 वर्षों में यूपी में बड़े पैमाने पर योगी सरकार के कराए पौधरोपण का नतीजा माना जा रहा है।

पहले था करीब सवा छह फीसदी आवरण

उत्तर प्रदेश का वनावरण 14927.37 वर्ग किमी (6.20%) से बढ़कर 15045.80 वर्ग किमी (6.88%) हो गया है। उत्तर प्रदेश में वन क्षेत्र के बाहर वृक्षावरण 8510.16 वर्ग किमी (3.53%) से बढ़कर 8950.92 वर्ग किमी (3.72%) हो गया है। इस तरह से वनावरण व वृक्षावरण 23437.53 वर्ग किमी (9.73%) से बढ़कर 23996.72 वर्ग किमी (9.96%) हो गया ।

मैंग्रोव, मध्यम घने और खुले वनों में आई कमी

देश का कुल मैंग्रोव यानी सदाबहार वृक्ष आवरण 4,991.68 वर्ग किलोमीटर है। इसमें 2021 से 7.43 वर्ग किलोमीटर की शुद्ध कमी दर्ज की गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बहुत घने जंगल में बढ़ोतरी के बावजूद बीते दशक में मध्यम घने वन और खुले वन श्रेणियों में क्रमशः 1,043.23 वर्ग किलोमीटर और 2,480.11 वर्ग किलोमीटर की गिरावट दर्ज की गई।

झारखंड के वन क्षेत्र में 58.81 वर्ग किलोमीटर का हुआ विस्तार

केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव व राज्यमंत्री कीर्तिवर्धन सिंह ने शनिवार को देहरादून में भारत वन स्थिति रिपोर्ट-2023 जारी की। रिपोर्ट में 2021 की तुलना में 1145 वर्ग किलोमीटर में वन क्षेत्र की वृद्धि हुई है, जो 0.17%अधिक है। जिन पांच राज्यों ने वन क्षेत्र में वृद्धि का आंकड़ा दर्ज किया है, उनमें छत्तीसगढ़, यूपी, ओडिशा, राजस्थान व झारखंड टॉप पांच राज्यों में शामिल हैं। झारखंड में 2021 की तुलना में 58.81 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र की वृद्धि हुई है जबकि झारखंड में वृक्षादित व वन क्षेत्र में 287 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। ■

गंदे पानी को इस्तेमाल लायक बनाने से दूर हो सकता है जल संकट: सीएसई

सीएसई की रिपोर्ट बताती है कि सीवेज जल और उसके उपचार में अंतर उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक है, उसके बाद महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, तमिलनाडु, दिल्ली और हरियाणा हैं।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

शहरों से निकलने वाले गंदे पानी व सीवेज में से केवल 20,236 मिलियन लीटर रोजाना (28 प्रतिशत) का ही उपचार किया जा रहा है, बाकी 72 प्रतिशत गंदा पानी बिना उपचार के नदियों, झीलों और खाली जगहों पर बह रहा है। यदि इस पानी का भी उपचार करके दोबारा से इस्तेमाल किया जाए तो भारत के शहरी जल संकट को काफी हद तक काबू किया जा सकता है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा आज जारी रिपोर्ट "वेस्ट टू वर्थः मैनेजिंग इंडियाज अर्बन वाटर क्राइसिस थ्रू वेस्टवाटर रीयूज" में यह बात कही गई है। इस मौके पर सीएसई की महानिदेशक सुनीता नारायण ने कहा, "भारत तेजी से शहरीकरण, औद्योगिक विकास, जनसंख्या विस्तार और जलवायु परिवर्तन के कारण पानी के संकट का सामना कर रहा है। अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग इन चिंताओं को दूर करने और जल चक्रीयता और स्थिरता को बढ़ावा देने की रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है।" यह रिपोर्ट भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के तहत सीएसई और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यशाला में जारी की गई।

रिपोर्ट जारी करने के अवसर पर एनएमसीजी के महानिदेशक राजीव मित्तल ने कहा, "संसाधित जल का उपयोग और निपटान, इसकी क्षमता का दोहन किए बिना का मतलब है कि हम एक महत्वपूर्ण संसाधन का उपयोग करने से वंचित हो रहे हैं। चुनौती यह है कि हम इस क्षेत्र में जो काम कर रहे हैं, उसका विस्तार करें और सुनिश्चित करें कि वह प्रभावशाली हो। जल शक्ति मंत्रालय का निर्देश है कि शहरों को अपने द्वारा उपयोग किए जाने वाले पानी का कम से कम 20 प्रतिशत पानी पुनर्चक्रित और पुनः उपयोग करना चाहिए। सीएसई के जल कार्यक्रम के वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक सुब्रत चक्रवर्ती कहते हैं, "यह इस सोच के अनुरूप है कि एक सतत और जलवायु-सुचिंतित भविष्य को प्राप्त करने और मीठे पानी की लगातार बढ़ती मांग के प्रबंधन के लिए एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना आवश्यक है।" सीएसई की रिपोर्ट बताती है कि सीवेज जल और उसके उपचार में अंतर उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक है, उसके बाद महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, तमिलनाडु, दिल्ली और हरियाणा (इसी क्रम में) हैं। चक्रवर्ती कहते हैं, "इसके बावजूद, रिपोर्ट में अच्छे उदाहरणों पर भी प्रकाश डाला गया है। ऐसे राज्यों के मामले जिन्होंने उपचारित अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए नीतियां पेश की हैं।" उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र ने शहरी क्षेत्रों में उद्योगों को उपचारित अपशिष्ट जल का उपयोग करना अनिवार्य कर दिया है। गुजरात ने कृषि और उद्योग में अनुप्रयोगों के साथ 100 प्रतिशत पुनः उपयोग का लक्ष्य रखा है, और तमिलनाडु ने औद्योगिक और शहरी हरियाली परियोजनाओं के लिए पुनः उपयोग को बढ़ावा दिया है। राष्ट्रीय शहरी स्वच्छता नीति (एनयूएसपी) और नमामि गंगे कार्यक्रम जल सुरक्षा पहलों के प्रमुख घटकों के रूप में अपशिष्ट जल प्रबंधन और पुनः उपयोग पर जोर देते हैं। नागपुर, बेंगलुरु और चेन्नई जैसे शहरों ने अपशिष्ट जल पुनः उपयोग प्रथाओं को लागू करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। नागपुर बिजली संयंत्रों को उपचारित अपशिष्ट जल की आपूर्ति करता है, जिससे मीठे पानी का उपयोग काफी कम हो जाता है, जबकि बेंगलुरु इसका उपयोग कृषि, झील पुनरुद्धार और भूजल पुनर्भरण के लिए करता है। चेन्नई ने औद्योगिक अनुप्रयोगों, शहरी भूनिर्माण और भूजल पुनर्भरण के लिए उपचारित अपशिष्ट जल को उपयोग में लाया है।

इस अवसर पर सीएसई में जल कार्यक्रम प्रबंधक सुमिता सिंघल ने कहा, "अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग को बढ़ावा देने में कई चुनौतियां हैं, जिनमें सीवेज उपचार और वितरण में बुनियादी ढांचे की कमी, पुनः उपयोग मानकों को पूरा करने के लिए गुणवत्ता आश्वासन, सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण सार्वजनिक प्रतिरोध और उपचार सुविधाओं की उच्च परिचालन लागत शामिल हैं।" वह आगे कहती हैं, "आंकड़ों से पता चलता है कि 28 प्रतिशत (20,236 एमएलडी) उपचारित जल पुनः उपयोग के लिए तुरंत उपलब्ध है। शहरी नियोजन और औद्योगिक आवश्यकताओं के साथ नीतियों को संरेखित करने के अलावा, विकेंद्रीकृत और लागत प्रभावी उपचार प्रौद्योगिकियों में प्रगति से बुनियादी ढाँचे की कमी को दूर किया जा सकता है।"■

अब तो पौधों के अंकुरण में भी हो रहा है बदलाव

कुछ पौधे गर्म तापमान के साथ जल्द समायोजित हो जाते हैं, ऐसे में वो प्रतिक्रिया स्वरूप मौसम से पहले ही जल्द अंकुरित हो जाते हैं। वहीं अन्य प्रजातियां इन बदलावों का सामना करने के लिए उतनी तैयार नहीं होती।

■ **ललित मौर्या**

हमारी धरती पहले से कहीं ज्यादा तेजी से गर्म हो रही है, ऐसे में यह समझना बेहद महत्वपूर्ण है कि इसका पारिस्थितिकी तंत्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा। देखा जाए तो जलवायु में आते इन बदलावों की वजह से पौधों और जीवों पर पड़ने वाले कुछ प्रभाव तो बेहद स्पष्ट हैं, जैसे जीवों का बढ़ता प्रवास और फूलों का समय से पहले खिलना। लेकिन इसकी वजह से कुछ बदलाव ऐसे भी हो रहे हैं जो बेहद महीन और जटिल हैं। बढ़ते तापमान के साथ प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्र में प्राकृतिक घटनाओं के समय जैसे कि बीजों के अंकुरण और पौधों की वृद्धि का समय आदि में भी बदलाव आ रहा है। ऐसे में वैज्ञानिकों ने आशंका जताई है कि इन बदलावों के गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं। होल्डन फॉरेस्ट्स एंड गार्डन्स, नॉर्थवेस्टर्न और येल यूनिवर्सिटी से जुड़े शोधकर्ताओं द्वारा किए एक नए अध्ययन से पता चला है कि तापमान में होती वृद्धि कैसे अंकुरण के समय में बदलाव करके वनस्पति समुदायों को प्रभावित कर रही है। इस अध्ययन के नतीजे जर्नल इकोलॉजी में प्रकाशित हुए हैं।

शोधकर्ताओं के मुताबिक अंकुरण का समय न केवल किसी एक प्रजाति बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब कोई बीज उपजना शुरू करता है तो उसका समय इस बात को प्रभावित करता है कि वो सूर्य के प्रकाश, पानी और पोषक तत्वों के लिए कितनी अच्छी तरह प्रतिस्पर्धा करता है। कुछ पौधे गर्म तापमान के साथ जल्द समायोजित हो जाते हैं, ऐसे में वो प्रतिक्रिया स्वरूप मौसम से पहले ही जल्द अंकुरित हो जाते हैं। वहीं अन्य प्रजातियां इन बदलावों का सामना करने के लिए उतनी तैयार नहीं होती ऐसे में उनका अंकुरण अपने सामान्य समय पर ही होता है। इसकी वजह से कुछ प्रजातियों को जो इन बदलावों को जल्द अपना लेती हैं, उन्हें इसका फायदा मिल सकता है। ऐसे में इन प्रजातियों को हावी होने और वनस्पति समुदाय में बदलाव का मौका मिल सकता है। इसका सीधा असर इन वनस्पतियों पर निर्भर पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है। अपने अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इसी तथ्य को उजागर किया है कि कैसे बढ़ते तापमान के चलते बीज के अंकुरण का समय बदल जाता है, जिससे पौधों की प्रजातियों के बढ़ने का क्रम प्रभावित होता है। शोध के मुताबिक जो पौधे पहले अंकुरित होतें हैं, वो कहीं ज्यादा बड़े हो सकते हैं। ऐसे में उनके और बाद में अंकुरित होने वाले पौधों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है। ऐसे में समय के साथ, यह प्रभावित कर सकता है कि कौन सी प्रजातियां पनपती हैं और कौन सी घट सकती हैं। इसका सीधा असर उन जानवरों, कीड़ों और अन्य जीवों पर पड़ता है जो इन पर निर्भर हैं।

जलवायु परिवर्तन का पादप समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए अपने अध्ययन में एम्मा डावसन-ग्लास के नेतृत्व में शोधकर्ताओं ने एक नियंत्रित अध्ययन किया है। इसमें उन्होंने पौधों की 15 प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित किया है। अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने तापमान से जुड़ी दो स्थितियों का अनुकरण किया है। इस दौरान वर्तमान परिवेश और तापमान में तीन डिग्री सेल्सियस के साथ पादप समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसका अध्ययन किया गया है। इस सेटअप से शोधकर्ताओं को यह देखने का अवसर मिला कि तापमान में होने वाला बदलाव किस प्रकार बीजों के अंकुरण के समय को प्रभावित करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि तापमान में होने वाली वृद्धि से कौन सी प्रजातियां पहले अंकुरित होती हैं तथा यह बदलाव वनस्पतियों के बीच पारस्परिक क्रिया को किस प्रकार प्रभावित करता है।

गर्म होती दुनिया में पौधों के बीच बढ़ रही प्रतिस्पर्धा

अध्ययन के नतीजे दर्शाते हैं कि गर्म परिस्थितियों में पहले अंकुरित होने वाली प्रजातियों को फायदा मिलता है और वो कहीं ज्यादा बड़ी हो सकती हैं। इस तरह वो सूरज की रोशनी, पोषक तत्वों और पानी के लिए अन्य पौधों से आगे निकल सकती हैं। यह प्रक्रिया पादप समुदाय की संरचना में बदलाव कर सकती है। नतीजन पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ सकता है। अध्ययन के दौरान सभी पौधों ने स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दिखाई थी, कुछ ने गर्मी के बावजूद स्थिर वृद्धि बनाए रखी। यह परिवर्तनशीलता बताती है कि जलवायु परिवर्तन सभी प्रजातियों को समान रूप से प्रभावित नहीं करेगा, जिससे पादप समुदायों के लिए अप्रत्याशित भविष्य पैदा होगा।

देखा जाए तो पादप समुदाय की संरचना में आने वाला यह बदलाव समय के साथ शाकाहारी जीवों को करेगा, जो भोजन के लिए कुछ विशिष्ट पौधों पर निर्भर हैं। इसका असर इन मांसाहारी जीवों पर भी पड़ेगा जो इन शाकाहारी जीवों पर निर्भर है। इस तरह यह पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव की वजह बन सकता है।

अध्ययन से यह भी पता चलता है कि कुछ प्रजातियां मौसमी बदलावों के अनुरूप अपने समय में बदलाव कर सकती हैं, जो उनके विकास के लिए फायदेमंद होता है। यह इस बात को भी उजागर करता है कि जलवायु में आता बदलाव पहले ही पारिस्थितिकी तंत्र को नया आकार दे रहा है, जिसे हम अभी समझना शुरू कर रहे हैं। ■

■ प्रो.संजय द्विवेदी

मीडिया भी सोचे पानी के सवाल पर

मीडिया का काम है लोकमंगल के लिए सतत सक्रिय रहना। पानी का सवाल भी एक ऐसा मुद्दा बना गया है जिस पर समाज, सरकार और मीडिया तीनों की सामूहिक सक्रियता जरूरी है। कहा गया है-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष,चून।

प्रकृति के साथ निरंतर छेड़छाड़ ने मनुष्यता को कई गंभीर खतरों के सामने खड़ा कर दिया है। देश की नदियां, ताल-तलैये, कुंए सब हमसे सवाल पूछ रहे हैं। हमारे ठूंठ होते गांव और जंगल हमारे सामने एक प्रश्न बनकर खड़े हैं। पर्यावरण के विनाश में लगी व्यवस्था और उद्योग हमें मुंह चिढ़ा रहे हैं। इस भयानक शोषण के फलित भी सामने आने लगे हैं। मानवता एक ऐसे गंभीर संकट को महसूस कर रही है और कहा जाने लगा है कि अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा। बारह से पंद्रह रूपए में पानी खरीद रहे हम क्या कभी अपने आप से ये सवाल पूछते हैं कि आखिर हमारा पानी इतना महंगा क्यों है। जब हमारे शहर का नगर निगम जलकर में थोड़ी बढ़त करता है तो हम आंदोलित हो जाते हैं, राजनीतिक दल सड़क पर आ जाते हैं। लेकिन पंद्रह रूपए में एक लीटर पानी की खरीदी हमारे मन में कोई सवाल खड़ा नहीं करती। आज भारत बोतलबंद पानी की खपत के मामले में दुनिया के दस शीर्ष देशों में शामिल है। लेकिन ये

पानी क्या हमारी आम जनता की पहुंच में है। यह दुर्भाग्य है कि हमारे गांवों में मल्टीनेशनल कंपनियों के पेय पदार्थ पहुंच गए किंतु आजतक हम आम लोंगों को पीने का पानी सुलभ नहीं करा पाए। उस आदमी की स्थिति का अंदाजा लगाइए जो इन महंगी बोलतों में बंद पानी तक नहीं पहुंच सकता।

पानी की चिंता आज सब प्रकार से मानवता की सेवा सबसे बड़ा काम है। आंकड़े चौंकानेवाले हैं किंतु ये खतरे की गंभीरता का अहसास भी कराते हैं। देश के कई राज्यों के लोग आज भी दूषित जल पीने को मजबूर हैं क्योंकि यह उनकी मजबूरी भी है। पानी को लेकर सरकार, समाज और मीडिया तीनों को सक्रिय होने की जरूरत है। आजादी के इतने सालों के बाद पानी का सवाल यदि आज और गंभीर होकर हमारे है तो हमें सोचना होगा कि आखिर हम किस दिशा की ओर जा रहे हैं। पानी की सीमित उपलब्धता को लेकर हमें सोचना होगा कि आखिर हम अपने समाज के सामने इस चुनौती का क्या समाधान रखने जा रहे हैं।

मीडिया की जिम्मेदारीः

मीडिया का जैसा विस्तार हुआ है उसे देखते हुए उसके सर्वव्यापी प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। मीडिया सरकार, प्रशासन और जनता सबके बीच एक ऐसा प्रभावी माध्यम है जो ऐसे मुद्दों पर अपनी खास दृष्टि को संप्रेषित कर सकता है। कुछ मीडिया समूहों ने पानी के सवाल पर जनता को जगाने का काम किया है। वह चेतना के स्तर पर भी है और कार्य के स्तर पर भी। ये पत्र समूह अब जनता को जगाने के साथ उनके घरों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने तक में मदद कर रहे हैं। इसी तरह भोपाल की सूखती झील की चिंता को जिस तरह भोपाल के अखबारों ने मुद्दा बनाया और लोगों को अभियान शामिल किया उसकी सराहना की जानी चाहिए। इसी तरह हाल मे नर्मदा को लेकर स्व.अमृतलाल वेगड़ से लेकर स्व. अनिल दवे तक के प्रयासों को इसी नजर से देखा जाना चाहिए। अपनी नदियों, तालाबों झीलों के प्रति जनता के मन में सम्मान की स्थापना एक बड़ा काम है जो बिना मीडिया के सहयोग से नहीं हो सकता। जलपुरुष राजेंद्र सिंह जैसे लोग भी हमारे समाज में अलख जगा रहे हैं। पानी को लेकर अनेक सामाजिक संगठन बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

उत्तर भारत की गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों को भी समाज और उद्योग की बेरुखी ने काफी हद तक नुकसान पहुंचाया है। दिल्ली में यमुना जैसी नदी किस तरह एक गंदे नाले में बदल गयी तो लखनऊ की गोमती का क्या हाल है किसी से छिपा नहीं है।देश की नदियों का जल और उसकी चिंता हमें ही करनी होगी। मीडिया ने इस बड़ी चुनौती को समय रहते समझा है, यह बड़ी बात है। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस सवाल को मीडिया के नियंता अपनी प्राथमिक चिंताओं में शामिल करेंगें। ये कुछ बिंदु हैं जिनपर मीडिया निरंतर अभियान चलाकर पानी को बचाने में मददगार हो सकता है-

1. पानी का राष्ट्रीयकरण किया जाए और इसके लिए एक अभियान चलाया जाए।
2. छत्तीसगढ़ की शिवनाथ नदी को एक पूंजीपति को बेचकर जो शुरूआत हुयी थी, उसे दृष्टिगत रखते हुए नदी बेचने की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जाए।
3. उद्योगों के द्वारा निकला कचरा हमारी नदियों को नष्ट कर रहा, पर्यावरण को भी। उद्योग प्रायः प्रदूषणरोधी संयत्रों की स्थापना तो करते हैं पर बिजली के बिल के नाते उसका संचालन नहीं करते। उद्योगों की हैसियत के मुताबिक प्रत्येक उद्योग का प्रदूषणरोधी संयत्र का मीटर अलग हो और उसका न्यूनतम बिल तय किया जाए। इससे इसे चलाना उद्योगों की मजबूरी बन जाएगा।
4. केंद्र सरकार द्वारा नदियों को जोड़ने की योजना को तेज किया जाना चाहिए।
5. बोलतबंद पानी के उद्योग को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।
6. सार्वजनिक पेयजल व्यवस्था को दुरुस्त करने के सचेतन और निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।
7. गांवों में स्वजलधारा जैसी योजनाओं को तेजी से प्रचारित करना चाहिए।
8. परंपरागत जल श्रोतों की रक्षा की जानी चाहिए।
9. आम जनता में जल के संयमित उपयोग को लेकर लगातार जागरूकता के अभियान चलाए जाने चाहिए।
10. सार्वजनिक नलों से पानी के दुरूपयोग को रोकने के लिए मोहल्ला समितियां बनाई जा सकती हैं। जिनकी सकारात्मक पहल को मीडिया रेखांकित कर सकता है।
11. बचपन से पानी के महत्व और उसके संयमित उपयोग की शिक्षा नई पीढ़ी को देने के लिए मीडिया बच्चों के निकाले जा रहे अपने साप्ताहिक परिशिष्टों में इन मुद्दों पर बात कर सकता है। साथ स्कूलों में पानी के सवाल पर आयोजन करके नई पीढ़ी में संस्कार डाले जा सकते हैं।
12. वाटर हार्वेस्टिंग को नगरीय क्षेत्रों में अनिवार्य बनाया जाए, ताकि वर्षा के जल का सही उपयोग हो सके।
13. जनप्रबंधन की सरकारी योजनाओं की कड़ी निगरानी की जाए साथ ही बड़े बांधों के उपयोगों की समीक्षा भी की जाए।
15. गांवों में वर्षा के जल का सही प्रबंधन करने के लिए इस तरह के प्रयोग कर चुके विशेषज्ञों की मदद से इसका लोकव्यापीकरण किया जाए।
16. हर लगने वाले कृषि और किसान मेलों में जलप्रबंधन का मुद्दा भी शामिल किया जाए, ताकि फसलों और खाद के साथ पानी को लेकर हो रहे प्रयोगों से भी अवगत हो सकें, ताकि वे सही जल प्रबंधन भी कर सकें।
17. विभिन्न धर्मगुरूओं और प्रवचनकारों से निवेदन किया जा सकता है कि वे अपने सार्वजनिक समारोहों और प्रवचनों में जलप्रबंधन को लेकर अपील जरूर करें। हर धर्म में पानी को लेकर सार्थक बातें कही गयी हैं उनका सहारा लेकर धर्मप्राण जनता में पानी का महत्व बताया जा सकता है।
18. केंद्र और राज्य सरकारें पानी को लेकर लघु फिल्में बना सकते हैं जिन्हें सिनेमाहालों में फिल्म के प्रसारम से पहले या मध्यांतर में दिखाया जा सकता है।
19. पारंपरिक मीडिया के प्रयोग से गांव-कस्बों तक यह संदेश पहुंचाया जा सकता है।
20. पत्रिकाओं के पानी को लेकर अंक निकाले जा सकते हैं जिनमें दुनिया भर पानी को लेकर हो रहे प्रयोगों की जानकारी दी जा सकती है।
21. राज्यों के जनसंपर्क विभाग अपने नियमित विज्ञापनों में गर्मी और बारिश के दिनों में पानी के संदेश दे सकते हैं।

ऐसे अनेक विषय हो सकते हैं जिसके द्वारा हम जल के सवाल को एक बड़ा मुद्दा बनाते हुए समाज में जनचेतना फैला सकते हैं। यही रास्ता हमें बचाएगा और हमारे समाज को एक पानीदार समाज बनाएगा। पानीदार होना कोई साधारण बात नहीं है, क्या हम और आप इसके लिए तैयार हैं। ■

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के जनसंचार विभाग में आचार्य हैं।)

Trustworthy Testing Solutions for a Healthier Environment

- Ambient Air Quality monitoring
- Work Zone Ambient Air Quality
- Emission sources Monitoring & Analysis
- (Stack Emission & DG set emission)
- Noise Level monitoring (Ambient Noise & Work Zone Noise)
- Ground water sampling & analysis
- Drinking water sampling & analysis
- Surface water sampling & analysis
- Waste water sampling & analysis
- Soil sampling & analysis

CERTIFICATE OF ACCREDITATION

YUGANTAR BHARATI ANALYTICAL AND ENVIRONMENTAL ENGINEERING LABORATORY

ISO/IEC 17025:2017

"General Requirements for the Competence of Testing & Calibration Laboratories"

TESTING

Yugantar Bharati

Analytical & Environmental Enngineering Laboratory

Accredited by : NABL and JSPCB Certified by : 9001:2015 & 18001:2007

Phone : 9304955301/2/3/4/5 Email: ybaeel@gmail.com
Namkum Post Office, Sidroul, Namkum, Ranchi-834010, Jharakhand, India

युगांतर न्यूज

एक ऐसा न्यूज पोर्टल जिसमें आपको मिलेंगी

राजनीति, हेल्थ और पर्यावरण की खबरें

www.yugantarnews.in पर पढ़ें

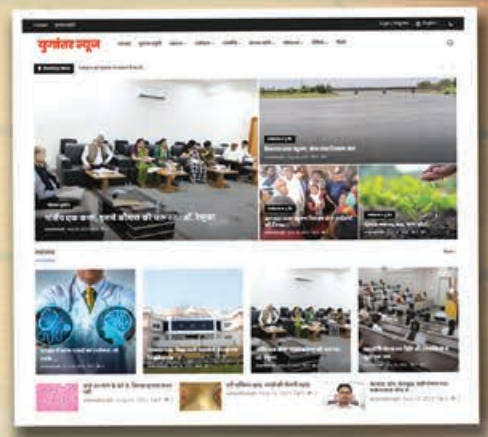

हमारा YouTube Channel देखें yugantarnews

With Best Compliments From

दामोदर बचाओ आंदोलन

क्यों मनाते हैं अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस

अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस हर साल 31 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य धारीदार स्तनपायी और इसकी लुप्तप्राय स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

■ ट्विंकल

हर साल 31 जनवरी को दुनिया भर के लोग अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस मनाते हैं। इस दिन का उद्देश्य इस बारे में जानकारी फैलाना है कि आप इस जानवर के संरक्षण का समर्थन कैसे कर सकते हैं। सबसे पहचानी जाने वाली प्रजातियों में से एक, ज़ेबरा मुख्य रूप से चरने वाले जानवर हैं और निम्न-गुणवत्ता वाली वनस्पतियों पर जीवित रह सकते हैं। वे मुख्य रूप से शेरों द्वारा शिकार किए जाते हैं। आम तौर पर खतरे में पड़ने पर भाग जाते हैं, लेकिन काटते और लात भी मारते हैं।

इतिहास

ज़ेबरा ज़्यादातर अफ्रीकी महाद्वीप, केन्या और इथियोपिया के अर्ध-रेगिस्तानी इलाकों और नामीबिया, अंगोला और दक्षिण अफ्रीका के पहाड़ी इलाकों में पाए जाते हैं। वर्तमान में तीन प्रकार के ज़ेबरा जंगल में पाए जा सकते हैं। ये हैं-ग्रेवी ज़ेबरा, मैदानी ज़ेबरा और पहाड़ी ज़ेबरा। ग्रेवी ज़ेबरा को खतरे में पड़ी प्रजातियों की लाल सूची में लुप्तप्राय माना जाता है। अफ्रीकी वन्यजीव फाउंडेशन के अनुसार, पिछले तीन दशकों में उनकी आबादी में लगभग 54% की कमी आई है।अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस की स्थापना संभवतः स्मिथसोनियन नेशनल जू और कंजर्वेशन बायोलॉजी इंस्टीट्यूट जैसे संरक्षण संगठनों के एक संघ द्वारा की गई थी। अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस का उद्देश्य ज़ेबरा की जीवन स्थितियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उनकी संख्या को और कम होने से कैसे बचाया जा सकता है, इस बारे में जागरूकता बढ़ाना है। अवैध शिकार के खतरों के साथ-साथ, इन ज़ेबरा को स्थानीय लोगों से भी खतरा है, जो मुश्किल समय में मांस के लिए इनका शिकार कर सकते हैं। ज़ेबरा अपनी आबादी को बचाने के लिए कई चिंताओं से जूझ रहे हैं।

महत्व

अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस का उद्देश्य ज़ेबरा की आबादी को संरक्षित, बनाए रखना और बढ़ाना है। इस तरह से हम वन्यजीवों के संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। हम जागरूकता अभियान और दान अभियान के माध्यम से प्रजातियों के संरक्षण में भाग ले सकते हैं। ग्रह पर सभी जीवित प्राणियों का स्वागत है। अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस ज़ेबरा आबादी की सुरक्षा और संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा के बिना भविष्य में सभी जीवित प्राणियों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देता है।

रोचक तथ्य

ज़ेबरा की धारियाँ विशिष्ट होती हैं, इसलिए उनके पैटर्न की दृष्टि से कोई भी दो ज़ेबरा एक जैसे नहीं होते। सफेद धारियां प्रकाश को परावर्तित करती हैं और ज़ेबरा को पूरे दिन गर्म अफ्रीकी सूरज में खड़े रहने और चरने के दौरान ठंडा रखती हैं। काली धारियां सूर्य से गर्मी को अवशोषित करती हैं और सुबह जानवरों को गर्म रखती हैं। ज़ेबरा अलग-अलग चेहरे के भाव बनाकर तथा अपने कान हिलाकर और फड़फड़ाकर एक दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं। ज़ेबरा की कोई विशेष खाद्य प्राथमिकता नहीं होती तथा वे अफ्रीका में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की घास खाते हैं। ज़ेबरा की धारियों का पैटर्न, जो घास की ऊंची, लहरदार रेखाओं के साथ मिलकर उन्हें जंगल के बीच में छिपा देता है, उनके रंग से अधिक महत्वपूर्ण है। अत्यंत सामाजिक प्राणी होने के कारण ज़ेबरा को जंगल में अक्सर बड़े समूहों में देखा जाता है। उनके आवासों को संरक्षित और पुनर्स्थापित करने के लिए, विभिन्न संगठनों द्वारा संचालित संरक्षण पहलों को लागू किया जा सकता है। और अंतर्राष्ट्रीय ज़ेबरा दिवस सभी को ज़ेबरा संरक्षण के समर्थन में एक साथ आने का अवसर प्रदान करता है। ■

पक्षियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाते हैं पक्षी दिवस

■ निहारिका सिंह

हर साल 5 जनवरी के दिन को राष्ट्रीय पक्षी दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रकृति प्रेमी, पर्यावरणविद, पक्षी प्रेमी इस दिन को उत्साह के साथ मनाते हैं। पक्षी दिवस पक्षियों के प्रति अवेयरनेस बढ़ाने और प्रेम जताने के लिए खास माना जाता है। पक्षी दिवस मनाए जाने की शुरुआत पहली बार 2002 में बॉर्न फ्री यूएसए और एवियन वेलफेयर गठबंधन द्वारा की गई थी। इसके बाद भारत समेत सभी देश पक्षी दिवस मनाते हैं। राष्ट्रीय पक्षी दिवस 2025 की थीम है पक्षी-अनुकूल शहर और समुदाय बनाना।

राष्ट्रीय पक्षी दिवस का इतिहास

राष्ट्रीय पक्षी दिवस यानी नेशनल बर्ड डे हर साल 5 जनवरी को मनाया जाता है। कहा जाता है कि पहली बार बोर्न फ्री यूएसए और एवियन वेलफेयर ने 2002 पक्षी दिवस मनाया था। साल 2023 में यह सिर्फ किसी एक देश में नहीं, बल्कि कई देशों में राष्ट्रीय पक्षी दिवस मनाया जाने लगा। आज के समय में लगभग विश्व का हर देश 5 जनवरी को राष्ट्रीय पक्षी दिवस मनाता है। आज के समय में राष्ट्रीय पक्षी दिवस का प्रासंगिक बेहद ही मनाये रखता है, क्योंकि जिस तेजी पक्षियों की प्रजातियां खत्म हो रही हैं, उस हिसाब से पक्षियों पर महत्व देना काफी सही माना जा सकता है। राष्ट्रीय पक्षी दिवपक्षियों के बारे में जागरूकता फैलाने, बढ़ाने और संरक्षण के लिए एक महतवपूर्ण दिन होता है।

इस दिन देश के कई हिस्सों में पक्षी संरक्षण संबंधी प्रोग्राम होते रहते हैं। इसके अलावा इस दिन पक्षियों की समस्याओं के बारे में लोगों को जागरूक भी किया जाता है। इस दिन मनाने वाले लोग पक्षियों के बीच में पहुंचते हैं और उनके साथ घंटों बैठकर से बिताते हैं। कई लोग पक्षियों के बीच खाना-पीना लेकर पहुंचते हैं। इस इस दिन कई लोग बर्ड सेंचुरी भी पहुंचते हैं।

दरअसल, पक्षियों ने हमेशा हमारे दिलों में राज किया है। यही कारण है कि हम हर साल पांच जनवरी को राष्ट्रीय पक्षी दिवस मनाते हैं। हालांकि पक्षियों की कई प्रजातियां खतरे में हैं। इसकी कई वजह हैं। उनमें अवैध व्यापार, बीमारियां और उनका मूल निवास उजड़ना शामिल है। साथ ही, जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग ने पक्षियों की दिक्कतें बढ़ा दी हैं। पक्षी प्रकृति की सबसे खूबसूरत जीवों में से एक हैं। वे अपनी चहचहाहट से हमारे दिन को बेहतर बनाते हैं, वे देखने में बहुत सुंदर और रंगीन होते हैं। लेकिन इससे परे, वे पारिस्थितिकी तंत्र के भी महत्वपूर्ण हिस्से हैं। वे उनके स्वास्थ्य और जीवन शक्ति के बारे में जानकारी का संकेत देते हैं और अब समय आ गया है कि हम उनकी रक्षा करने के लिए हाथ मिलाएं और यह सुनिश्चित करें कि उनके पास पनपने के लिए एक स्वस्थ प्रकृति हो।

चाहे वे आपके घर के पिछवाड़े की गोरियां हों या पार्क में इधर-उधर घूमने वाले आम कबूतर हों, पक्षियों ने हमेशा हमारे दिलों में आकर्षण, प्यार जगाया है। एक निश्चित विस्मय है जो केवल बाज को उड़ते हुए देखकर ही महसूस किया जा सकता है। दुर्भाग्य से, अधिकांश पक्षी या तो लुप्तप्राय हैं या संरक्षित हैं, यह ज्यादातर निवास स्थान के नुकसान या अवैध पालतू व्यापार के कारण है। इसीलिए पक्षी कल्याण गठबंधन ने राष्ट्रीय पक्षी दिवस बनाया। इन महत्वपूर्ण जीवों की कठिनाइयों और दुर्दशा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हम उनके साथ एक स्वस्थ, अधिक टिकाऊ संबंध बनाने के लिए आवश्यक बदलाव शुरू कर सकते हैं।

पक्षियों को अक्सर अतीत से जीवित संबंध माना जाता है, क्योंकि वे डायनासोर के विकास से सबसे निकट से संबंधित जीव हैं। वे अक्सर पारिस्थितिकी तंत्र में प्रमुख प्रजातियां हैं, जो इसके स्वास्थ्य और जीवन शक्ति के संकेतक हैं। उदाहरण के लिए, कठफोड़वाओं द्वारा छोड़े गए छेद अक्सर कई अन्य जानवरों के लिए घर के रूप में उपयोग किए जाते हैं। इसका मतलब है कि अगर कठफोड़वाओं के पास भोजन का स्रोत या सही प्रकार के पेड़ों की कमी हो जाए, तो क्या सभी जानवर भी चोंच मारने के अपने कौशल पर निर्भर हो जाएंगे? ■

एनजीटी ने स्वर्णरेखा में ड्रेजिंग और डी-सिल्टिंग रोकने का दिया निर्देश

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने आदेश दिया है कि पश्चिम बंगाल खनिज विकास और व्यापार निगम लिमिटेड (डब्ल्यूबीएमडीटीसीएल) और रीच ड्रेजिंग लिमिटेड को संकरैल में स्वर्णरेखा नदी पर किए जा रहे किसी भी तरह के ड्रेजिंग या डी-सिल्टिंग ऑपरेशन न किये जाएं।

कोर्ट के मुताबिक भले ही वो बोली लगाने में सफल रहे हैं लेकिन वो ऐसा तब तक नहीं कर सकते जब तक वे जिला सर्वेक्षण रिपोर्ट (डीएसआर) और हटाई गई रेत की बहाली के लिए एक अध्ययन नहीं करते। मामला पश्चिम बंगाल में स्वर्णरेखा नदी से जुड़ा है।

इसके अलावा, एनजीटी ने अपने चार सितंबर, 2023 को दिए आदेश में यह भी कहा है कि 2016 के सतत रेत खनन प्रबंधन दिशानिर्देशों और 2020 के रेत खनन प्रवर्तन और निगरानी दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन किया जाना जरूरी है। इसके अतिरिक्त, सफल बोली लगाने वाले के पास आवश्यक पर्यावरणीय मंजूरी होनी चाहिए। साथ ही वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए की जा रही खनन गतिविधियों के लिए अन्य कानूनी परमिट भी होना जरूरी हैं।

इस मामले में एनजीटी में शिकायत दर्ज कराने वाले व्यक्ति का दावा है कि मेसर्स रीच ड्रेजिंग लिमिटेड को स्वर्णरेखा नदी तल से तलछट हटाने का ठेका दिया गया था। हालांकि साथ ही उन्होंने रीच ड्रेजिंग लिमिटेड पर इस ड्रेजिंग कार्य की आड़ में वाणिज्यिक रेत खनन गतिविधियों में शामिल होने का भी आरोप लगाया है।

शिकायत में यह भी कहा गया है कि पश्चिम बंगाल खनिज विकास और व्यापार निगम लिमिटेड (डब्ल्यूबीएमडीटीसीएल) ने हावड़ा जिले में स्वर्णरेखा नदी के तल से ड्रेजिंग और गाद निकलने के लिए निविदा जारी की थी, लेकिन वो इसकी आड़ में खनन कर रही थी। ■

प्रकृति और जनजातियों के चित्रण के बगैर मेरी पेंटिंग अधूरी है

मेरा नाम बिप्लव रॉय है। मैं 74 साल का हूं। मैं टाटा स्टील में पहले मैकेनिकल इंजीनियर था। 2010 में मैं वहां से रिटायर हो गया। पेंटिंग मेरा पहला और आखिरी शौक रहा। मैं पेंटिंग दिल से करता हूं। पेंटिंग के बगैर बिप्लव नहीं रह सकता।

मैं बचपन से ही एक बढ़िया पेंटर बनना चाहता था, लेकिन मन पढ़ाई में भी खूब लगता था। हायर सेकेंड्री पास करने के बाद मेरे सेलेक्शन इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए हो गया। मैं इंजीनियरिंग पढ़ता तो रहा पर मेरा ध्यान थोड़ा भी पेंटिंग से नहीं हटा। मैंने जब मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर ली, तब टाटा स्टील में मुझे नौकरी मिल गई। मैं पेंटिंग लगातार करता रहा।

मैंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, लेकिन पेंटिंग की विधिवत शिक्षा के लिए मैं बाहर नहीं जा सका। जमशेदपुर में ही कदमा के एक आर्ट स्कूल में मैंने थोड़ी-बहुत पेंटिंग की पढ़ाई की। मेरी पेंटिंग को आप देखेंगे तो आपको समझ में आ जाएगा कि पूरी पेंटिंग एक कहानी पर बेस्ड है। मेरी कहानियों में कई तथ्य होते हैं। दो तथ्य ऐसे होते हैं, जो हर पेंटिंग्स में आपको मिल जाएंगे। पहला है-नेचर और दूसरा है ट्राइबल लाइफ। आपको मेरी हर पेंटिंग में जनजातीय लोगों की जिंदगी और प्रकृति जरूर मिलेगा। इनके बगैर मैंने कोई पेंटिग बनाई ही नहीं।

अब उम्र के इस पड़ाव में भी कोई बच्चा मेरे पास पेंटिंग सीखने आ जा ता है तो मैं उसे मना नहीं कर पाता। उनसे थोड़ी-बहुत फीस मिल जाती है। उम्र के इस पड़ाव में भी पेंटिंग को लेकर मेरा जुनून कम नहीं हुआ है। कुछ पेंटिंग्स मैंने बेची है। अभी भी 35-40 पेंटिंग्स हैं, जो लोगों को बेहद भाते हैं। पुरस्कार-सम्मान मुझे काफी मिला। इन पुरस्कारों-सम्मानों से ज्यादा मुझे लोगों का प्यार मिला। मैं इस उम्र में भी अगर पेंटिंग्स बना रहा हूं तो यह लोगों का प्यार ही है।

(जैसा ***बिप्लव रॉय ने आनंद सिंह*** *को बताया)*

TATA STEEL

Shaurya Inn
The Food People

An ISO 9001 : 2015 | ISO14001 : 2015 | ISO 22001 : 2018, I ISO 45001 : 2018 Certified Company

BOUTIQUE HOTEL
OF THE TOWN

Registered Address : 306 - 307, Akash Deep Plaza,
Golmuri, Jamshedpur, Jharkhand 831003

मानगो नगर निगम का कार्यालय, जमशेदपुर

आम सूचना

स्वच्छता हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। एक स्वच्छ वातावरण न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है बल्कि यह हमारे समाज के विकास और समृद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण है। मानगो नगर निगम क्षेत्र को साफ-सुंदर बनाने की जिम्मेदारी नगर निगम के सभी निवासियों की है। नगर निगम क्षेत्र को साफ, सुंदर एवं स्वच्छ बनाने हेतु ठोस कदम उठाना आवश्यक है।

मानगो नगर निगम आप सभी निवासियों से अपील करता है कि:-

- शहर को साफ एवं स्वच्छ रखें।
- प्लास्टिक का उपयोग नहीं करें।
- कचड़ा को सूखा एवं गीला कचड़ा में पृथ्ककरण करना सुनिश्चित करें।
- शहर की नियमित कचड़ा उठाव में नगर निगम की सहायता करें।
- ससमय सभी प्रकार के करों का भुगतान कर गौरवान्वित महसूस करें।

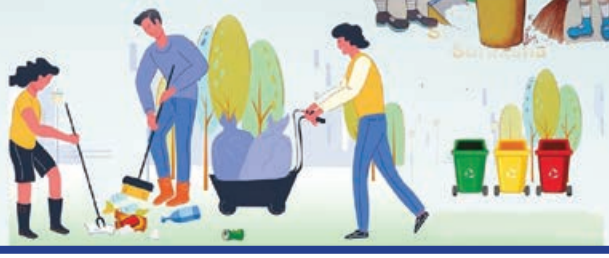

एक कदम स्वच्छता की ओर...

।।आपकी सेवा में सदैव तत्पर मानगो नगर निगम।।

निवेदक
मानगो नगर निगम, जमशेदपुर

स्वर्णरेखा महोत्सव की ढेर
सारी शुभकामनाएं!
M/s Sujeet Kumar Singh
Mobile : 9431183619
LEVI'S

THE LANDSCAPED PODIUM
PERSONALISED SKY HOMES | DALMA VIEWS
ATC MAJESTIC
LUXURY REDEFINED
STARTING AT*
₹56 LACS
BOOK NOW & GET 10% RETURN
PER ANNUM CREDITED MONTHLY IN
YOUR ACCOUNT
TELCO/BARIDIH
CONTACT : 7004324181
WWW.AASTHADEVELOPERS.IN
aastha
GATEWAY TO A BRIGHTER TOMORROW

गौर से पढ़िए
युगांतर प्रकृति

हमारे 20 सवालों के जवाब दीजिए
और, पाइए आकर्षक पुरस्कार

पढ़ो और पुरस्कार पाओ (5)

प्रथम पुरस्कार-501 रुपये नकद

द्वितीय पुरस्कार-351 रुपये नकद

तृतीय पुरस्कार-251 रुपये नकद

नियम और शर्तें

1. आपको युगांतर प्रकृति का यह अंक बेहद गौर से पढ़ना है।
2. इसी अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखों से हम 20 सवाल करेंगे। उन 20 सवालों के जो सही-सही जवाब देंगे, उन्हें नकद पुरस्कार दिया जाएगा।
3. अगर 20 में से 20 सवालों के सही जवाब कई लोग देते हैं तो पुरस्कार उन्हें मिलेगा, जिनका जवाब सबसे पहले आएगा। यानी, जो पहले जवाब देंगे, वो पुरस्कार के हकदार होंगे।
4. जवाब सिर्फ ई-मेल के माध्यम से ही स्वीकार किये जाएंगे। ई-मेल आईडी है yugantarprakriti@gmail.com
5. कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ अपना नाम, घर का पूरा पता, मोबाइल नंबर, एक रंगीन फोटो, बैंक खाता अथवा यूपीआई आईडी अथवा क्यूआर कोड अवश्य भेजें।
6. विजेताओं को धनराशि सीधे उनके खाते में भेजी जाएगी और अगले अंक में उनकी तस्वीर के साथ उनके नाम की घोषणा की जाएगी।
7. इस प्रतियोगिता में कोई भी हिस्सा ले सकता है। उम्र, लिंग का कोई बंधन नहीं है।
8. इस प्रतियोगिता में युगांतर प्रकृति परिवार के सदस्य हिस्सा नहीं ले सकते।
9. निर्णायक का फैसला अंतिम और बाध्यकारी होगा। उसे किसी भी सूरत में, कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकती है।

1. डी-सिल्टिंग रोकने का आदेश किसने दिया?
2. बिप्लव रॉय की पेंटिंग में किस चीज की प्रचुरता है?
3. अंतरराष्ट्रीय जेबरा दिवस कब मनाया जाता है?
4. जेबरा कब खतरनाक हो जाता है?
5. पक्षी दिवस कब मनाया जाता है और क्यों?
6. रहमन पानी राखए, न पानी सब सून .....ये किसने लिखा है?
7. देश भर में बांस प्रधान क्षेत्र अब कितना हो गया है?
8. झारखंड के मुख्य वन संरक्षक कौन हैं?
9. 'इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट कितने वर्षों में जारी होता है?
10. 'इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट किसने जारी किया?
11. प्रियंका झा किस विद्यालय की प्रिंसिपल हैं?
12. स्वर्णरेखा पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म की अवधि कितने मिनट की है?
13. स्वर्णरेखा पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म के निर्माता कौन हैं और यह फिल्म कितने दिनों में बनी?
14. युगांतर भारती की वार्षिक आम सभा कब और कहां संपन्न हुई?
15. स्वर्णरेखा और दामोदर के उद्गमस्थलों को बड़ी पहचान मिले, यह किसने कहा?
16. जमसेदपुर में मात्र 5 रुपये में भरपेट भोजन कौन सा ट्रस्ट कराता है?
17. स्वर्णरेखा प्रदूषण मुक्ति अभियान किसने शुरू किया था?
18. स्वर्णरेका और खरकई नदी का पानी पीने योग्य है या नहीं?
19. रांची आउटर में स्वर्णरेखा नदी की स्थिति अब कैसी है?
20. वर्तमान में कितने नाले गिर रहे हैं स्वर्णरेखा नदी में?

युगांतर प्रकृति

प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित मासिक पत्रिका

प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक उत्थान, क्षमता संवर्धन शोध एवं विकास तथा राष्ट्रीय गौरव के लिए समर्पित संस्था

विज्ञापन दर		
1	बैक पेज	1,00,000/-
2	इनसाइड कवर पेज	90,000/-
3	फुल पेज	75,000/-
4	हाफ पेज	50,000/-

सदस्यता शुल्क		
1	वार्षिक	250/-
2	पंचवर्षीय	1,200/-
3	दस वर्षीय	2400/-
4	आजीवन	5,000/-

भुगतान संबंधित निर्देश

भुगतान कृपया चेक/डीडी/आरटीजीएस द्वारा Nature Foundation के नाम से करें

Account Details

NATURE FOUNDATION

Account No. : 3611740792
Kotak Mahindra Bank
IFSC Code : KKBK0005631

विज्ञापन संबंधित निर्देश

कृपया अपना विज्ञापन पीडीएफ अथवा जेपीजी फॉर्मेट में yugantarprakriti@gmail.com ईमेल या डाक द्वारा युगांतर प्रकृति, सेंट्रल स्कूल के समीप, सिद्रोल, नामकुम, रांची-834010 के पते पर भेजें।

विशेष सहयोग

'युगांतर प्रकृति' का प्रकाशन नेचर फाउंडेशन के द्वारा किया जाता है, जो प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित एक गैर लाभकारी ट्रस्ट है। पत्रिका के सुगम प्रकाशन हेतु Nature Foundation के नाम चेक अथवा डीडी के माध्यम से यथासंभव आर्थिक सहयोग आमंत्रित है।

।। ग्राहक देवो भवः ।।

Premsons Motor Group

Premsons Motor

NEW CAR SHOWROOMS

ARENA KANKE ROAD, RANCHI	- Ph. 9308111111
ARENA BARIATU ROAD, RANCHI	- Ph. 9308212121
NEXA MAIN ROAD, RANCHI	- Ph. 9608800400
NEXA BARIATU ROAD, RANCHI	- Ph. 9065516632
NEXA HAZARIBAGH CENTRAL	- Ph. 9832383838
NEXA DEOGHAR CENTRAL	- Ph. 9262991212
ARENA DALTONGANJ	- Ph. 9304807309
ARENA GUMLA	- Ph. 9304807323
NEXA DALTONGANJ	- Ph. 9031013958

RURAL OUTLETS

KHUNTI	- Ph. 9334335446
SIMDEGA	- Ph. 9304807323
GARHWA	- Ph. 9386895721
ORMANJHI	- Ph. 9386256841
LATEHAR	- Ph. 9304807323
NAGAR UNTARI	- Ph. 9386895721

14 WORKSHOPS ACROSS JHARKHAND

CENTRALIZED SERVICE NUMBER 9098400400

RANCHI: KANKE ROAD, NAMKUM, TUPUDANA, KOKAR, BOOTY MORE, NEXA BARIATU

DALTONGANJ, GUMLA, NEXA HAZARIBAGH, NEXA DEOGHAR, GHARWA, KHUNTI, NAGAR UNTARI, SIMDEGA

TRUE VALUE (Pre-Owned Cars)

(We buy & sell cars of all brands & makes

KANKE ROAD, RANCHI	- Ph. 6209299910
BIRSA CHOWK, RANCHI	- Ph. 7677177704
KOKAR CHOWK, RANCHI	- Ph. 6203750004
PUNDAG, RANCHI	- Ph. 9262899010
DALTONGANJ	- Ph. 9031058123
HAZARIBAGH	- Ph. 6203563788

PREMFORD

Built on Trust, Defined by Quality

(Our Real Estate Joint Venture)

Premsons Earthmovers (Authorised JCB Dealership)

(A unit of Premsons Motor Udyog Pvt. Ltd.)

RANCHI	- Ph. 6287242422
JAMSHEDPUR	- Ph. 6287242425
KODERMA	- Ph. 6287242454
DALTONGANJ	- Ph. 6287242464
HAZARIBAGH	- Ph. 6287242461

JCB

Premsons Energy

(A unit of Premsons Motor Udyog Pvt. Ltd.)

RANCHI	- Ph. 9964511110
JAMSHEDPUR	- Ph. 9031013926

ATHER

(Authorised Ather Dealership)

A PREMSONS MOTOR GROUP **SOCIAL PROJECT**

DAWAI DOST

BRANDED GENERIC MEDICINES

DAWAI DOST

(GENERIC MEDICINE SHOPS)

UPTO **85% DISCOUNT**

Ph. 7677807777 www.dawaidost.co.in